द जंगल बुक



रुडयार्ड किपलिंग

द जंगल बुक

रुडयार्ड किपलिंग

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

मोगली के भाई

माँग चमगादड़ द्वारा मुक्त की गई रात को
रन चील लेकर आती है,
चौपायों को गौशाला और झोंपड़ियों में
बंद कर दिया गया है,
क्योंकि सुबह तक हम स्वच्छंद हैं,
यह गर्व और शक्ति का,
नखों, पंजों और नुकीले दाँतों का समय है,
जरा इस आह्वान को सुनिए—
शानदार मजेदार शिकार,
जो जंगल का कानून है,
की कामना के साथ,
लीजिए, जंगल का रात्रि-गान अब शुरू होता है—

उस समय सिवनी की पहाड़ियों में एक अति उष्ण संध्या के सात बजे थे, जब दिन भर के आराम के बाद पापा भेड़िया उठा, अपने अंगों को शिथिल किया, जम्हाई ली और अपने पंजों के पोरों में छाई सुस्ती को भगाने के लिए एक के बाद एक पंजे से अपने नुकीले नखों को बाहर निकाला। उछलते-कूदते, कूँ-कूँ करते अपने चार बच्चों को अपने जबड़े के घेरे में लिये ममा भेड़िया लेटी थी और उस गुफा के द्वार पर चंद्रमा का प्रकाश छिटक रहा था, जहाँ वे सब रहते थे। पापा भेड़िया ने अपनी खरखराती आवाज में कहा, ''अब शिकार करने का वक्त हो गया है।'' वह पहाड़ी के नीचे उतरने के लिए छलाँग लगाने ही वाला था कि घनी पूँछवाली एक छोटी सी काया दहलीज के पास प्रकट हुई और चापलूसी के अंदाज में बोली, ''ओ भेड़ियों के सरताज, आज किस्मत आपके साथ है। खुशकिस्मती और मजबूत सफेद दाँत इस जंगल के सपूतों को याद दिलाते कहते हैं कि इस दुनिया में कोई भूखा नहीं सोएगा।''

वह तबाकी सियार था—जूठन चाटनेवाला—और भारत के भेड़िए तबाकी को हिकारत से देखते हैं, क्योंकि वह गाँव के बाहर कूड़े के ढेर से चिथड़े और चमड़े चबाता, इसकी-उसकी बातें करता आवारा घूमता रहता है। परंतु वे उससे डरते भी हैं, क्योंकि वह जंगल में किसी और प्राणी से ज्यादा जल्दी पागलपन का शिकार हो जाता है और ऐसा होने पर वह भूल जाता है कि वह कभी किसी से डरता भी था और जो सामने आए उसे काटता हुआ जंगल में दौड़ता रहता है। छोटे से तबाकी के पागल हो जाने पर शेर तक भागकर छिप जाते हैं, क्योंकि पागलपन एक जंगली जीव को अपनी गिरफ्त में लेनेवाली सबसे वाहियात घटना है। हम उसे रेबीज कहते हैं, परंतु वे उसे दीवानगी कहते हैं और उससे पीड़ित प्राणी से दूर भागते हैं।

''आओ, पर देख लेना!'' पापा भेड़िया ने रूखे और कड़े अंदाज में कहा, ''खाने के लिए यहाँ कुछ नहीं है।''

''एक भेड़िए के लिए नहीं होगा'', तबाकी ने कहा, ''परंतु मुझ जैसे तुच्छ प्राणी के लिए तो एक सूखी हड्डी भी भरपूर भोजन है। हम जैसे गीदड़ों की चुनिंदा मांस खाने की किसमत कहाँ?'' वह तेजी से गुफा के पीछे की ओर गया, जहाँ उसे हिरन की हड्डी का एक टुकड़ा मिल गया, जिस पर अब भी कुछ मांस लगा था और वह बैठकर मजे से उसके सिरे को चबाने लगा।

''इतने बढ़िया भोजन के लिए धन्यवाद!'' अपने होंठों पर जीभ फेरता हुआ वह बोला, ''ओह, ये कुलीन बच्चे

कितने सुंदर हैं! इनकी आँखें कितनी बड़ी हैं! और कितने नन्हे! वाकई, वाकई, मुझे याद रखना चाहिए कि राजाओं के बच्चे शुरुआत से ही होनहार होते हैं।''

अब किसी और की तरह तबाकी भी यह अच्छी तरह जानता था कि माँ-बाप के सामने उनके बच्चों की तारीफ करने से बढ़कर अशुभ और कुछ नहीं है। उन भेड़िए माँ-बाप को असहज देखकर उसे मन-ही-मन बड़ी खुशी हुई।

अपने दुर्भावनापूर्ण कृत्य पर खुश होते हुए तबाकी कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा और फिर नफरत भरे स्वर में बोला, ''महान् शेरखान ने अपनी शिकार-भूमि बदल दी है। अगले पखवाड़े तक वह इन्हीं पहाड़ियों में शिकार करेंगे, ऐसा स्वयं उन्होंने मुझे बताया है।''

शेरखान वह बाघ है, जो बीस मील दूर बह रही बाणगंगा के पास रहता है।

''उसे कोई हक नहीं है।'' पापा भेड़िए ने गुस्से में बोलना शुरू किया—''जंगल के कानून के अनुसार बिना उचित सूचना दिए उसे अपना शिकार-क्षेत्र बदलने का कोई अधिकार नहीं है। वह दस मील के भीतर रहनेवाले प्रत्येक शिकार को डरा देगा और मुझे—मुझे इन दिनों दो प्राणियों के लिए शिकार करना है।''

''शेरखान की माँ उसे यूँ ही लँगड़ा नहीं कहती थी,'' ममा भेड़िया ने शांत भाव से कहा, ''वह जन्म से ही एक पैर से लँगड़ा है। इसीलिए उसने केवल मवेशियों को ही मारा है। बाणगंगा के ग्रामीण उससे बहुत खफा हैं और अब हमारे ग्रामवासियों को गुस्सा दिलाने के लिए वह यहाँ आया है। जब वह कहीं दूर होगा तो गाँववाले उसके लिए पूरा जंगल छान डालेंगे और जब वहाँ आग लगा दी जाएगी तो हमें और हमारे बच्चों को भागना पड़ेगा। वाकई, हम शेरखान के बहुत आभारी हैं!''

''क्या आपकी कृतज्ञता की बात मैं उन तक पहुँचा दूँ?'' तबाकी ने पूछा।

''आउट!'' पापा भेड़िए ने गुस्से से कहा, ''यहाँ से खिसक ले और अपने आका के साथ शिकार कर। एक रात के लिए तूने काफी मक्कारी कर ली है।''

''मैं जाता हूँ'', तबाकी ने शांत भाव से कहा, ''नीचे घनी झाड़ियों में आप शेरखान की आवाज सुन सकते हैं। आपका संदेश तो मैं खुद भी नहीं पहुँचाता।''

पापा भेड़िए ने उस ओर कान लगाया और नीचे एक छोटी सी नदी की ओर जानेवाली घाटी में उस बाघ की कुछ सूखी, लंबी दहाड़ सुनी जिसे कोई शिकार न मिला हो और जिसे इस बात की परवाह भी न हो कि सारा जंगल उसकी मौजूदगी के बारे में जान जाएगा।

''मूर्ख!'' पापा भेड़िए ने कहा। ''इस तरह का शोर मचाकर रात का काम शुरू करना!क्या वह समझता है कि हमारे हिरन उसके बाणगंगा के मोटे बैलों जैसे होंगे?''

''शऽऽऽऽ! आज रात वह न तो बैल और न हिरन का शिकार करेगा,'' ममा भेड़िया ने कहा, ''उसका शिकार एक आदमी होगा।''

बाघ की दहाड़ एक तरह की लयबद्ध घुरघुराहट में बदल गई थी, जो उस इलाके के हर कोने से आती प्रतीत होती थी। वह ऐसी आवाज थी जो खुले में सोनेवाले लकड़हारों और खानाबदोशों को चकित कर देती थी और कभी-कभी तो उन्हें घबराकर भागते हुए सीधे बाघ के मुँह तक ले आती थी।

''आदमी!'' अपने सभी सफेद दाँत दिखाते हुए पापा भेड़िया ने कहा, ''ओफ!क्या जंगल में भँवरों और पोखरों में मेंढकों की कमी है, वह इन सबको खाएगा और वह भी हमारे इलाके में!''

जंगल का कानून, जो अकारण किसी चीज का आदेश नहीं देता, किसी भी जानवर को इनसान का मांस खाने से रोकता है, सिवाय उस समय के जब वह अपने बच्चों को शिकार करना सिखा रहा हो और वह भी उसके अपने

झुंड या कबीले के शिकार-क्षेत्र के बाहर। इसका असली कारण यह है कि इनसान को मारने का मतलब है देर-सवेर कनस्तरों, रॉकटों और मशालों से लैस सैकड़ों गेहूँआवर्णी लोगों के साथ हाथियों पर सवार, बंदूक हाथों में लिये श्वेत पुरुषों का आगमन। तब जंगल का हर प्राणी दु:ख झेलता है। जानवर अपने बीच इसका कारण यह देते हैं कि जंगल के सभी प्राणियों में मनुष्य सबसे कमजोर और आरक्षित है और उसे हाथ लगाना खेल- भावना के विपरीत है। वे यह भी कहते हैं—और यह सच है—कि नरभक्षी जानवर खजेले हो जाते हैं और अपने दाँत गवाँ बैठते हैं।

घुरघुराने की आवाज तेज हो गई और बाघ के आक्रमण के समय उसके गले से निकलनेवाले नाद के साथ समाप्त हो गई।

और फिर शेरखान के गले से हुआँ ने—जो कतई शेरोचित नहीं थी—की आवाज निकली। ''वह चूक गया है'', ममा भेड़िया ने कहा, ''यह क्या हो रहा है?''

कुछ सुनने की गरज से पापा भेड़िया कुछ दूर तक दौड़ा और उसे झाड़ियों में कुंठा से आगे-पीछे घूमते हुए शेरखान की वहशियाना बुदबुदाहट सुनाई दी।

''मूर्ख को इससे ज्यादा अकल नहीं थी कि वह लकड़हारों के अलाव की अनदेखी करते हुए उन पर कूदा और अपने पैर जला बैठा,'' घुरघुराते हुए पापा भेड़िया बोला, ''तबाकी उसके साथ है।''

झाड़ियों में कुछ सरसराहट हुई और छलाँग लगाने के लिए तैयार पापा भेड़िया अपने कूल्हे जमीन पर टिकाकर बैठ गया। फिर, यदि आप अवलोकन कर रहे होते तो दुनिया का सबसे बड़ा अजूबा देखते—भेड़िए ने अपनी छलाँग बीच में ही रोक दी। यह देखने से पहले ही कि वह किस चीज पर झपट रहा था, उसने छलाँग लगाई थी और फिर उसने रुकने की कोशिश की। नतीजा यह हुआ कि वह हवा में चार या पाँच फीट उछला और लगभग वहीं गिरा जहाँ से उसने छलाँग लगाई थी।

''आदमी!'' वह गुर्राया, ''देखो आदमी का बच्चा।''

उसके ठीक सामने, एक नीची टहनी पकड़े, गेहुँए रंग का एक नन्हा सा बच्चा, जो बस चल सकता था, नंगा खड़ा था—एक अति मृदु नन्ही सी जान, जो शायद ही कभी किसी भेड़िए की माँद में रात के समय आई हो। उसने पापा भेड़िए के चेहरे की ओर देखा और हँसा।

''क्या वह आदमी का बच्चा है?'' ममा भेड़िया ने कहा, ''मैंने अब तक नहीं देखा। उसे यहाँ ले आओ।''

अपने स्वयं के बच्चों को इधर-उधर ले जाने में अभ्यस्त एक भेड़िया जरूरत पड़ने पर एक अंडे को बिना तोड़े अपने दाँतों के बीच रखकर ले जा सकता था और यद्यपि पापा भेड़िए का जबड़ा बच्चे की गरदन पर कस गया था, जब उसने उस बच्चे को अपने बच्चों के साथ लिटाया, बच्चे की त्वचा पर उसके किसी दाँत की एक खरोंच तक नहीं थी।

''कितना नन्हा!कितना नंगा और कितना बहादुर!'' ममा भेड़िया ने मृदुता से कहा। ममा भेड़िया के उष्ण स्तनों तक पहुँचने के लिए बच्चा भेड़िए के बच्चों के बीच से अपनी राह बना रहा था। ''अहा!दूसरों के साथ वह भी अपना भोजन ले रहा है। तो यह आदमी का बच्चा है?क्या कभी कोई ऐसी ममा भेड़िया भी रही है जो अपने बच्चों के बीच किसी मानव शिशु के होने की डींग हाँक सके?''

''मैंने इस तरह की बातें कई बार सुनी हैं, परंतु हमारे समूह या अपने जीवन में कभी देखी नहीं,'' पापा भेड़िए ने कहा, ''उसके शरीर पर एक भी बाल नहीं हैं और अपने पैर के एक स्पर्श से मैं उसे मार सकता हूँ। परंतु देखो, वह हमें देख रहा है और डर नहीं रहा।''

माँद के मुँह से चंद्रमा का प्रकाश गायब हो गया था, क्योंकि शेरखान का विशाल चौरस मुँह और कंधे उसके द्वार में धँसा दिए गए थे। उसके पीछे तबाकी किकिया रहा था, ''मेरे मालिक, मेरे मालिक, वह यहीं से भीतर गया है।''

''शेरखान का आना हमारे लिए बड़े गौरव की बात है,'' पापा भेड़िए ने कहा, परंतु उसकी आँखों से क्रोध झलक रहा था। ''शेरखान को किस चीज की तलाश है?''

''मेरा शिकार। आदमी का एक बच्चा इसी तरफ गया है,'' शेरखान ने कहा, ''उसके माँ-बाप भाग गए हैं। उसे मेरे हवाले कर दो।''

जैसा कि पापा भेड़िए ने कहा था, शेरखान लकड़हारों के अलाव के पास कूद गया था और अपने जले हुए पैर की पीड़ा से तिलमिला रहा था। पापा भेड़िया जानता था कि माँद का मुँह इतना छोटा था कि एक बाघ उसमें से अंदर नहीं आ सकता था। अब भी शेरखान जहाँ था, वहाँ जगह तंग होने के कारण उसके कंधे और अगले पंजे फँसे हुए थे जैसे कि एक आदमी के होते यदि वह एक बेलनाकार जगह में लड़ रहा होता।

''भेड़िए आजाद प्राणी होते हैं,'' पापा भेड़िए ने कहा, ''वे अपने दल के मुखिया से आदेश लेते हैं न कि किसी धारियोंवाले मवेशी मारनेवाले से। वह आदमी का बच्चा हमारा है—यदि हम चाहें तो हमीं उसे मारेंगे।''

''तू तय करेगा या नहीं करेगा!चुनाव की यह बात कहाँ से आ गई?क्योंकि मैंने एक बैल को मारा है, मैं अपने हक के लिए तुम्हारे कुत्ते के घर के बाहर खड़ा रहूँगा?यह शेरखान बोल रहा है!''

बाघ की दहाड़ से माँद थर्रा उठा। ममा भेड़िया ने स्वयं को बच्चों से अलग किया और आगे की ओर छलाँग लगाई—अँधेरे में शेरखान की जलती आँखों के सामने उसकी आँखें दो हरे चंद्रमाओं जैसी चमक रही थी।

''और यह मैं हूँ, रक्षा, जो जवाब दे रही है। यह आदमी का बच्चा मेरा है लँगड़े, सिर्फ मेरा! उसे मारा नहीं जाएगा। हमारे दल के साथ दौड़ने, शिकार करने के लिए वह जिंदा रहेगा और नन्हे से बच्चे के शिकारी, मेंढक भक्षी, मछली मारनेवाले तू देख लेना कि अंत में वह तेरा शिकार करेगा! अब यहाँ से दफा हो जा नहीं तो मैं, जिसने एक साँभर को मारा है (मैं भूखे-प्यासे मवेशियों को नहीं खाती)...जंगल के जले हुए जानवर, जन्म से लँगड़े तू यहाँ से भाग और अपनी माँ की गोद में छिप जा।''

पापा भेड़िया अचंभे से यह सब देखता रहा। वह उन दिनों को लगभग भूल चुका था जब वह दल के साथ दौड़ती थी और प्रशंसा के तौर पर उसका नाम 'रक्षा' रखा गया था। उसने रक्षा को पाँच अन्य भेड़ियों के साथ लड़ाई में जीता था। शेरखान शायद पापा भेड़िया का मुकाबला कर लेता, परंतु ममा भेड़िया के सामने वह टिक नहीं सकता था, क्योंकि वह जानता था कि जहाँ वह खड़ा था, हमला करने के लिए ममा भेड़िया बेहतर स्थिति में थी और वह मरने-मारने पर उतारू हो जाएगी। इसलिए गुर्राते हुए वह माँद के द्वार से पीछे हट गया और जब वह खुले में आ गया तो चिल्लाया—''अपने घर में तो हर कुत्ता भौंकता है! हम देखेंगे कि मानव बच्चों को पालने के बारे में भेड़ियों की पंचायत क्या कहती है। वह बच्चा मेरा है और अंत में वह मेरे ही दाँतों के बीच आएगा, सुनते हो कबरीली पूँछोंवाले चोर!''

ममा भेड़िया ने हाँफते हुए स्वयं को बच्चों के बीच गिरा लिया और पापा भेड़िया ने गंभीर स्वर में उससे कहा—''शेरखान इतना तो सच बोल रहा है। उस बच्चे को दल को दिखाया जाना चाहिए। क्या तू अब भी उसे रखेगी?''

''रखूँगी?'' हाँफते-हाँफते उसने कहा, ''वह रात को नंगा, अकेला आया और बहुत भूखा था; फिर भी वह डरा नहीं। देखो, उसने मेरे एक बच्चे को एक तरफ धकेल दिया है। उस लँगड़े कसाई ने उसे मार दिया होता और

बाणगंगा भाग गया होता, जबकि यहाँ गाँववाले बदला लेने के लिए जंगल के हर हिस्से में मारकाट मचा देते। मैं उसे रखूँगी? निश्चित रूप से मैं उसे रखूँगी। शांत लेटे रहो नन्हे मेंढक। ओ मोगली—क्योंकि मैं तुझे मोगली मेंढक ही कहकर पुकारूँगी— वह वक्त आएगा जब तू शेरखान का शिकार करेगा, जैसे उसने तेरा किया है।''

''परंतु हमारा समाज क्या कहेगा?'' पापा भेड़िया ने कहा।

जंगल का कानून साफ-साफ यह कहता है कि कोई भी भेड़िया शादी करने के बाद, चाहे तो अपने दल को छोड़कर जा सकता है। परंतु जैसे ही उसके बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो जाएँ, उसे उन्हें दल-परिषद्, जो आमतौर पर प्रत्येक माह पूर्णिमा की रात आयोजित होती है, के सामने पेश करना होगा, ताकि अन्य भेड़िए उनकी पहचान कर सकें। इस निरीक्षण के बाद बच्चे जहाँ चाहें दौड़ सकते हैं और जब तक उन्होंने अपना पहला हिरन नहीं मार लिया हो, किसी अन्य भेड़िए द्वारा उनमें से किसी को मार दिए जाने पर उसे माफ नहीं किया जाएगा। यदि खूनी पकड़ा जाता है तो उसकी सजा मौत होगी; और यदि आप एक मिनट के लिए सोचें तो आप देखेंगे कि इस अपराध की यही सजा है।

पापा भेड़िया ने उस वक्त तक इंतजार किया जब तक उसके बच्चे कुछ दौड़ने लायक हो गए और फिर दल की बैठक की एक रात को उन्हें मोगली और ममा भेड़िया को लेकर कौंसिल रॉक—पत्थरों और शिलाओं से ढँकी हुई एक पहाड़ी की चोटी जहाँ सौ भेड़िए छिप सकते थे—पर ले गया! विशाल स्लेटी रंग का भेड़िया 'अकेला,' जो दल को अपनी ताकत और चतुराई से चलाता था, अपनी शिला पर पसरा हुआ था और उसके नीचे बिज्जू के रंगवाले अनुभवी भेड़िए, जो अकेले ही एक हिरन को मार सकते थे, से लेकर तीन वर्षीय काले भेड़िए, जो खुद को भी इसी काबिल समझते थे, तक सभी रंगों और आकारों के चालीस या इससे अधिक भेड़िए थे। एक साल से वह अकेला उनका नेतृत्व कर रहा था। अपनी जवानी में अकेला दो बार भेड़ियों के जाल में फँस चुका था और एक बार तो इतना पिटा था कि उसे मरा समझकर छोड़ दिया गया था; इसलिए वह इनसानों के तौर-तरीके जानता था। चट्टान पर बहुत कम चर्चा होती थी। घेरे के बीच में, जहाँ उनके माँ-बाप बैठे थे, बच्चे उछल-कूदकर रहे थे और कई बार कोई वरिष्ठ भेड़िया चुपचाप किसी बच्चे के पास जाता, उसे ध्यान से देखता और दबे कदमों से वापस लौट जाता था। यह देखने के लिए कि उसे नजरअंदाज नहीं किया गया है, कभी-कभी कोई माँ अपने बच्चे को निकालकर चंद्रमा के प्रकाश में ले आती। अपनी चट्टान से अकेला चिल्लाता, ''तुम सब कानून जानते हो—तुम सब कानून जानते हो। ओ भेड़ियो, इस बात का ध्यान रखना।'' और चिंतित माताएँ इस आह्वान पर विशेष ध्यान देतीं, ''ध्यान रहे, ओ भेड़ियो, ठीक से ध्यान रहे!''

अंत में—जब उसकी बारी आई ममा भेड़िया की गरदन के बाल खड़े हो गए—पपा भेड़िया 'मेंढक मोगली', जैसा कि वे उसे पुकारते थे, को बीच में धकेल दिया, जहाँ वह कुछ कंकड़ों, जो चाँद की रोशनी में चमक रहे थे, के साथ खेलता हुआ हँस रहा था।

अकेला अपने पंजों पर से अपना सिर कभी नहीं उठाता था; बस लगातार अपनी हिदायत को दोहराए जाता था, ''ध्यान रहे!'' चट्टानों के पीछे से एक दबी हुई सी गर्जना सुनाई दी—यह शेरखान की आवाज थी, जो चिल्ला रहा था, ''वह बच्चा मेरा है। उसे मुझे दे दो। स्वतंत्र प्राणियों को एक आदमी के बच्चे से क्या मतलब?'' अकेला ने अपने कान तक खड़े नहीं किए। वह यही कहता रहा, ''ध्यान रहे, ओ भेड़ियो! स्वतंत्र लोगों को स्वतंत्र लोगों के आदेश के सिवाय किसी और के आदेश से क्या मतलब?ध्यान रहे!''

उपस्थित भेड़ियों के बीच मंत्रणा के बाद कुछ समवेत शोर उठा और एक चार वर्षीय युवा भेड़िए ने शेरखान के सवाल को मुखिया अकेला की ओर दागा, ''स्वतंत्र लोगों को आदमी के बच्चे से क्या मतलब?'' अब, जंगल के

कानून में यह प्रावधान है कि यदि स्वीकृति के लिए दल के पास लाए गए बच्चे के अधिकार के बारे में कोई विवाद हो तो उसकी ओर से दो सदस्यों को बोलना होगा, जो बच्चे के माँ या बाप न हों।

''इस बच्चे की तरफ से कौन बोलेगा?'' अकेला ने पूछा, ''स्वतंत्र लोगों में से कौन बोलता है?'' कोई जवाब नहीं आया और ममा भेड़िया उस लड़ाई के लिए तैयार हो गई। वह जानती थी कि यदि बात लड़ाई तक पहुँची तो यह उसकी आखिरी लड़ाई होगी।

तब एकमात्र प्राणी जिसे दल परिषद् में आने की अनुमति है—ऊँघता सा बूढ़ा भालू, जो भेड़ियों के बच्चों को जंगल का कानून सिखाता है— बूढ़ा भालू, जो जहाँ चाहे आ-जा सकता है, क्योंकि वह केवल मटर, मूँगफली के दाने, कुछ खाद्य जड़ें और शहद खाता है, अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और घुरघुराया।

''वह आदमी का बच्चा—आदमी का बच्चा?'' उसने कहा, ''उस आदमी के बच्चे के लिए मैं बोलता हूँ। आदमी के बच्चे से कोई हानि नहीं है। शब्दों के मामले में मैं कंगाल हूँ, परंतु सच कहता हूँ, उसे दल के साथ दौड़ने दो और दूसरे बच्चों के साथ उसे भी दल में शामिल करो। मैं खुद उसे सिखाऊँगा।''

''हमें एक और बंदा चाहिए,'' अकेला ने कहा, ''भालू बोल चुके हैं और छोटे बच्चों के लिए वह हमारे शिक्षक हैं। भालू के अलावा और कौन बोलना चाहता है? ''

एक काली छाया घेरे के भीतर प्रकट हुई। वह काला चीता बघीरा था, जिसका पूरा बदन स्याह था, परंतु कुछ खास रोशनियों में उस पर चीते के निशान उभर आते थे, जैसे रेशम के पैटर्न। बघीरा को सभी जानते थे और कोई उसके रास्ते में आना नहीं चाहता था, क्योंकि वह उतना ही चालाक था जितना तबाकी। एक जंगली भैंसे की तरह दिलेर और एक घायल हाथी की तरह बेपरवाह। परंतु उसकी आवाज इतनी मृदु थी जैसे पेड़ से टपकता शहद और त्वचा इतनी स्निग्ध जैसे मखमल।

''ओ अकेला और यहाँ उपस्थित स्वतंत्र लोगों,'' वह घुरघुराया, ''आपके सम्मेलन में बोलने का मुझे कोई हक नहीं है, परंतु जंगल का कानून कहता है कि एक नए बच्चे को मारने या न मारने के बारे में अगर संदेह हो तो वह बच्चा एक कीमत अदा करके खरीदा जा सकता है। कानून यह नहीं कहता कि ऐसी कीमत कौन अदा कर सकता है और कौन नहीं। क्या मैं सही हूँ?''

''बहुत अच्छे, बहुत अच्छे!'' युवा भेड़ियों ने कहा, जो हमेशा भूखे होते हैं। ''बघीरा की बात सुनो। इस बच्चे को खरीदा जा सकता है। यही कानून है।''

''यह जानते हुए मुझे यहाँ बोलने का कोई हक नहीं है, मैं अब इजाजत चाहता हूँ।''

''आप बोलिए,'' करीब बीस आवाजें उठीं।

''एक असहाय बच्चे को मारना शर्म की बात है। इसके अतिरिक्त, बड़ा होकर वह आपके लिए बेहतर शिकारी बन सकता है। भालू ने उसकी ओर से बात की है। अब, भालू की बात से आगे जाकर मैं कहता हूँ कि अगर आप कानून के मुताबिक आदमी के इस बच्चे को स्वीकार करें तो क्या उसके बदले यहाँ से आधा मील दूर अभी-अभी मारा गया एक मोटा साँड़ काफी होगा? क्या यह संभव है?''

एक साथ कई भेड़िए बोल पड़े। जिनका आशय था, ''क्या फर्क पड़ता है?जाड़े की बरसात में वह मर जाएगा। सूरज की गरमी से वह झुलस जाएगा। वह नंगा मेंढक हमें क्या हानि पहुँचा सकता है?उसे दल के साथ दौड़ने दो। वह बैल कहाँ है, बघीरा? उस बच्चे को स्वीकार किया जाए।'' और फिर अकेला की गहरी भौंक गूँजी, ''ध्यान से —ध्यान से। ओ भेड़ियो।''

मोगली अब भी कंकड़ों में मगन था और जब भेड़िए एक के बाद एक उसे देखने के लिए आए, उसने ध्यान

नहीं दिया। अंत में सभी भेड़िए उस मरे हुए साँड़ की तलाश में पहाड़ी से नीचे उतर गए और वहाँ केवल अकेला, बघीरा, भालू और मोगली के अपने भेड़िए रह गए। शेरखान अब भी दहाड़ रहा था, क्योंकि वह बहुत गुस्से में था कि मोगली उसके हवाले नहीं किया गया था।

''अरे, ठीक से दहाड़ ले,'' अपनी मूँछों के नीचे मुसकुराते हुए बघीरा ने कहा, ''क्योंकि एक समय आएगा जब यह नंगा बच्चा तुझे दूसरी तरह से दहाड़ने के लिए मजबूर कर देगा, या फिर मैं इनसानों के बारे में कुछ नहीं जानता।''

''यह मामला ठीक से निपट गया,'' अकेला ने कहा, ''आदमी और उनके बच्चे बहुत बुद्धिमान होते हैं। समय आने पर वह हमारे काम आ सकता है।''

''सचमुच, जरूरत के वक्त बड़ा मददगार, क्योंकि सदा के लिए कोई दल की अगुवाई नहीं कर सकता,'' बघीरा ने कहा।

अकेला कुछ न बोला। वह उस समय के बारे में सोच रहा था, जिसका सामना प्रत्येक दल के नेता को करना पड़ता है। जब उसकी ताकत जवाब दे जाती है और वह कमजोर-से-कमजोर होता चला जाता है जब तक कि अन्य भेड़ियों द्वारा उसे मार नहीं दिया जाता और फिर एक नया मुखिया उभरकर आता है। वक्त आने पर उसे भी मार दिया जाएगा।

''उसे ले जाओ,'' उसने पापा भेड़िए को कहा, ''और उसे स्वतंत्र लोगों के उपयुक्त प्रशिक्षण दो।''

इस तरह मोगली ने एक साँड़ की कीमत और भालू की सिफारिश पर सीवनी भेड़िया-दल में प्रवेश लिया।

अब आपको मोगली ने भेड़ियों के बीच जैसा अनोखा जीवन बिताया उसका केवल अनुमान लगाते हुए पूरे दस या ग्यारह साल आगे की कहानी पर ही संतोष करना होगा, क्योंकि अगर उसे लिखा जाए तो कई किताबें उसके विवरण से भर जाएँगी। वह भेड़ियों के बच्चों के साथ ही बड़ा हुआ, यद्यपि निश्चित रूप से जब वह लगभग बच्चा ही था, वे बच्चे जवान हो चुके थे। पापा भेड़िए ने उसे अपने जीवन का व्यापार और जंगल के तौर-तरीके सिखाए जब तक कि वह घास में होनेवाली हर सरसराहट, रात की उष्ण वायु के हर झोंके, ऊपर बैठे उल्लू की आवाज के हर उतार-चढ़ाव, एक चमगादड़ के कुछ देर पेड़ पर ठहरने के दौरान बने उसके पंजों के हर निशान और पानी में अठखेलियाँ करती हर छोटी सी मछली का हर छपाका उसके लिए उतना ही अर्थपूर्ण हो गया जितना कि एक व्यवसायी के लिए उसके दफ्तर का काम होता है। जब वह सीख नहीं रहा होता था तब धूप में बैठता और सोता, खाता और फिर सो जाता। जब वह खुद को गंदा महसूस करता, जंगल के जलाशयों में तैरता और जब उसे शहद की चाहत होती, भालू ने उसे बताया था कि शहद और फलों की गिरी खाने में उतने ही स्वादिष्ट लगते हैं, जितना कि कच्चा मांस, वह पेड़ पर चढ़ जाता और यह उसे बघीरा ने सिखाया था। एक डाल पर आधा लेटा हुआ बघीरा उसे बुलाता, ''छोटे भाई, यहाँ आ जाओ,'' जहाँ शुरुआत में मोगली पेड़ से स्लॉथ की तरह चिपक जाता था, बाद में वह पेड़ की एक टहनी से दूसरी पर उतनी ही फुरती से छलाँग लगाने लगा, जितनी फुरती से भूरा बंदर लगाता है। दल की बैठक होने पर वह कौंसिल रॉक पर अपना स्थान ग्रहण करता और वहाँ उसने पाया कि जब भी वह किसी भेड़िए को घूरकर देखता उसे अपनी नजरें झुका लेनी पड़तीं और इसलिए कभी-कभी वह मजा लेने के लिए भी उन्हें घूरकर देखता था। कभी-कभी वह अपने दोस्तों के गद्दीदार तलवों से काँटे निकाल देता, क्योंकि भेड़िए अपनी चमड़ी में काँटे घुस जाने से बहुत पीड़ा झेलते थे। वह रात को पहाड़ी से नीचे उतरकर खेतों की ओर चला जाता और झोंपड़ियों पर रहनेवाले ग्रामीणों को बहुत ही उत्सुकता से देखता, परंतु मनुष्यों पर उसे विश्वास नहीं था, क्योंकि बघीरा ने उसे एक चौरस बक्सा दिखाया था, जिसमें गिरने का इंतजाम किया गया था और उसे इतनी

चालाकी से जंगल में छिपाया गया था कि वह उसमें लगभग फँस ही गया था; उसने मोगली को बताया कि वह एक पिंजरा था। किसी और बात से ज्यादा उसे बघीरा के साथ जंगल के अँधेरे उष्ण हृदय-स्थल में जाना अच्छा लगता था। पूरे अलसाए दिन में सोना और रात में देखना कि किस तरह बघीरा अपने शिकार को दबोचता है। बघीरा को जब भूख लगती, वह दाएँ-बाएँ कहीं भी शिकार करता था और वैसा ही मोगली करता था, परंतु एक अपवाद के साथ। जैसे ही वह इतना बड़ा हुआ कि कुछ चीजों को समझ सके, बघीरा ने उसे बताया था कि उसे कभी भी किसी मवेशी को हाथ नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि एक बैल के जीवन के बदले उसे भेड़ियों के दल में शामिल किया गया था। ''पूरा जंगल तुम्हारा है,'' बघीरा ने कहा, ''तुम हर उस प्राणी को मार सकते हो जिसे मारने का तुममें दम है, परंतु उस बैल की खातिर, जो तुम्हारे दल में शामिल होने का कारण बना। तुम्हें कभी भी किसी जवान या बूढ़े मवेशी को मारना या खाना नहीं चाहिए। यही जंगल का कानून है।'' मोगली ने ईमानदारी के साथ इस नियम का पालन किया।

वह बड़ा हुआ एक सशक्त लड़के के रूप में, जैसा कि उस लड़के को होना चाहिए था, जो यह नहीं जानता कि वह कुछ सीख रहा है और जिसके पास अपने भोजन की व्यवस्था करने के अतिरिक्त सोचने के लिए कुछ नहीं है।

ममा भेड़िया ने उसे एक या दो बार कहा था कि शेरखान भरोसे लायक प्राणी नहीं है और किसी दिन उसे शेरखान को मारना है, यद्यपि एक जवान भेड़िए इस सलाह को हर घंटे याद रखे होता, मोगली उसे भूल गया, क्योंकि वह अब भी बच्चा ही था—यद्यपि यदि वह कोई इनसानी भाषा बोल सकता तो स्वयं को एक भेड़िया कहता।

जंगल में उसका शेरखान से अकसर सामना होता था, क्योंकि जैसे-जैसे अकेला बूढ़ा और कमजोर हो रहा था, वह लँगड़ा बाघ दल के उन जवान भेड़ियों के साथ दोस्ती गाँठ रहा था, जो उसका छोड़ा हुआ मांस खाने के लिए उसके पीछे-पीछे जाते थे। यह एक ऐसी बात थी जिसकी अकेला कभी इजाजत नहीं देता यदि उसका प्रभुत्व पहले जैसा होता। फिर शेरखान उन्हें मक्खन लगाकर कहता कि उसे आश्चर्य है कि इतने बढ़िया युवा शिकारी एक मरणासन्न भेड़िए और एक आदमी के बच्चे का नेतृत्व क्यों झेल रहे थे। ''मुझे पता चला है,'' शेरखान उनसे कहता, ''कि परिषद् की बैठकों में तुम लोग उससे नजर मिलाने की भी हिम्मत नहीं करते।'' तब युवा भेड़िए गुर्राते और गुस्सा होते।

बघीरा, जिसके आँख और कान हर तरफ लगे होते थे, इसके बारे में कुछ-कुछ जानता था और एक या दो बार उसने मोगली से साफ-साफ कहा था कि किसी दिन शेरखान उसे मार डालेगा। मोगली हँसकर जवाब देता, ''मेरे पास भेड़ियों का दल है, तुम हो और भालू है, यद्यपि वह इतना आलसी है; ये सब मेरी खातिर एक या दो प्रहार तो कर ही सकते हैं। मैं क्यों डरूँगा?''

वह दिन बहुत गरम था जब बघीरा के मन में एक नई धारणा ने जन्म लिया—उसने जो कुछ सुना था, उससे पैदा हुई थी। शायद इक्की नाम की साही ने उसे बताया था, परंतु उस दिन, जब वे गहरे जंगल में थे और लड़का बघीरा की सुंदर श्याम त्वचा पर अपना सिर रखे लेटा था, उसने मोगली से कहा, ''छोटे भाई, मैंने कितनी बार तुमसे कहा होगा कि शेरखान तुम्हारा दुश्मन है?''

''उतनी बार जितने उस पेड़ पर खजूर लगे हैं,'' मोगली ने कहा, जो स्वाभाविक रूप से, गिन नहीं सकता था। ''तो क्या हुआ? मुझे नींद आ रही है, बघीरा! और शेरखान एक लंबी पूँछ और बड़े बोल बोलनेवाले के सिवाय कुछ नहीं है—जैसे माओ मोर।''

''मगर यह सोने का वक्त नहीं है। भालू जानता है, मैं जानता हूँ, पूरा दल जानता है, यहाँ तक कि वह मूर्ख हिरन

भी जानता है। तबाकी ने तुमसे भी कहा है।''

''हो-हो!'' मोगली ने कहा, ''बहुत दिन नहीं हुए जब वह इस तरह की अशिष्ट बात लेकर मेरे पास आया था कि मैं एक नंगा आदमी का बच्चा था और जमीन खोदकर मूँगफली खाने लायक भी नहीं था। उसे शिष्टता सिखाने के लिए मैंने उसे पूँछ से पकड़ा और दो बार उसे खजूर के पेड़ पर दे मारा।''

''वह मूर्खता थी, क्योंकि यद्यपि तबाकी कुटिल है, परंतु उसने तुम्हें कुछ ऐसी बात बताई होती जो तुम्हारे काम की होती। अपनी आँखें खोलो, छोटे भाई! शेरखान तुम्हें जंगल में मारने की हिम्मत नहीं कर सकता। परंतु एक बात याद रखना, अकेला बहुत बूढ़ा हो गया है और वह दिन दूर नहीं जब वह अपना हिरन नहीं मार पाएगा और तब वह मुखिया नहीं रहेगा। परिषद् में तुम्हें पहली बार लाए जाने पर जिन भेड़ियों ने तुम्हें देखा था, उनमें से कई बूढ़े हो चुके हैं और युवा भेड़िए शेरखान के सिखाए में आकर यही समझते हैं कि आदमी के एक बच्चे का दल में कोई स्थान नहीं है। कुछ ही समय में तुम भी जवान हो जाओगे।''

''और आदमी भी कैसा, जिसे अपने भाइयों के साथ नहीं दौड़ना चाहिए?'' मोगली ने कहा, ''मैं जंगल में पैदा हुआ था। मैंने जंगल के कानूनों का पालन किया है और हमारे भेड़ियों में से कोई ऐसा नहीं है जिसके पंजों से मैंने काँटा न निकाला हो। निश्चित रूप से वे मेरे भाई हैं!''

बघीरा ने अँगड़ाई ली और अपनी आँखें आधी बंदकर लीं। ''छोटे भाई,'' उसने कहा, ''मेरे जबड़े के निचले भाग को टटोलो।''

मोगली ने अपना सशक्त गेहुँआ हाथ बघीरा की मखमली ठुड्डी के नीचे रखा, जहाँ बड़ी-बड़ी मांसपेशियाँ उसके चमकीले बालों के नीचे छिपी हुई थीं और वहाँ उसने एक छोटा सा गंजा हिस्सा महसूस किया।

''जंगल में कोई नहीं जानता कि मेरे यानी बघीरा के गले में पट्टे का यह निशान है और फिर भी छोटे भाई, मैं इनसानों के बीच पैदा हुआ था और इनसानों के बीच ही मेरी माँ की मृत्यु हुई थी—उदयपुर के राजमहल के एक पिंजरे में। यही कारण था कि कौंसिल में मैंने तुम्हारी कीमत अदा की थी जब तुम एक नन्हे से नंगे बच्चे थे। हाँ, मैं भी इनसानों के बीच पैदा हुआ था। मैंने कभी जंगल नहीं देखा था। सीखचों के बाहर से वे मुझे लोहे के बरतन में खाना देते थे, जब तक कि एक रात मैंने यह महसूस नहीं किया कि मैं एक चीता बघीरा था, न कि किसी आदमी के खेलने की चीज और मैंने अपने पंजे के एक ही वार से उस घटिया ताले को तोड़ दिया और वहाँ से चला आया। क्योंकि मैंने आदमियों के तौर-तरीके सीख लिए थे, जंगल में शेरखान से भी ज्यादा मेरा आतंक हो गया। क्या यह सही नहीं है?''

''हाँ,'' मोगली ने कहा, ''पूरा जंगल बघीरा से डरता है—मोगली के सिवाय सभी।''

''ओह, तुम तो आदमी के एक बच्चे हो,'' काले चीते ने बहुत ही मृदुता से कहा, ''जिस तरह से मैं अपने जंगल में वापस आ गया, तुम्हें भी अंत में आदमियों के पास चले जाना चाहिए—उन्हीं आदमियों के पास, जो तुम्हारे भाई हैं—यदि तुम्हें कौंसिल में मार नहीं दिया गया।''

''परंतु क्यों—कोई क्यों मुझे मारना चाहेगा?'' मोगली ने कहा।

''मेरी तरफ देखो,'' बघीरा ने कहा। और मोगली ने उसकी आँखों में आँखें डालकर एकटक देखा। आधे मिनट में उस विशाल चीते ने अपना सिर घुमा लिया।

''इसलिए'', अपना पंजा पत्तियों पर से हटाते हुए उसने कहा, ''मैं भी तुमसे आँख मिलाकर बात नहीं कर सकता, जबकि मैं तो आदमियों के बीच पैदा हुआ था और छोटे भाई, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, तब भी। वे सब तुमसे नफरत करते हैं, क्योंकि वे तुमसे नजरें नहीं मिला सकते, क्योंकि तुम बुद्धिमान हो—क्योंकि तुमने उनके पैरों से

काँटे निकाले हैं, क्योंकि तुम एक आदमी हो।''

''मैं ये सब नहीं जानता था।'' मोगली ने मायूसी से कहा और अपनी घनी काली आँखें चढ़ाकर नाखुशी जाहिर की।

''जंगल का कानून क्या है? पहले वार करो और फिर सोचो। तुम्हारी बेपरवाही से ही वे जानते हैं कि तुम एक आदमी हो। परंतु अकल से काम लो। यह बात मेरे मन में है कि जब अकेला अपना अगला शिकार नहीं कर पाएगा और हर शिकार में उसे भारी प्रयास करना पड़ेगा, तब दल उसके और तुम्हारे खिलाफ हो जाएगा। चट्टान पर वे एक जंगल कौंसिल आयोजित करेंगे, और तब...यह मेरा अनुमान है!''

अपनी जगह से उछलते हुए बघीरा ने कहा, ''जल्दी से घाटी में आदमियों की झोंपड़ियों में चले जाओ और अपने साथ कुछ लाल फूल ले जाओ जिनको वे उपजाते हैं, ताकि समय आने पर तुम्हें मुझसे, भालू से या दल के किसी भी सदस्य से ज्यादा गहरा दोस्त मिल जाए। लाल फूल का इंतजाम करो।''

लाल फूल से बघीरा का मतलब था आग। जंगल का कोई भी प्राणी आग को इसके वास्तविक नाम से नहीं पुकारता है। हर जानवर उसके बेपनाह खौफ में जीता है और उसका जिक्र करने के सौ तरीके ढूँढ़ लेता है।

''लाल फूल?'' मोगली ने कहा, ''जो शाम के समय उनकी झोंपड़ियों के बाहर उगता है। मैं कुछ फूल ले आता हूँ।''

''अब बोला न आदमी का बच्चा,'' बघीरा ने गर्व से कहा, ''याद रखना वह छोटे-छोटे गमलों में उगता है। जल्दी से एक ले आओ और जरूरत के लिए अपने पास रखो।''

''ठीक है,'' मोगली ने कहा, ''मैं जाता हूँ, परंतु क्या तुम्हें भरोसा है, ओ मेरे बघीरा''—उसने बघीरा की शानदार गरदन से अपना हाथ हटाया और उसकी बड़ी- बड़ी आँखों में गहराई से झाँका—''क्या तुम्हें भरोसा है कि यह सब शेरखान का किया हुआ है?''

''उस टूटे ताले की कसम, जिसने मुझे आजाद किया था, मुझे पूरा भरोसा है छोटे भाई।''

''तब तो उस बैल की कसम जिसके बदले मैं दल में शामिल हुआ, मैं ईंट का जवाब पत्थर से दूँगा और वह जल्दी ही होगा,'' मोगली ने कहा और वह वहाँ से चल पड़ा।

''यह हुई न एक आदमी जैसी बात,'' फिर से लेटते हुए बघीरा ने अपने आप से कहा, ''ओ शेरखान, दस साल पहले तुम जिस मेंढक के पीछे दौड़े थे, तुम्हारे लिए उससे अधिक मनहूस शिकार कोई हो ही नहीं सकता!''

मोगली जंगल में दूर तक दौड़ता रहा। उसके दिल में आग लगी हुई थी। शाम का कुहासा घिरने तक वह अपनी माँद में पहुँचा, एक लंबी साँस ली और नीचे घाटी की ओर देखा। बच्चे घर में नहीं थे, परंतु ममा भेड़िया माँद के पीछे थी। उसकी साँसों से ही वह जान गई थी कि उसके मेंढक को कोई बात परेशान कर रहीहै।

''क्या बात है, बेटा?'' उसने पूछा।

''शेरखान के बारे में कुछ ऊटपटाँग बातें हैं,'' उसने जवाब दिया, ''आज रात मैं खेतों में शिकार करूँगा,'' और झाड़ियों से गुजरकर नीचे जाने के लिए उसने छलाँग लगाई और घाटी की तली में बह रही नदी पर पहुँच गया। वहाँ वह रुक गया, क्योंकि उसने शिकार करते भेड़ियों के एक झुंड की चिल्लाहट और घिरे हुए साँभर की चीत्कार सुनी। फिर युवा भेड़ियों की कठोर, खून की प्यासी गुर्राहट सुनाई दी, ''अकेला! अकेला! उस अकेले भेड़िए को अपनी ताकत दिखाने दो। दल के मुखिया के लिए रास्ता छोड़ो। टूट पड़ो, अकेला!''

अकेला जरूर झपटा होगा, परंतु शिकार हाथ न आया होगा, क्योंकि मोगली को दाँत टूटने की आवाज के साथ एक चीख सुनाई दी; साँभर ने अपने अगले पैरों से उसे गिरा दिया था।

कुछ देखने-सुनने के लिए वह रुका नहीं बल्कि दौड़ता रहा और जैसे-जैसे वह खेतों से लगे गाँव जहाँ ग्रामीण रहते थे, के पास पहुँचा, पीछे से आनेवाली चीख-पुकार धीमी होती गई।

''बघीरा सच कहता था,'' हाँफते और एक झोंपड़ी की खिड़की के पास भूसे के ढेर में बैठते हुए उसने सोचा, ''आनेवाला कल अकेला और मेरे लिए भारी होगा।''

फिर उसने अपने चेहरे को खिड़की से सटाया और चूल्हे में जलती हुई आग को देखा। उसने घर के मुखिया की पत्नी को रात में चूल्हे में उपले डालते देखा। जब सुबह हुई और कोहरा छँटा तो उसने देखा कि मुखिया के लड़के ने एक अँगीठी में जलते हुए कोयले डाले और अपने साथ लेकर गौशाला में गायों की देखभाल करने चला गया।

''बस इतना ही करना है?'' मोगली ने कहा, ''अगर एक लड़का यह कर सकता है तो डरने की कोई बात नहीं है।'' इसलिए वह तेजी से अगले मोड़ पर गया, लड़के से मिला, उसके हाथों से अँगीठी ली और कोहरे में गायब हो गया, जबकि वह लड़का डरकर चिल्लाया।

''वे लोग मुझसे कितना मिलते-जुलते हैं,'' उस औरत की तरह अँगीठी में फूँक मारते हुए मोगली ने कहा, ''अगर मैंने इसे खुराक नहीं दी तो यह मर जाएगी।'' उसने कुछ टहनियाँ और पेड़ की सूखी छाल उस लाल चीज पर डाल दी। आधी पहाड़ी चढ़ने के बाद वह बघीरा से मिला। उसके बालों पर सुबह की ओस की बूँदें चमक रही थीं।

''अकेला अपने शिकार से चूक गया है,'' चीते ने कहा, ''वे उसे रात में ही मार देते, परंतु उन्हें तुम्हारी भी जरूरत थी। वे तुम्हें पहाड़ी पर खोज रहे थे।''

''मैं खेतों में था। मैं तैयार हूँ। देखो?'' मोगली ने अँगीठी ऊपर उठाकर दिखाई।

''बहुत अच्छे!अब, मैंने इस चीज में आदमियों को सूखी टहनियाँ डालते देखा है और उससे लाल फूल खिल उठता है। क्या तुम्हें डर नहीं लगता?''

''नहीं। मुझे डर क्यों लगेगा? अब मुझे याद आता है— अगर वह एक सपना नहीं था—कि जब मैं एक भेड़िया नहीं था, मैं लाल फूल के जंगल में लेटा रहता था और वह गरमाहट देता था और सुखद था।''

यह देखने के लिए कि वह कैसी लगती है, उस पूरे दिन अँगीठी में सूखी टहनियाँ डालते हुए मोगली माँद में बैठा रहा। आग में डालने के लिए उसे पेड़ की एक संतोषप्रद डाली मिल गई और शाम को जब तबाकी माँद में आया और बड़ी धृष्टता से बोला कि उसे कौंसिल रॉक पर बुलाया गया है, वह तब तक हँसता रहा जब तक कि तबाकी भाग नहीं गया। फिर मोगली कौंसिल में गया; वह अब भी हँस रहा था।

अकेला अपनी शिला से हटकर लेटा हुआ था, जो इस बात का सूचक था कि दल की मुखियागीरी का मुद्दा खुला था और उसकी जूठन खाए हुए भेड़ियों के समर्थन से मगन होकर शेरखान वहाँ आ-जा रहा था। बघीरा मोगली के साथ लेटा हुआ था और अँगीठी मोगली के घुटनों के बीच रखी थी। जब सभी लोग जमा हो गए तो शेरखान ने बोलना शुरू किया—''एक ऐसा काम, अकेला के उत्कर्ष काल में वह जिसे करने की हिम्मत नहीं कर सकता था।''

''उसे कोई हक नहीं है,'' बघीरा ने फुसफुसाते हुए कहा, ''तुम यह बात कहो। वह एक कुत्ते का बच्चा है। वह डर जाएगा।''

मोगली उछलकर खड़ा हो गया। ''स्वतंत्र लोगो,'' वह चिल्लाया, ''क्या शेरखान दल का मुखिया है?हमारी मुखियागीरी से एक बाघ को क्या लेना-देना?''

''यह देखना कि मुखिया का चुनाव सही तरीके से हो और मुझे बोलने के लिए कहा जाए—'' शेरखान ने

बोलना शुरू किया।

''कौन कहेगा?'' मोगली ने कहा, ''क्या हम सब गीदड़ हैं, जो मवेशियों के इस कसाई की चापलूसी करेंगे? दल का मुखिया चुनने का मामला दल का ही है।''

कई तरफ से चिल्लाने की आवाजें आईं, ''तू अपना मुँह बंद रख आदमी के बच्चे। उन्हें बोलने दो। उन्होंने हमारे कानून का पालन किया है,'' और अंत में दल के वरिष्ठ सदस्य गरजे, ''मुरदा भेड़िए को बोलने दो।'' जब किसी दल का मुखिया शिकार करने में असफल रहता है तो उसे जब तक वह जीवित रहे, मुरदा भेड़िया कहा जाता है; यह अवधि लंबी नहीं होती।

अकेला ने अपना बूढ़ा सिर अनमने भाव से उठाया—

''स्वतंत्र लोगो और शेरखान के सियारो तुम भी, बारह मौसमों से शिकार पर जाते और लौटते समय मैंने तुम्हारी अगुवाई की है और इस पूरी अवधि में एक भी भेड़िया न तो पिंजरे में फँसा और न लँगड़ा-लूला हुआ। अब मैं अपना शिकार नहीं कर पाया। तुम सब जानते हो कि यह साजिश कैसे की गई थी। तुम जानते हो कि मेरी कमजोरी उजागर करने के लिए कैसे एक अनजाने हिरन से मेरा सामना कराया गया। यह काम बड़ी चालाकी से किया गया। अब तुम सबको इसी कौंसिल रॉक पर मुझे मार डालने का हक है। इसलिए, मैं पूछता हूँ कि इस अकेले भेड़िए को खत्म करने के लिए कौन आगे आता है, क्योंकि जंगल के कानून के मुताबिक यह मेरा हक है कि इस काम के लिए तुम एक-एक करके आओ।''

एक लंबे समय तक स्तब्धता छाई रही, क्योंकि कोई भी अकेला भेड़िया को मौत के घाट उतारने के लिए लड़ना नहीं चाहता था। फिर शेरखान दहाड़ा, ''वाह!इस दंतहीन मूर्ख से हमें क्या करना है? वह तो वैसे ही मर जाएगा। हमें तो आदमी के इस बच्चे से मतलब है, जो बहुत जी लिया। स्वतंत्र लोगो, शुरू से ही वह मेरा भोजन था। उसे मेरे हवाले कर दो। इस मानव-भेड़िया की बकवास से मैं तंग आ गया हूँ। दस मौसमों से वह जंगल को परेशान कर रहा है। यह आदमी का बच्चा मुझे दे दो, नहीं तो मैं हमेशा यहीं शिकार करूँगा और तुम्हें एक हड्डी भी नहीं दूँगा। वह एक आदमी है, एक आदमी का बच्चा और अपनी हड्डी की मज्जा तक मैं उससे नफरत करता हूँ!''

इस पर दल का आधे से अधिक भाग चिल्लाया, ''एक आदमी! एक आदमी! एक आदमी को हमसे क्या लेना-देना? वह अपनी जगह जाए।''

''और गाँवों के सभी लोगों को हमारे खिलाफ कर दे?'' शेरखान ने विरोध किया, ''नहीं, उसे मेरे हवाले कर दो। वह एक आदमी है। हममें से कोई भी उससे आँख मिलाकर बात नहीं कर सकता है।''

अकेला फिर अपना सिर उठाया और बोला, ''उसने हमारा खाना खाया है। वह हमारे साथ सोया है। शिकार करने में उसने हमारी मदद की है। उसने जंगल का कोई भी कानून नहीं तोड़ा है।''

''जब उसे स्वीकार किया जा रहा था, मैंने एक बैल से उसकी कीमत चुकाई थी। एक बैल ज्यादा मूल्यवान नहीं है, लेकिन बघीरा की आन ऐसी चीज है कि शायद वह उसके लिए लड़ेगा,'' बघीरा ने अपनी मधुर आवाज में कहा।

''दस साल पहले अदा किया गया एक बैल!'' झुंड गुर्राया, ''दस साल पुरानी हड्डियों का हम क्या करेंगे?''

''और दिए गए वचन का?'' बघीरा ने कहा, उसके होंठ के नीचे सफेद दाँत दिखाई दिए। ''अच्छा, क्या तुम लोग 'स्वतंत्र लोग' कहलाते हो?''

''आदमी का कोई बच्चा जंगल के लोगों के साथ नहीं दौड़ सकता,'' शेरखान गुर्राया, ''उसे मेरे हवाले करो।''

''हमारे खून का न होकर भी वह हमारा भाई है,'' अकेला ने बोलना जारी रखा, ''और तुम उसे यहीं मार दोगे!

सच यह है कि मैं बहुत जी चुका हूँ। तुममें से कई मवेशी खानेवाले हैं और दूसरों के बारे में मैंने सुना है कि शेरखान के सिखाने से तुम लोग अँधेरी रातों में गाँववालों की दहलीज से बच्चे उठा लाते हो। इसलिए मैं जानता हूँ कि तुम लोग कायर हो और मैं कायरों से ही बात कर रहा हूँ। यह तय है कि मुझे मरना है और मेरे जीवन की कोई कीमत नहीं है, नहीं तो आदमी के इस बच्चे के बदले मैं अपनी जान देने का प्रस्ताव करता। परंतु हमारे समाज की आन की खातिर—यह एक छोटी सी बात है, जिसे मुखिया के बगैर रहते हुए तुम लोग भूल गए हो—मैं वादा करता हूँ कि अगर तुम लोग इस आदमी के बच्चे को उसके अपने समाज में जाने दो तो, जब मेरे मरने का समय आएगा, मैं तुम लोगों के खिलाफ एक दाँत भी नहीं दिखाऊँगा। मैं बिना लड़े मर जाऊँगा। इससे दल के कम-से-कम तीन सदस्यों की जान बच जाएगी। मैं ज्यादा कुछ तो कर नहीं सकता, लेकिन अगर तुम लोग चाहो तो मैं तुम्हें उस शर्म से बचा सकता हूँ जो एक ऐसे भाई को मारने से पैदा होती है, जिसकी कोई गलती न हो—एक भाई जिसे जंगल के कानून के अनुसार सबकी सहमति से और उचित कीमत अदा करके दल में शामिल किया गया था।''

''वह एक आदमी है—एक आदमी-एक आदमी!'' दल के भेड़िए चिल्लाए। और अधिकांश भेड़िए शेरखान के आस-पास इकट्ठे होने लगे, जिनकी पूँछ उत्साह से हिलने लगी थी।

''अब मामला तुम्हारे हाथों में है,'' बघीरा ने मोगली से कहा, ''हम अब लड़ने के सिवाय कुछ नहीं कर सकते।''

मोगली तनकर खड़ा हो गया—जलती हुई अँगीठी उसके हाथों में थी। फिर अँगीठी जमीन पर रखकर उसने बाँहें फैलाईं और कौंसिल की ओर मुखातिब होकर जम्हाई ली। परंतु गुस्से और दु:ख से वह फट पड़ने को था, क्योंकि भेड़ियों की प्रकृति के विपरीत भेड़ियों ने पहले कभी नहीं जताया था कि वे उससे इतनी नफरत करते हैं। ''सुनो, तुम लोग! वह चिल्लाया।'' यह कुत्तों जैसी बकबक करने की जरूरत नहीं है। आज रात तुम लोगों ने इतनी बार मुझे बताया है कि मैं एक आदमी हूँ। (असल में जिंदगी के आखिरी लम्हें तक मैं तुम लोगों के साथ एक भेड़िया ही बना रहता) मैं यह महसूस करने लगा हूँ कि तुम्हारे शब्द सही हैं। इसलिए आज मैं तुम लोगों को भाई कहकर नहीं, बल्कि कुत्ता कहकर संबोधित करूँगा, जैसा कि एक आदमी को करना चाहिए। तुम लोग क्या करोगे और क्या नहीं, यह तुम्हारे कहने की बात नहीं है। वह मामला मेरे हाथ में है और हम उस मामले को साफ-साफ देख सकते हैं, क्योंकि मैं कुछ लाल फूल लेकर आया हूँ जिनसे तुम कुत्ते लोग डरते हो।''

उसने अँगीठी जमीन पर उछाल दी और जलते हुए कुछ कोयलों ने सूखी घास और पत्तों में आग लगा दी और वे भभक उठे। ऊँची-ऊँची लपटों के सामने पूरी परिषद् डर से पीछे हट गई।

मोगली ने कुछ सूखी डालियों को आग में फेंक दिया; जब टहनियों ने आग पकड़ी और चटकने लगीं तो उसने एक जलती हुई लकड़ी को अपने सिर के ऊपर से घुमाकर सहमे हुए भेड़ियों के बीच में फेंक दिया।

''तुम्हीं हमारे मालिक हो,'' कुछ धीमे स्वर में बघीरा ने कहा, ''अकेला को मौत से बचा लो। वह हमेशा से तुम्हारा दोस्त था।''

उस निष्ठुर बूढ़े भेड़िए अकेला, जिसने अपने जीवन में कभी दया की भीख नहीं माँगी थी, ने पेड़ की उस जलती हुई डाली के प्रकाश, जिसमें परछाइयाँ उछलती और काँपती प्रतीत होती थीं, में उस नग्न खड़े लड़के, जिसके लंबे काले बाल उसके कंधों पर उछल रहे थे, की ओर याचना भरी दृष्टि से देखा।

''ठीक है,'' चारों ओर नजरें गड़ाकर देखते हुए मोगली ने कहा, ''मैं देख रहा हूँ कि तुम सब कुत्ते हो। मैं तुम्हें छोड़कर अपने लोगों के पास जा रहा हूँ—अगर वे मेरे अपने हैं तो। मेरे लिए जंगल बंद हो चुका है और तुम लोगों की बातें, तुम्हारा साथ, मुझे भूल जाना चाहिए। मगर मैं तुमसे ज्यादा दया दिखलाऊँगा, क्योंकि मैं तुम्हारा सगा नहीं

होने पर भी तुम्हारा भाई था, मैं वादा करता हूँ कि मैं आदमियों के बीच आदमी बनकर रहूँगा, मैं तुम्हारे साथ धोखा नहीं करूँगा, जैसा तुमने मेरे साथ किया है।'' उसने जलते हुए लट्ठे को एक ठोकर मारी और अंगारे हवा में उछले। ''इस दल के किसी भी सदस्य की दूसरे सदस्य के साथ जंग नहीं होगी, परंतु जाने से पहले मुझे एक कर्ज अदा करना है।'' तेज कदमों से चलकर वह वहाँ पहुँचा जहाँ शेरखान आग की उठती हुई लपटों के सामने मूर्खतापूर्ण तरीके से पलक झपका रहा था और उसका गला कसकर पकड़ लिया। किसी हादसे की आशंका से बघीरा उसके पीछे था। ''उठ, कुत्ते!'' मोगली चिल्लाया, ''एक आदमी कह रहा है, उठ नहीं तो मैं तेरी खाल में आग लगा दूँगा।''

शेरखान के कान सुन्न पड़ गए, उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, क्योंकि जलती हुई डाली बहुत नजदीक आ गई थी।

''इस मवेशी मारनेवाले ने कहा कि वह मुझे कौंसिल में ही मार देगा, क्योंकि उसने मुझे उस वक्त नहीं मारा था, जब मैं एक बच्चा था। तेरी मूँछ का एक बाल भी हिला तो ये लाल फूल तेरी हलक में उतार दूँगा, लँगड़े!'' उसने उस डाली से शेरखान के सिर पर प्रहार किया। बाघ डर और पीड़ा से तिलमिलाया और चीखने-चिल्लाने लगा।

''वाह! झुलसी हुई जंगली बिल्ली—अब खिसक ले यहाँ से। पर याद रखना, अगली बार जब मैं आऊँगा, जैसे एक आदमी को आना चाहिए, मेरा सिर शेरखान की खाल से ढँका होगा। जहाँ तक दूसरों का सवाल है, अकेला जहाँ चाहे, जाने के लिए आजाद है। तुम लोग उसे मारोगे नहीं, क्योंकि मैं यह नहीं चाहता और न मैं यह समझता हूँ कि तुम लोगों को, अपने जीभें लपकाते हुए—जैसे कुत्ते होने के सिवाय तुम्हारी कोई हस्ती है—यहाँ अब और ज्यादा देर बैठना चाहिए। इसलिए, कुत्तों, भागो यहाँ से!'' लकड़ी का वह लट्ठा एक सिरे पर धू-धू करके जल रहा था। मोगली उसे घुमाते हुए तेजी से घेरे का चक्कर लगाया और भेड़िए चीखते-चिल्लाते हुए भागे; आग से कई के रोएँ झुलस गए थे। अंत में केवल अकेला, बघीरा और तकरीबन दस भेड़िए, जिन्होंने मोगली का साथ दिया था, वहाँ रह गए। फिर, कोई बात मोगली के मन को कचोटने लगी— वह अपने जीवन में इतना दु:खी कभी नहीं हुआ था—उसने अपनी साँस रोकी और सुबकने लगा, उसके गालों पर से आँसू बह निकले।

''यह क्या है?यह क्या है?'' उसने कहा, ''मैं जंगल छोड़ना नहीं चाहता और मुझे नहीं पता मुझे क्या हो रहा है। क्या मैं मर रहा हूँ, बघीरा?''

''नहीं छोटे भाई, ये केवल आँसू हैं जिन्हें आदमी इस्तेमाल करते हैं,'' ''अब मैंने जाना कि तुम अब एक बच्चे नहीं रहे, मर्द बन गए हो। आज से यह जंगल सचमुच तुम्हारे लिए बंद हो चुका है। उन्हें गिरने दो, मोगली। वे केवल आँसू हैं।'' मोगली बैठ गया और रोने लगा जैसे उसका दिल चूर-चूर हो जाएगा; इससे पहले अपने जीवन में वह कभी नहीं रोया था।

''अब'', उसने कहा, ''मैं आदमियों के बीच जाऊँगा। लेकिन उससे पहले मुझे अपनी माँ से विदा लेनी होगी।'' वह उस माँद में गया जहाँ वह पापा भेड़िया के साथ रहती थी और उसकी छाती पर सिर रख खूब रोया; उसके चार बच्चे बड़ी दयनीयता से चिल्ला रहे थे।

''तुम मुझे भूल तो नहीं जाओगी?'' मोगली ने कहा।

''जब तक तुम हमारी पहुँच में रहोगे, कभी नहीं,'' बच्चों ने कहा, ''जब तुम पूरे आदमी बन जाओ तो इस पहाड़ी की तली में आना; हम तुमसे बात करेंगे और रात में तुम्हारे साथ खेलने के लिए खेतों में आएँगे।''

''जल्दी आना,'' पापा भेड़िए ने कहा, ''ओ बुद्धिमान नन्हे मेंढक, दोबारा जल्दी आना; हम लोग बूढ़े हो गए हैं, तुम्हारी माँ और मैं।''

''जल्दी आना,'' ममा भेड़िया ने कहा, ''नन्हे, नंगे मेरे बेटे। क्योंकि सुन आदमी के बच्चे, मैंने अपने बच्चों से भी ज्यादा तुम्हें चाहा है।''

''मैं जरूर आऊँगा,'' मोगली ने कहा, ''और मैं जब आऊँगा तो कौंसिल रॉक पर शेरखान की खाल को बिछाने के लिए। मुझे भूल न जाना! जंगल के सभी जीवों को कहना वे कभी मुझे न भूलें।''

भोर होने को थी जब मोगली मानव नाम के रहस्यमय प्राणियों से मिलने के लिए पहाड़ी से अकेला नीचे उतरा।

सिवनी के झुंड का शिकार-गान

भोर की वेला में साँभर रँभाया,
एक बार, दो बार, बार-बार!
जंगल के पोखर से, जहाँ जंगली हिरन प्यास बुझाते हैं,
एक हिरनी उछली, एक हिरनी उछली,
इसे, शिकार की तलाश में अकेले भटकते
मैंने देखा,
एक बार, दो बार, बार-बार!
भोर की वेला में साँभर रँभाया,
एक बार, दो बार, बार-बार!
और इंतजार में खड़े झुंड तक
खबर पहुँचाने के लिए,
एक भेड़िया चुपके से खिसक गया
और उसके पीछे चलकर
हमने खोजा, हमने पाया और हम चहके
एक बार, दो बार, बार-बार!
भोर की वेला में,
भेड़ियों का झुंड चिल्लाया,
एक बार, दो बार, बार-बार!
जंगल में पैर ऐसे
जो कोई निशां न छोड़ें,
आँखें जो देखें अँधेरे में भी,
जीभ-जीभ लपलपाओ हार्क! ओ हार्क,
एक बार, दो बार, बार-बार!

* * * * *

'का' का शिकार

उसकी चित्तियाँ
तेंदुए के लिए आनंदकारी हैं;
उसके सींग भैंसे के लिए गर्व का विषय।

साफ रहो, क्योंकि
उसकी खाल की चमक
एक शिकारी की शक्ति की सूचक है।
जब तुम पाओ
कि एक बैल तुम्हें हवा में उछाल सकता है,
या भारी भवों वाला साँभर
सींग मार सकता है
यह बताने के लिए
तुम्हें अपना काम रोकने की जरूरत नहीं है;
दस मौसम पहले ही
हम यह जानते थे
अजनबियों के बच्चों का
दमन न करो,
अपने भाई या बहन की तरह
उनका स्वागत करो।
क्योंकि,
चाहे वे नन्हे और गोल-मटोल हों,
हो सकता है कि उनकी माँ एक भालू हो
''मेरे जैसा कोई नहीं''
अपना पहला शिकार करने पर,
एक बाल शिकारी कहता है
मगर जंगल विशाल है
और बाल शिकारी अदना सा,
यह सोचें और शांत रहें।

भालू के नीतिवचन

यहाँ जो कुछ भी कहा गया है वह, जब मोगली को सिवनी भेड़िया-दल से निकाला गया था या जब उसने बाघ शेरखान से बदला लिया था, उससे कुछ समय पहले घटित हुआ था। यह उन दिनों की बात है जब भालू उसे जंगल का कानून सिखा रहा था। ऐसा कुशाग्र शिष्य पाकर वह विशाल, गंभीर और भूरा भालू बहुत आनंदित हुआ था, क्योंकि बाल-भेड़िए जंगल के कानून का केवल उतना भाग सीखते जो उनके अपने दल या जाति पर लागू होता था और बस शिकार-गान ''पैर जो आवाज नहीं करते; आँखें जो अँधेरे में देख सकती हैं; कान जो हवा के हलके झोंकों को भी सुन सकते हैं और नुकीले सफेद दाँत; ये सब हमारे भाइयों की निशानी हैं'' कंठस्थ करते ही भाग जाते थे। परंतु एक बाल-मानव होने के कारण मोगली को इससे कहीं ज्यादा सीखने की जरूरत थी। कभी-कभी, यह देखने के लिए कि उसका प्रिय मित्र कैसी प्रगति कर रहा था, काला चीता बघीरा जंगल में घूमता-फिरता वहाँ आ जाता और जब मोगली उस दिन का पाठ याद करके भालू को सुना रहा होता, वह एक पेड़ से अपना सिर

रगड़ते हुए घुरघुराता। लड़का लगभग उतनी ही अच्छी तरह पेड़ पर चढ़ सकता था, जितना वह तैर सकता था और लगभग उतनी ही अच्छी तरह पेड़ पर चढ़ सकता था, जितना वह दौड़ सकता था। इसलिए, कानून के शिक्षक भालू ने उसे लकड़ी और पानी से संबंधित कानून सिखाए—पेड़ की एक जर्जर डाल और एक मजूबत डाल में कैसे भेद करना; अपने सिर के पचास फुट ऊपर मँडराती जंगली मधुमक्खियों का सामना होने पर किस तरह उनसे नम्रता से बात करना; दिन के समय अनजाने में डालियों के बीच सो रहे चमगादड़ की नींद में व्यवधान डालने पर उससे क्या कहना और पानी में रहनेवाले साँपों के बीच पानी में अठखेलियाँ करने से पहले कैसे उन्हें सावधान कर देना। जंगल का कोई भी प्राणी अपने आराम में खलल पसंद नहीं करता और ऐसा करनेवाले पर टूट पड़ने के लिए सभी तैयार रहते हैं। फिर मोगली को 'अजनबी शिकारी के लिए आवश्यक सूचना' के बारे में सिखाया गया, जिसे उस समय जवाब मिलने तक जोर से दोहराया जाना चाहिए, जब कभी जंगल का कोई प्राणी अपने इलाके से बाहर शिकार करता है। अनुवाद करने पर उसका अर्थ होगा, ''मुझे यहाँ शिकार करने की इजाजत दीजिए, क्योंकि मैं भूखा हूँ।'' और इसका जवाब होगा, ''भोजन के लिए शिकार कर लो लेकिन मौज-मजे के लिए नहीं।''

यह सब आपको बताएगा कि मोगली को कितना ज्ञान हृदयस्थ करना था और एक ही बात को सौ बार दोहराते हुए वह बहुत थक गया। परंतु, जैसा कि भालू ने बघीरा को उस दिन के बारे में बताया, जब मोगली को एक थप्पड़ पड़ा था और वह रुष्ट होकर वहाँ से भाग गया था, ''एक बाल-मानव आखिर एक बाल-मानव है और उसे जंगल के सभी कानूनों का ज्ञान होना चाहिए।''

''पर यह भी तो सोचो कि वह कितना छोटा है,'' काले चीते ने कहा, जो अगर उसकी चलती तो उसे लाड़ में बिगाड़ देता। ''उसका छोटा सा दिमाग कैसे इतनी जानकारियों का बोझ ढोएगा?''

''क्या जंगल में कोई भी जीव इतनी तुच्छ है कि उसे मारा जा सके? नहीं। इसीलिए मैं उसे ये सब बातें सिखाता हूँ और इसीलिए उससे भूल होने पर बहुत नरमाई से उसे थप्पड़ मारता हूँ।''

''नरमाई से! नरमाई के बारे में तू क्या जाने लोहे के पैरोंवाले बूढ़े?'' बघीरा गुर्राया। उसके पूरे चेहरे पर तेरी खरोंच के निशान हैं।

''सिर से लेकर पैर तक मेरे द्वारा दिए गए खरोंचों के निशान उसकी अज्ञानता से उसे बाद में होनेवाले नुकसान से बेहतर हैं,'' भालू ने बड़ी गंभीरता से जवाब दिया। ''अभी मैं उसे जंगल के मास्टर शब्द सिखा रहा हूँ जो पक्षियों, साँपों और भेड़ियों को छोड़कर चार पैरों पर चलनेवाले सभी जानवरों से उसकी रक्षा करेंगे। अगर वह सिर्फ इन शब्दों को याद रखेगा तो जंगल के सभी प्राणियों से अपनी सुरक्षा का दावा कर सकेगा। इन सब लाभों के लिए थोड़ी सी पिटाई क्या बहुत ज्यादा है?''

''ठीक है, बस इतना ध्यान रखना कि तू इस बाल-मानव को मार न डाले। वह तेरे नाखून तेज करने के लिए पेड़ का कोई तना नहीं है। लेकिन वो मास्टर शब्द है क्या? हालाँकि मुझे अपने से ज्यादा दूसरों के लिए उनकी जरूरत होगी''—बघीरा ने अपने एक पंजे को आगे किया और उसके सिरे पर जानवरों की मोटी खाल फाड़ देनेवाले स्लेटी रंग के अपने नाखूनों को प्रशंसा भरी दृष्टि से देखा—''फिर भी मैं जानना चाहूँगा।''

''मैं मोगली को बुलाता हूँ, वही बताएगा, अगर वह चाहे। आओ, नन्हे भाई!''

''मेरा सिर मधुमक्खियों के छत्ते जैसा घूम रहा है,'' उनके सिर के ऊपर से एक रूठी हुई सी धीमी आवाज आई और एक अत्यधिक रुष्ट मोगली पेड़ के तने से फिसलकर नीचे आया और बोला, ''मैं बघीरा के लिए आया हूँ न कि तेरे लिए, ओ मोटे बुड्ढे भालू!''

''वह तो मै हूँ ही,'' भालू ने कहा, हालाँकि उसको वह बात चुभी थी। ''बघीरा को वो मास्टर शब्द बोलकर

सुनाओ जो मैंने तुम्हें आज ही सिखाए हैं।''

''मास्टर शब्द, कौन से जीवों के?'' मोगली ने कहा, अपने ज्ञान का प्रदर्शन करके वह खुश था। ''जंगल में कई तरह की जुबानें बोली जाती हैं। मैं सभी जुबानें जानता हूँ।''

''तुम थोड़ा बहुत जानते हो, ज्यादा नहीं । देखो बघीरा, ये लोग कभी अपने शिक्षक का धन्यवाद नहीं करते। इस बूढ़े भालू द्वारा दी गई शिक्षाओं के लिए धन्यवाद देने के लिए कभी कोई भेड़िए का बच्चा यहाँ नहीं आया। चलो, शिकारियों के लिए कहे जानेवाले शब्द ही बोलकर दिखाओ, महान् विद्वान्।''

''हम दोनों में एक ही खून दौड़ रहा है, तुममें और मुझमें,'' शब्दों को भालुओं के अंदाज में बोलते हुए मोगली ने कहा, ''ये शब्द सभी शिकारी जानवर इस्तेमाल करते हैं।''

''ठीक। अब पक्षियों से संबंधित शब्द सुनाओ।''

वाक्य के अंत में चील की सीटी की आवाज निकालते हुए मोगली ने दोहराया।

''अब साँपों के लिए,'' बघीरा ने कहा।

जवाब में मोगली ने एक बिलकुल अवर्णनीय फुफकार की आवाज निकाली और खुद को ही शाबासी देने के लिए उसने अपने पैर पीछे हवा में उछाले और तालियाँ बजाईं, फिर उछलकर बघीरा के बगल में जा बैठा और उसकी चमकती पीठ पर अपने तलवों से तबला-सा बजाने लगा—और साथ ही भालू की ओर देखकर तरह-तरह की ऊल-जलूल मुद्राएँ बनाता रहा।

''ठीक, बिलकुल ठीक!'' पढ़ाई के लिए थोड़ी मार खाना बुरा नहीं रहा है, भूरे भालू ने मृदुता से कहा, ''किसी दिन तू मुझे याद करेगा।'' फिर यह बताने के लिए वह बघीरा की ओर मुड़ा कि ये मास्टर शब्द जानने के लिए उसने कैसे जंगली हाथी की चिरौरी की थी, जो इस बारे में सबकुछ जानता था और पानी में रहनेवाले साँपों की भाषा समझने के लिए कैसे हाथी मोगली को अपनी पीठ पर बिठाकर नदी में ले गया था, क्योंकि भालू साँपों की भाषा का उच्चारण नहीं कर सकता था और यह कि मोगली अब जंगल में होनेवाले कई हादसों से काफी सुरक्षित हो गया था, क्योंकि न तो साँप, न पक्षी और न जानवर उसे चोट पहुँचा सकते थे।

''अब किसी से डरने की जरूरत नहीं है,'' अपने झबरीले पेट को थपथपाते हुए भालू ने निष्कर्ष निकाला।

''सिवाय उसकी अपनी जाति के लोगों से,'' बहुत ही धीमी आवाज में बघीरा ने कहा और फिर जोर से मोगली से बोला, ''जरा मेरी पसलियों पर रहम करो, छोटे भाई!और इतना उछलना-कूदना किसलिए?''

बघीरा को अपनी बात सुनाने के लिए मोगली उसके कंधे के बालों को खींच रहा था और जोर से पैर चला रहा था। जब वे दोनों उसकी बात सुन रहे होते थे, वह बहुत ऊँचे स्वर में बोलता। ''इस तरह मेरा अपना एक कबीला होगा और मैं पेड़ों की शाखाओं के बीच दिन भर उनकी अगुवाई करूँगा।''

''अब यह नई मूर्खता क्या है, ओ सपने देखनेवाले मेरे नन्हे भाई?'' बघीरा ने कहा।

''हाँ और बूढ़े भालू पर टहनियाँ और कूड़ा फेंकूँगा,'' मोगली ने कहना जारी रखा, ''उन्होंने मुझसे यह वादा किया है, हाँ!''

''व्हूफ!'' भालू के विशाल पंजे के एक ही वार ने मोगली को बघीरा से अलग कर दिया और जब लड़का दोनों पंजों की गिरफ्त में था, वह देख सकता था कि भालू गुस्से में था।

''मोगली,'' तेज आवाज में भालू ने कहा, ''तू बंदर लोगों से बात करता रहा है।''

यह देखने के लिए कि क्या चीता भी उतना ही नाराज था, उसने बघीरा की ओर देखा और उसकी आँखें भी मूँगा पत्थर की तरह सख्त थीं।

''तू उन बंदरों के साथ रहा है—स्लेटी रंग के बंदर—बेकायदा लोग, सबकुछ खानेवाले। यह बड़े शर्म की बात है।''

''जब भालू ने मेरे सिर पर मारा,'' मोगली ने कहा (वह अब भी चित पड़ा हुआ था), ''मैं दूर चला गया और वे स्लेटी बंदर पेड़ों से नीचे उतरे और उन्होंने मुझ पर तरस खाया। किसी और को मेरी परवाह नहीं थी।'' वह थोड़ा सुबकने लगा।

''बंदर और तरस!'' भालू गुर्राया, ''यह ऐसा ही है जैसे एक पहाड़ी नदी शांति से बहे! जैसे गरमियों में सूरज ठंडक प्रदान करे! और ऊपर से एक बाल-मानव उनके सामने हो?''

''और फिर...और फिर उन्होंने खाने के लिए मुझे फलियों के दाने और कई मजेदार चीजें दीं और वे मुझे अपनी बाँहों में उठाकर पेड़ के ऊपर ले गए और मुझसे बोले कि उनसे मेरा खून का रिश्ता है, सिवाय इसके कि मेरे पूँछ नहीं है। और किसी दिन मैं उनकी अगुवाई करूँगा।''

''उनका कोई नेता नहीं है,'' बघीरा ने कहा, ''वे झूठ बोलते हैं। उन्होंने हमेशा झूठ बोला है।''

''वे बहुत दयालु थे और उन्होंने फिर से आने के लिए कहा। मुझे कभी भी बंदरों के बीच क्यों नहीं ले जाया गया है? वे मेरी ही तरह अपने पैरों पर खड़े होते हैं। वे अपने कठोर पंजों से कभी मुझ पर वार नहीं करते। वे दिन भर खेलते हैं। मुझे उठाओ! भूरे भालू, मुझे उठाओ! मैं दोबारा उनके साथ खेलूँगा।''

''सुन, बाल-मानव'', बिजली कड़कने जैसी आवाज में भालू ने कहा, ''मैंने तुम्हें जंगल के सभी प्राणियों से संबंधित जंगल के सभी कानून सिखा दिए हैं—सिवाय बंदरों के, जो पेड़ों पर रहते हैं। उनके पास कोई कानून नहीं है। वे जंगली जीवों की जाति से बाहर हैं। उनकी अपनी कोई भाषा नहीं है। वे उन चुराए हुए शब्दों से अपना काम चलाते हैं, जो वे अन्य जीवों से सुनते हैं। वे ताका-झाँकी करते हैं और पेड़ों की शाखाओं पर बैठकर इंतजार करते हैं। उनकी जीवन-पद्धति हमारी जीवन-पद्धति नहीं है। उनका कोई नेता नहीं है। उनकी कोई स्मृति नहीं है। वे डींग हाँकते हैं, बतियाते हैं और ऐसा जताते हैं मानो वे कोई महान् जीव हैं और जंगल की दुनिया में बड़े-बड़े काम करनेवाले हैं, परंतु एक फल के गिरते ही यह सब हवा हो जाता है और उस फल के सिवाय उनके दिमाग में कुछ और नहीं रहता। हम जंगल के प्राणी उनसे कोई व्यवहार नहीं करते। हम वहाँ पानी नहीं पीते, जहाँ बंदर पीते हैं; हम वहाँ नहीं जाते, जहाँ बंदर जाते हैं; हम वहाँ शिकार नहीं करते, जहाँ वे करते हैं; हम वहाँ मरते भी नहीं हैं, जहाँ वे मरते हैं। क्या तूने कभी मुझे बंदरों के बारे में बोलते सुना है?''

''नहीं'', भालू ने बहुत ही धीमी आवाज में कहा, भालू के चुप हो जाने के बाद जंगल बिलकुल खामोश हो गया था।

''जंगल के जीव अपनी जुबान और अपने मन से उन्हें बाहर ही रखते हैं। उनकी संख्या बहुत ज्यादा है, वे बुरे, गंदे और बेशर्म हैं और उनकी तमन्ना है—अगर कोई स्थायी तमन्ना हो तो—कि जंगल के सभी जीव उनके अस्तित्व को स्वीकार करें। परंतु हम ऐसा नहीं करते; तब भी, जब वे हमारे सिर पर सड़े हुए फल और दूसरी गंदी चीजें फेंकते हैं।''

उसने मुश्किल से अपनी बात खत्म की होगी कि पेड़ों की शाखाओं में से फलों और टहनियों की बारिश-सी होने लगी। वे पेड़ों की ऊँचाई पर पतली शाखाओं के बीच खाँसने, चीखने-चिल्लाने और गुस्से से उछल-कूद कर रहे बंदरों की आवाजें सुन सकते थे।

''जंगल के जीवों के लिए बंदरों से मेलजोल वर्जित है। यह याद रखना,'' भालू ने कहा।

''वर्जित,'' बघीरा ने कहा, ''परंतु फिर भी मैं सोचता हूँ भालू कि उनके बारे में तुम्हें चेतावनी दे देनी चाहिए

थी।''

''मैं-मैं?मैं कैसे अनुमान लगा सकता था कि वह ऐसे गंदे लोगों के साथ खेलेगा? बंदरों के साथ! उफ्!''

एक बार फिर उनके सिर पर सड़े फलों और टहनियों की बौछार आई और वे दोनों मोगली को साथ लेकर तेजी से वहाँ से चले गए। बंदरों के बारे में भालू ने जो कुछ कहा था, वह पूरी तरह से सच था। ऊँचे पेड़ ही उनकी दुनिया थी और ऐसा कोई अवसर नहीं आता था जब बंदर और अन्य वन्य-प्राणी एक-दूसरे के रास्ते में आते हों। परंतु जब कभी उन्हें एक बीमार भेड़िया या एक घायल बाघ या भालू मिल जाता, बंदर उसे यातना देते तथा इस आशा में कि उन पर ध्यान दिया जाएगा, सिर्फ मजा लेने के लिए किसी भी जानवर पर लकड़ियाँ या फल फेंकते। फिर वे चीखते- चिल्लाते हुए बेमतलब के गाने गाते और जंगलवासियों को अपने पेड़ों पर चढ़ने के लिए आमंत्रित करते और फिर उनसे लड़ते या फिर अपनी बिरादरी में ही उनमें बिना किसी बात पर भयंकर लड़ाइयाँ हो जातीं और मरे हुए बंदरों को वहाँ छोड़ जाते, जहाँ दूसरे प्राणी उन्हें देख सकें। वे अकसर यह जताते कि वे अब अपना नेता चुनने और अपने कानून-कायदे बनाने ही वाले हैं, परंतु ऐसा कभी नहीं हो पाता, क्योंकि उनकी स्मृति दूसरे ही दिन उनका साथ छोड़ जाती और इस कमी को वह एक कहावत गढ़कर छिपाते कि ''जो कुछ बंदर समाज आज सोचता है, जंगल वही बात बाद में सोचेगा।'' उनकी यह तिकड़म उन्हें बड़ा दिलासा देती। जंगल का कोई भी जानवर उन तक नहीं पहुँच सकता था और सच तो यह था कि कोई भी जानवर उन पर ध्यान नहीं देता था और इसीलिए जब मोगली उनके साथ खेलने के लिए गया था तब वे इतने खुश थे। उस पर भालू कितना नाराज हुआ था —यह भी उन्होंने सुना था।

वे इससे ज्यादा कुछ नहीं करना चाहते थे—बंदर बिरादरी की बातों का वैसे तो कोई मतलब नहीं होता, परंतु उनमें से एक के दिमाग में यह बात आई और उसे वह बहुत ही चतुराई भरी लगी; उसने दूसरे सभी बंदरों को कहा कि अपनी बिरादरी में मोगली बहुत उपयोगी साबित होगा, क्योंकि उन्हें हवा से बचाने के लिए वह लकड़ियों को बाँधकर एक दीवार सी बना सकता था। इसलिए अगर वह उनके हाथ लग जाए तो वे उसे उन्हें सिखाने के लिए तैयार कर सकते हैं। बेशक, एक लकड़हारे का बेटा होने के कारण मोगली को कुछ नैसर्गिक क्षमताएँ विरासत में मिली थीं और बिना यह जाने कि उसने वह काम कैसे किया, वह पेड़ों से गिरी शाखाओं से छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ बना लेता था। पेड़ों से देखते हुए बंदरों को उसका यह खेल बहुत ही अद्भुत लगता था। उन्होंने कहा कि इस बार वे सचमुच अपना नेता चुन लेंगे और जंगल के सबसे बुद्धिमान प्राणी बन जाएँगे—इतने बुद्धिमान कि हर कोई उन पर ध्यान देगा और ईर्ष्या करेगा। इसलिए उन्होंने चुपचाप जंगल से गुजर रहे भालू, बघीरा और मोगली का पीछा किया, जब तक कि दोपहर के विश्राम का समय नहीं आ गया और मोगली, जो अपने आपसे बहुत शर्मिंदा था, यह निश्चय करते हुए कि बंदर बिरादरी से अब वह किसी तरह का सम्बन्ध नहीं रखेगा, चीते और भालू के बीच में सो गया।

अगली चीज जो उसे याद है वह थी अपने पैरों और बाँहों पर कुछ हाथों—कठोर, मजबूत छोटे-छोटे हाथ का स्पर्श और फिर अपने चेहरे पर टहनियों का एक गुच्छा; लहराती हुई टहनियों के बीच से उसने नीचे देखा कि अपनी तेज चीखों से भालू ने पूरे जंगल को जगा दिया था और अपने सभी दाँत दिखाते हुए बघीरा पेड़ के तने पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। अपनी विजय का प्रदर्शन करते हुए बंदर खों- खों कर रहे थे और वे यह चिल्लाते हुए पेड़ की ऊपरी नाजुक शाखाओं पर चढ़ गए थे, जहाँ बघीरा पहुँचने की हिम्मत नहीं कर सकता था, ''उसने हमें देख लिया है। बघीरा ने हमें देख लिया है! सभी जंगलवासी हमारे हुनर और चतुराई की तारीफ कर रहे हैं।'' फिर बंदरों ने भागना शुरू किया और बंदरों का एक पेड़ से होकर दूसरे और फिर तीसरे पेड़ पर भागना एक

अवर्णनीय चीज है। पहाड़ियों पर ऊपर जाने और नीचे उतरने के लिए उनकी नियमित सड़कें और चौराहे हैं जो सभी जमीन से पचास, सत्तर या सौ फुट ऊपर हैं और जरूरत पड़ने पर वे इन राहों से रात में भी आ-जा सकते हैं। सबसे ताकतवर दो बंदरों ने मोगली को अपनी बगल में दबा रखा था और बीस-बीस फुट की छलाँग लगाते हुए वे पेड़ों के ऊपर से गुजर रहे थे। यदि वे अकेले होते तो इससे दोगुनी रफ्तार से जा सकते थे, परंतु लड़के का वजन उन्हें इसकी इजाजत नहीं दे रहा था। खुद को बीमार महसूस करते हुए मोगली का सिर चकरा रहा था; फिर भी वह इस बेतहाशा दौड़ का मजा लिये बिना नहीं रह सका, यद्यपि बहुत नीचे धरती की झलक उसे डरा देती थी और हवा में ली गई हर छलाँग के अंत में लगनेवाले भयावह झटकों से उसकी साँस रुक सी जाती थी। उसका वाहक बंदर उसे पेड़ के ऊपरी भाग में ले जाता जब तक कि वह उन दोनों के बोझ से किसी नाजुक शाखा का चरमराना या तेजी से झुक जाना महसूस नहीं कर लेता और तब व्हूप की आवाज के साथ वह बाहर और नीचे की ओर छलाँग लगाता हुआ अपने हाथ या पैर के सहारे दूसरे पेड़ के निचले और मजबूत हिस्से पर आ जाता। कभी-कभी वह अब भी हरे-भरे जंगल को मीलों दूर तक देख सकता था, जैसे जहाज के मस्तूल-शिखर पर खड़ा एक आदमी मीलों दूर तक समुद्र को देख सकता है और फिर पेड़ों की टहनियाँ और पत्तियाँ उसके चेहरे से टकरातीं और वह और उसके दोनों पहरेदार लगभग जमीन पर आ जाते। इस तरह उछलती, टकराती, हुँकारती और चीखती वह बंदर सेना अपने कैदी मोगली को लिये अपने वृक्ष-मार्ग पर सरपट दौड़ी चली जा रही थी।

एक समय तक वह डरता रहा कि वह उन बंदरों के हाथों से छूटकर जमीन पर गिर जाएगा। फिर उसे गुस्सा आने लगा, परंतु वह संघर्ष करके अपने आपको छुड़ाने का अंजाम जानता था और फिर उसने सोचना शुरू किया। पहला कदम तो था किसी तरह भालू और बघीरा को संदेश भेजना, क्योंकि जिस रफ्तार से बंदर जा रहे थे, वह जानता था कि वे बहुत पीछे छूट गए होंगे। नीचे देखना व्यर्थ था, क्योंकि वह केवल शाखाओं का ऊपरी भाग देख पाता था। इसलिए उसने ऊपर की ओर नजर टिकाई और देखा कि दूर आकाश में अपने शिकार पर पैनी नजर रखे खुद को संतुलित करती, मंडराती चील रन उड़ रही थी। रन ने देखा कि बंदर अपने साथ कोई चीज लिये जा रहे रहे थे और यह पता लगाने के लिए कि वह चीज खाने लायक थी या नहीं, वह कुछ सौ गज नीचे उतर आई। उसने आश्चर्य से सीटी बजाई जब उसने मोगली को एक पेड़ के शिखर पर ले जाए जाते देखा और उसने चील को यह आह्वान करते सुना—''हम एक ही खून के हैं, तुम और मैं।'' ऊपर की कुछ टहनियों और पत्तों ने लड़के को ढँक लिया, परंतु अपने आपको संतुलित करते हुए चील समय रहते पास के एक पेड़ पर जा बैठी और उसने लड़के का गेहुँआ चेहरा एक बार फिर ऊपर की ओर आते देखा। ''मेरे पीछे आओ!'' मोगली चिल्लाया, ''सिवनी दल के भालू और कौंसिल रॉक के बघीरा को बता दो।''

''उन्हें क्या नाम बताऊँ, भाई?'' रन ने इससे पहले कभी मोगली को नहीं देखा था, यद्यपि उसने जरूर चील के बारे में सुना था।

''मेंढक मोगली, वे मुझे बाल-मानव कहते हैं!मेरे पीछे आऽऽओ!''

वाक्य पूरा होने से पहले ही वह एक बार फिर हवा में होने के कारण उसके आखिरी शब्द लंबे खिंच गए, परंतु रन ने सिर हिलाया और इतनी ऊँची उठ गई कि मोगली उसे एक बिंदु से बड़ा नहीं दिखाई दे रहा था और वहाँ से अपनी दूरबीनी आँखों से हवा में झूलते हुए वृक्ष-शिखरों को देखते हुए वह लगभग स्थिर हो गई। मोगली के अपहर्ता तेजी से आगे बढ़ गए।

''वे कभी बहुत दूर नहीं जाते,'' एक दबी हुई सी हँसी के साथ उसने कहा, ''वे कभी वह काम पूरा नहीं करते, जिसे करने के लिए वे निकले थे। ये बंदर हर समय पुराना काम अधूरा छोड़कर नया पकड़ लेते हैं। अगर मेरी नजर

पहले जैसी ही तेज है तो इस बार उन्होंने अपने लिए मुसीबत मोल ले ली है, क्योंकि भालू कोई मेमना नहीं है और जितना मैं जानती हूँ, बघीरा एक बकरे से बड़े जानवर को भी मार सकता है।''

और अपने पैरों को पेट से सटाकर वह अपने पंखों के बल हवा में झूलते हुए इंतजार करने लगी।

इस बीच भालू और बघीरा गुस्से और दु:ख से लाल हो रहे थे। बघीरा इतनी तेजी से पेड़ पर चढ़ा जितना वह पहले कभी नहीं चढ़ा था, परंतु उसके वजन से पतली शाखाएँ टूट गईं और पंजों में पेड़ की काफी छाल पकड़े वह नीचे आ गिरा।

''तूने बाल-मानव को पहले से सावधान क्यों नहीं किया था?'' बेचारे भालू पर वह बरसा, जो बंदरों को पकड़ने के लिए अपनी अटपटी चाल से दौड़ रहा था। ''अपने थप्पड़ों से उसकी आधी जान लेने का क्या मतलब था जब तूने उसे सावधान ही नहीं किया?''

''जल्दी करो! जल्दी करो! हम अब भी उन्हें पकड़ सकते हैं!'' भालू हाँफ रहा था।

''इस रफ्तार से! इससे तो एक घायल गाय भी नहीं थकेगी। कानून के शिक्षक—बच्चों को मारनेवाले—इस तरह लुढ़कते हुए एक मील चलने से तेरी हालत खराब हो जाएगी। शांति से बैठो और सोचो। एक योजना बनाओ। यह पीछा करने का समय नहीं है। अगर हम उनके बहुत नजदीक गए तो वे उसे गिरा सकते हैं।''

''अरूल्ला! व्हू! उसको उठाए भागने से थककर उन्होंने उसे पहले ही गिरा दिया होगा। इन बंदरों का क्या भरोसा? मेरे सिर पर मरे हुए चमगादड़ रख दो! खाने के लिए मुझे काली हड्डियाँ दो! मुझे मधुमक्खियों के छत्तों में डाल दो, ताकि उनके काटने से मैं मर जाऊँ और मुझे लकड़बग्घे के साथ दफना देना, क्योंकि मैं भालुओं में सबसे निकम्मा हूँ। अरूल्ला! बहूआ! ओ मोगली, मोगली! तेरा सिर फोड़ने के बजाय मैंने तुझे इन बंदरों से सावधान क्यों नहीं किया? हाय! अब शायद मैं उसके दिमाग से आज का पाठ निकाल फेंकता और मास्टर शब्दों के बिना वह जंगल में अकेला होता।''

भालू ने अपने पंजों को अपने कानों से लगा लिया और विलाप करता हुआ आगे-पीछे घूमने लगा।

''कुछ देर पहले ही उसने कम-से-कम मुझे तो सही शब्द ही बताए थे,'' बघीरा ने अधीरता से कहा, ''भालू, न तो तेरी याददाश्त ठीक है और न तेरी कोई इज्जत है। जंगल क्या सोचेगा यदि मैं काला चीता इक्की साही की तरह सिकुड़कर बैठ जाऊँ और हाय-तौबा करता रहूँ?''

''मुझे इसकी परवाह नहीं है कि जंगल क्या सोचेगा। अब तक तो वह मर गया होगा।''

''जब तक वे मन बहलाव के लिए उसे शाखाओं से नीचे न गिरा दें या बैठे-ठाले उसे मार न डालें, मुझे बाल-मानव को लेकर कोई डर नहीं है। वह बुद्धिमान है और सुप्रशिक्षित और सबसे बढ़कर उसके पास जंगल के जीवों को डरानेवाली आँखें हैं, परंतु (और यह एक बहुत बुरी बात है) वह बंदरों के कब्जे में है और वे, क्योंकि वे पेड़ों पर रहते हैं, हममें से किसी से नहीं डरते।'' गहरे चिंतन की मुद्रा में बघीरा ने अपने अगले पंजे को चाटा।

''मैं भी कितना मूर्ख हूँ! ओ मोटे, भूरे, जड़ खोदकर खानेवाले मूर्ख भालू,'' एक झटके से अपने बदन को खोलते हुए भालू ने कहा, ''जंगली हाथी जो कुछ कहता है वह बिलकुल सच है, ''हर एक प्राणी के अपने डर होते हैं।'' और बंदर पहाड़ी साँप 'का' से डरते हैं। वह उतनी ही आसानी से पेड़ पर चढ़ सकता है जितनी बंदर चढ़ते हैं। रात के समय वह बंदर के बच्चों को चुरा ले जाता है। उसका नाम लेते ही उनकी कुटिल पूँछ ठंडी पड़ जाती है। चलो, हम 'का' के पास चलें।''

''वह हमारे लिए क्या करेगा? बिना पैरोंवाला होने के कारण वह हमारे टाइप का नहीं है—और उसकी दुष्ट आँखें!'' बघीरा ने कहा।

‘‘वह बहुत बूढ़ा और चालाक है। सबसे बढ़कर वह हमेशा भूखा ही रहता है,’’ भालू ने उम्मीद जताते हुए कहा, ‘‘उसे कई बकरों का वादा करो।’’

‘‘एक बार भरपेट खाने के बाद वह पूरे एक महीने तक सोता है। हो सकता है कि वह अभी सो रहा हो और यदि जाग रहा हो तो भी वह अपने ही मारे हुए बकरे खाना पसंद करे तो?’’ ‘का’ के बारे में ज्यादा न जानने के कारण स्वाभाविक रूप से बघीरा संशयग्रस्त था।

‘‘इस स्थिति में पुराने शिकारी तू और मैं मिलकर उसे हमारा साथ देने के लिए मजबूर कर सकते हैं।’’ यहाँ भालू ने अपना घिसा हुआ भूरा कंधा चीते के कंधे से रगड़ा और वे पहाड़ी अजगर ‘का’ से मिलने चल दिए।

उन्होंने उसे दुपहरी की धूप में अपनी नई सुंदर चमड़ी को प्रशंसा भरी दृष्टि से निहारते हुए एक शिला की तलहटी में पसरे हुए देखा, क्योंकि अपनी केंचुल को बदलते हुए पिछले दस दिनों से वह छुट्टी पर था—अपनी नई केंचुल में वह सचमुच शानदार लग रहा था। चपटी नाकवाले अपने बड़े से सिर को जमीन पर घुमाते और अपने तीस फुट लंबे शरीर को अनोखी गाँठों और प्रभावों में समेटे सामने आनेवाले भोजन की कल्पना में वह अपनी जीभ होंठों पर फेर रहा था।

‘‘उसने अभी खाया नहीं है,’’ जैसे ही भालू ने सुंदर चित्तियोंवाली उसकी भूरी और पीली केंचुल को देखा, वह राहत की साँस लेते हुए बोला, ‘‘जरा सँभल के, बघीरा! अपनी केंचुल बदलने के बाद अकसर उसे कम दिखाई देता है और वह बड़ी तेजी से हमला करता है।’’

‘का’ एक जहरीला साँप नहीं था—असल में वह जहरीले साँपों को कायर समझता था—उसकी ताकत उसकी जकड़ में थी और एक बार किसी को भी अपने घेरे में कसने के बाद कहने के लिए कुछ नहीं बचता था। ‘‘शुभ शिकार!’’ भालू चिल्लाया। अपनी नस्ल के अन्य साँपों की तरह ‘का’ भी बहरा था और पहली बार में उसने वह अभिवादन नहीं सुना। फिर किसी संभावित हादसे के लिए तैयार होते हुए उसने खुद को सिकोड़ा और अपना सिर झुकाया।

‘‘हम सभी को मजेदार शिकार मिले,’’ उसने उत्तर दिया, ‘‘ओ हो, भालू!तू यहाँ क्या कर रहा है?शुभ शिकार, बघीरा। हममें से कम-से-कम एक को भोजन की जरूरत है। क्या किसी मजेदार शिकार की कोई गुंजाइश है? एक हिरनी या उसका बच्चा ही सही। मेरा पेट उतना ही खाली है जैसे कोई सूखा कुआँ।’’

‘‘हम शिकार कर रहे हैं,’’ भालू ने लापरवाही से कहा। वह जानता था कि ‘का’ के मामले में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। वह बहुत विशाल है।

‘‘मुझे अपने साथ आने की इजाजत दो,’’ ‘का’ ने कहा, ‘‘एक आखेट कम या ज्यादा, तुम्हें तो कोई फर्क नहीं पड़ता बघीरा या भालू परंतु मुझे—मुझे तो बंदर के एक बच्चे को पाने की संभावना में ही कई दिनों तक इंतजार और आधी रात तक एक पेड़ पर चढ़ना होता है। फ्शूँऽऽ! पेड़ों की शाखाएँ अब वैसी नहीं रहीं जैसी मेरी जवानी के दिनों में होती थीं। अब तो सड़ी-गली टहनियाँ और सूखी डालियाँ ही बची हैं।’’

‘‘हो सकता है, माशाअल्ला, आपके भारी वजन से भी कुछ फर्क पड़ता हो,’’ भालू ने कहा।

‘‘मेरी लंबाई—मेरी लंबाई बस औसत ही है,’’ कुछ गर्व के साथ ‘का’ ने कहा, ‘‘मगर सारी गलती आज के पेड़ों की लकड़ी की है। अपने पिछले शिकार के समय मैं लगभग गिर ही गया था—और मेरे फिसलने की आवाज, क्योंकि मेरी पूँछ उतनी कसकर पेड़ से लिपटी हुई नहीं थी, ने बंदरों को जगा दिया था और उन्होंने मुझे भद्दी गालियाँ दी थीं।’’

‘‘बिन पैरों का पीला केंचुआ,’’ बघीरा अपनी मूँछों के नीचे से बुदबुदाया, जैसे वह कुछ याद करने की कोशिश

कर रहा हो।

''हिस्सऽऽऽ!क्या उन्होंने मुझे यह भी कहा?'' 'का' ने पूछा।

''पिछली पूर्णमासी को उन्होंने इसी तरह की कोई बात चिल्लाकर कही थी, परंतु हमने उनपर ध्यान नहीं दिया। वो तो कुछ भी कहते हैं—यह भी कि तेरे तो अब दाँत भी नहीं बचे हैं और तू अब एक बच्चे से बड़े जानवर का सामना नहीं कर सकता (ये बंदर कितने बेशर्म हैं!), क्योंकि तू तो एक बकरे के सींगों से भी डरता है,'' अपनी आवाज में मिठास घोलते हुए बघीरा ने कहना जारी रखा।

अब एक साँप, खासतौर पर 'का' जैसा एक बूढ़ा अजगर बहुत ही कम मौकों पर अपना गुस्सा जाहिर करता है, परंतु भालू और बघीरा 'का' के गले के दोनों ओर की गटकनेवाली भारी मांसपेशियों को लहराते और फूलते हुए देख सकते थे।

''बंदरों ने अपना ठिकाना बदल लिया है,'' उसने शांति से कहा, ''मैं जब धूप में आया तो मैंने उन्हें पेड़ों के ऊपर चीखते-चिल्लाते सुना था।''

''उन्हीं...उन्हीं बंदरों का हम पीछा कर रहे हैं,'' भालू ने कहा, परंतु शब्द उसके गले में रुक गए, क्योंकि उसकी याद में यह पहली बार हुआ था कि जंगलवासियों में से किसी ने बंदरों के मामलों में अपनी दिलचस्पी का इजहार किया था।

''फिर तो बेशक यह कोई छोटी बात नहीं है जिसने ऐसे दो शिकारियों—मुझे पूरा भरोसा है कि अपने जंगल में वे नेता होंगे—को बंदरों का पीछा करने के लिए मजबूर किया होगा।'' अपनी उत्सुकता पर काबू रखते हुए 'का' ने विनम्रता से जवाब दिया।

''असल में,'' भालू ने बोलना शुरू किया, ''मैं सिवनी में भेड़ियों के बच्चों को कानून सिखानेवाला बूढ़ा और कभी-कभी महामूर्ख शिक्षक से ज्यादा कुछ नहीं हूँ, और बघीरा।''

''बघीरा है,'' काले चीते ने कहा और उसने अपना जबड़ा खट् से बंदकर लिया, क्योंकि वह नम्रता में विश्वास नहीं करता था। ''समस्या यह है, 'का' कि उन मूँगफली चुरानेवालों और ताड़ के पत्ते बीननेवालों ने हमारा बाल-मानव, जिसके बारे में तूने सुना होगा, चुरा लिया है।''

''मैंने इक्की साही से सुना था कि आदमी जैसा कोई जीव भेड़ियों के एक झुंड में शामिल हुआ है, मगर मैंने भरोसा नहीं किया। इक्की के पास ऐसी सुनी- सुनाई कहानियों की कमी नहीं है और उसका सुनाने का तरीका भी घटिया है।'' ''लेकिन यह सच है। वह एक ऐसा बाल-मानव है जैसा पहले कभी नहीं हुआ,'' भालू ने कहा, ''सभी बाल-मानवों में सबसे अच्छा, सबसे बुद्धिमान और सबसे साहसी—मेरा अपना चेला, जो सभी जंगलों में भालू का नाम रोशन कर देगा और इसके अलावा मैं—हम उसे प्यार करते हैं 'का'।

''यह तो वाकई बुरी बात है,'' अपने सिर को आगे पीछे करते हुए 'का' ने कहा, ''वैसे मैं भी जानता हूँ कि प्यार क्या होता है। उसके बारे में मैं कई कहानियाँ...।''

''उसके लिए एक फुरसत की रात की जरूरत होगी, जब हम एक बढ़िया डिनर करने के बाद कहानियाँ सुनने के मूड में होंगे,'' बघीरा ने तेजी से कहा, ''हमारा बाल-मानव बंदरों के कब्जे में है और हम जानते हैं कि वे जंगल के किसी भी जानवर के मुकाबले केवल 'का' से डरते हैं।''

''हाँ, वे केवल मुझसे डरते हैं। और इसकी वजह है,'' 'का' ने कहा, ''बक-बक करनेवाले, मूर्ख और दंभी हैं ये बंदर। लेकिन उनके हाथों में एक बाल-मानव अच्छा शगुन नहीं है। वे फल और दाने बीन-बीनकर भी थक जाते हैं और उन्हें नीचे फेंक देते हैं। एक डाली को वे आधा दिन लिए घूमेंगे, उससे बड़े-बड़े काम करेंगे और फिर

उसके दो टुकड़े कर देंगे। इस इनसानी चीज की जान खतरे में है। मुझे भी वे पीली मछली कहते थे—क्या नहीं?''

''रेंगनेवाला कीड़ा...केंचुआ,'' बघीरा ने कहा, ''तथा और भी बहुत कुछ, जिन्हें मैं शर्म के मारे अभी तक नहीं बता सकता।''

''हमें उन्हें याद दिलाना चाहिए कि अपने मालिक के बारे में बुरा बोलना ठीक नहीं है। आऽऽस्प!हमें उनकी भटकती हुई याददाश्त को दुरुस्त करना चाहिए। अब बताओ उस बालक को लेकर वे किस तरफ गए हैं?''

''यह तो जंगल ही जानता है। मैं समझता हूँ पश्चिम की ओर,'' भालू ने कहा, ''हमने सोचा था तू जानता होगा 'का'।''

''मैं?मैं कैसे जानूँगा? अगर वे मेरे रास्ते में आएँ तो मैं उन्हें निगल जाता हूँ, परंतु मैं बंदरों या मेंढकों का शिकार नहीं करता।''

''ऊपर-ऊपर! ऊपर-ऊपर! हिलो-हिलो ऊपर देखो। सिवनी भेड़िया-दल का भालू!''

यह जानने के लिए कि वह आवाज कहाँ से आई, भालू ने ऊपर देखा; वह रन चील थी, उसके खुले पंखों का निचला भाग सूरज के प्रकाश में चमक रहा था। वह लगभग चील के सोने का समय हो गया था, परंतु भालू की तलाश में वह पूरे जंगल के ऊपर घूमती रही थी, परंतु घने वृक्षों के कारण उसे देख नहीं पाई थी।

''क्या बात है?'' भालू ने पूछा।

''मैंने मोगली को बंदरों के कब्जे में देखा है। उसने मुझे तुम्हें बताने के लिए कहा है। बंदर उसे नदी के पार बंदरों के शहर में ले गए हैं—ठंडी पट्टी में। वे वहाँ एक रात या दस रातें या एक घंटा भी रुक सकते हैं। अँधेरे में उन पर निगरानी रखने के लिए मैंने चमगादड़ों को कह दिया है। मेरे पास इतना ही संदेश है। नीचे जमीन पर रहनेवाले तुम सबको शुभ शिकार।''

''तुम्हें भी भरपेट भोजन और गहरी नींद,'' बघीरा चिल्लाया, ''मेरे अगले शिकार में मैं तुम्हारा खयाल रखूँगा और केवल तुम्हारे लिए ही उसका सिर अलग रख दूँगा, ओ चीलों की सरताज!''

''ओह, मैंने ज्यादा कुछ नहीं किया है। लड़का मास्टर शब्द जानता था। इतना तो मैं कर ही सकती थी,'' और अपने बसेरे पर जाने के लिए चील ने फिर उड़ान भरी।

''वह अपनी सीखी हुई भाषा का उपयोग करना नहीं भूला,'' गर्व की एक मुस्कान के साथ भालू ने कहा, ''सोचो, इतने छोटे बच्चे ने उस समय तक भी पक्षियों की भाषा याद रखी जब वह पेड़ों के ऊपर से ले जाया जा रहा था!''

''उसके दिमाग में वह अच्छी तरह बिठा दी गई थी,'' बघीरा ने कहा, ''लेकिन मुझे इस पर गर्व है। अब हमें तुरंत ठंडी पट्टी के लिए निकलना चाहिए।''

वे सब जानते थे कि वह जगह कहाँ थी, परंतु जंगलवासियों में से बहुत कम ही वहाँ गए थे, क्योंकि जिसे वे ठंडी पट्टी कहते थे, वह एक पुराना सुनसान शहर था, जो जंगल में कहीं खो और दफन हो गया था और जानवर उन स्थानों को बहुत कम इस्तेमाल करते हैं जिसे कभी मनुष्यों ने इस्तेमाल किया हो। जंगली सुअर भले ही करें, परंतु शिकारी जानवर नहीं करते। इसके अतिरिक्त, बंदर वहाँ उतनी ही देर रहते थे जितना वे किसी और ठिकाने पर रहते हों और सिवाय सूखे के दिनों में, जब तालाबों और नदियों में बहुत कम पानी बचता था, आत्मसम्मान रखनेवाला कोई भी प्राणी उस ओर नजर तक नहीं डालता था।

''वहाँ पहुँचने में आधी रात हो जाएगी—पूरी रफ्तार से चले तो,'' बघीरा ने कहा। यह सुनकर भालू बहुत गंभीर हो गया। ''जितना मुझसे बनेगा, मैं उतना तेज चलूँगा,'' उसने आतुरता से कहा।

‘‘हम तुम्हारा इंतजार नहीं कर सकते। तुम पीछे-पीछे आना। हमें तेज चाल से चलना है—‘का’ और मुझे।’’

‘‘मेरे पैर हों या न हों, मैं तुम्हारे चार पैरों के बराबर चलूँगा,’’ ‘का’ ने संक्षेप में कहा। भालू ने तेज चलने का एक प्रयास किया, परंतु उसे हाँफते हुए बैठ जाना पड़ा। इसलिए उसे बाद में आने के लिए कहकर बघीरा चीते की चाल से सरपट दौड़ लिया। ‘का’ ने कहा कुछ नहीं, परंतु वह विशाल चट्टानी अजगर इसी की रफ्तार से चला। जब वे एक पहाड़ी नदी तक पहुँचे तो जल्दी-जल्दी हाथ-पैर मारकर बघीरा आगे निकल गया, जबकि अपने सिर और दो फुट लंबी गरदन को पानी से ऊपर रखे ‘का’ को तैरना पड़ा, परंतु जमीन पर वह फिर बराबरी में आ गया।

‘‘उस टूटे ताले की कसम, जिसने मुझे आजाद किया,’’ साँझ ढलने पर बघीरा ने कहा, ‘‘तेरी रफ्तार भी कुछ कम नहीं है।’’

‘‘मैं भूखा हूँ,’’ ‘का’ ने कहा, ‘‘इसके अलावा, उन्होंने मुझे चित्तीदार मेंढक कहा।’’

‘‘रेंगनेवाला कीड़ा—केंचुआ और वह भी पोला।’’

‘‘एक ही बात है। बस चलते रहो,’’ अपनी स्थिर आँखों की सहायता से छोटा रास्ता लेते हुए ‘का’ ने जान की बाजी लगा दी।

ठंडी पट्टी में बंदर मोगली के दोस्तों के बारे में बिलकुल नहीं सोच रहे थे। वे लड़के को ‘खोए हुए शहर’ में ले आए थे और अपने आप से बेहद खुश थे। मोगली ने इससे पहले कोई भारतीय शहर नहीं देखा था और यद्यपि वह लगभग खण्डहर हो चुका था, फिर भी बहुत शानदार लग रहा था। किसी राजा ने बहुत पहले एक छोटी सी पहाड़ी पर उसका निर्माण किया था। आप अब भी पत्थरों से बने उस पहुँच-मार्ग के निशान देख सकते थे, जो जंग लगे फाटकों तक ले जाता था, जहाँ घिसे हुए, जंग लगे कब्जों से गली हुई लकड़ी के अवशेष अब भी चिमटे हुए थे। शहर की मोटी बाहरी दीवार में और बाहर पेड़ उग आए थे; उसका प्राचीर जीर्ण- शीर्ण हो चुका था और ऊपर बने भवनों की खिड़कियों पर जंगली बेलें झुरमुट के रूप में दीवार पर लटक रही थीं।

पहाड़ी के ऊपर एक छत-रहित विशाल महल खड़ा था, जिसके अहातों और फव्वारों में लगे संगमरमर तड़क गए थे और उन पर लाल-हरे धब्बे पड़ गए थे; विशाल अहाते, जहाँ राजा के हाथी रहा करते थे, में जड़े गोल पत्थरों के बीच घास और छोटे-छोटे पौधे उग आए थे, जिससे वे बेतरतीब नजर आते थे। महल से आप छतविहीन घरों की कतारें देख सकते थे, जो कभी शहर का हिस्सा रहे होंगे और जो कालेपन से भरे हुए मधुमक्खी के खाली छत्तों जैसे नजर आते थे; चौक पर एक बड़ा सा आकारहीन पत्थर है, जो कभी एक प्रतिमा रही होगी; गली के चौराहों पर कुछ गहरे और कुछ उथले गड्ढे दिखाई देते हैं, जहाँ कभी सार्वजनिक कुएँ हुआ करते थे और मंदिरों के ध्वस्त शिखर जिनके आसपास गूलर के पेड़ उग आए हैं। इस जगह को बंदर अपना शहर कहते हैं और जंगली जीवों को हेय दृष्टि से देखते हैं, क्योंकि वे जंगल में रहते हैं। फिर भी वे यह नहीं जानते हैं कि ये भवन क्यों बनाए गए हैं और उन्हें कैसे इस्तेमाल किया जाता है। राजा के दरबार में वे घेरा बनाकर बैठ जाते और पिस्सुओं की वजह से अपने बदन खुजलाते हुए खुद को आदमी समझने के मुगालते में रहते हैं। वे छतविहीन घरों के अंदर-बाहर जाते तथा एक कोने में चूना और पुरानी ईंटों के ढेर लगा देते और फिर भूल जाते कि उन्होंने उसे कहाँ छिपाया है, फिर झुंड बनाकर लड़ते और चिल्लाते और राजा के बगीचे के आसपास बने कँगूरों पर चढ़ने-उतरने का खेल शुरू कर देते। खेल-खेल में ही गुलाब और संतरे के पेड़ों को झकझोर डालते तथा फूलों और फलों को जमीन पर गिरा देते। उन्होंने महल के सारे रास्तों, अँधेरी सुरंगों और सैकड़ों अँधेरी कोठरियों का मुआयना किया है, परंतु वे कभी याद नहीं रख पाते हैं कि उन्होंने क्या देखा था और क्या नहीं; और इस तरह वे एक-दूसरे से यह कहते हुए इक्के-दुक्के या झुंड में घूमते रहते हैं कि देखो हम वह सब करते हैं जो इनसान करते हैं। वे तालाब में पानी पीते और पानी में

उछल-कूद कर उसे मटमैला बना देते और फिर उसे लेकर लड़ते; फिर एक भीड़ के रूप में निकलते और चिल्लाते, ''इस पूरे जंगल में बंदरों जैसा बुद्धिमान्, भला, चतुर और सौम्य और कोई नहीं है।'' फिर वे ये ही सब हरकतें फिर से करना शुरू कर देते, जब तक कि वे इस शहर से बोर नहीं हो जाते और फिर इस उम्मीद से पेड़ों पर वापस चले जाते कि जंगलवासी अब उनपर ध्यान देंगे।

मोगली, जिसे जंगल की जीवन-पद्धति के बारे में प्रशिक्षित किया गया था, इस तरह की जिंदगी को न समझ पाता था और न पसंद करता था। वे देर दुपहरी को उसे ठंडी पट्टी में ले आए थे और इतने लंबे सफर के बाद आराम करने की बजाय वे एक-दूसरे का हाथ पकड़कर नाचने और अपने बेहूदे गाने गाने लगे। बंदरों में से एक उठकर भाषण देने लगा और उसने अपने साथियों से कहा कि मोगली को हासिल करना बंदरों के इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात करेगा, क्योंकि बारिश और ठंड से बचाव के लिए मोगली उन्हें लकड़ियों और बाँसों को बाँधना सिखाएगा। मोगली ने कुछ बेलों को उठाकर उन्हें बुनना शुरू कर दिया और बंदरों ने उसकी नकल करने की कोशिश की, परंतु कुछ ही मिनट बाद इस काम में उनकी दिलचस्पी खत्म हो गई और उन्होंने एक-दूसरे की पूँछ खींचना और उछलना-कूदना शुरू कर दिया।

''मैं कुछ खाना चाहता हूँ,'' मोगली ने कहा, ''जंगल के इस भाग में मैं एक अजनबी हूँ। मुझे कुछ खाने के लिए दो या शिकार करने के लिए मुझे जाने दो।'' बीस या तीस बंदर दानेदार फलियाँ और संतरे लाने के लिए उछलते-कूदते वहाँ से निकले और संतरे ले आए। परंतु रास्ते में लड़ाई होने से वे सब सड़क पर ही गिर गए और सड़क पर से उन्हें उठाना एक बड़ी मुसीबत थी। मोगली बहुत खिन्न और क्रोधित हुआ। उसे बहुत भूख लगी थी। समय-समय पर 'अजनबियों का शिकार आष्टान' करते हुए वह उस खाली शहर में घूमता रहा, परंतु किसी ने जवाब नहीं दिया और मोगली समझ गया कि वह वाकई बहुत बुरी जगह में पहुँच गया है। ''भालू ने बंदरों के बारे में जो कुछ कहा था, वह सब सच है,'' उसने मन-ही-मन सोचा। ''इनमें कोई कानून व्यवस्था नहीं है, कोई शिकार आह्वान नहीं है और न कोई नेता। बेहूदा शब्दों और बीनकर, चुराकर खानेवाले हाथों के सिवाय उनके पास कुछ नहीं है। इसलिए, अगर मैं यहाँ भूखा मर जाऊँ या मार दिया जाऊँ तो यह मेरी ही गलती होगी। परंतु मुझे मेरे अपने जंगल में जाने की कोशिश करनी होगी। सिखाते समय भालू जरूर मुझे मारेगा, लेकिन फलों और फलियों के लिए बंदरों के साथ दौड़ने से वह बेहतर है।''

वह शहर की बाहरी दीवार तक पहुँचा भी नहीं था कि उसमें कृतज्ञता का भाव जगाने के लिए उसे चिमटी काटते हुए बंदरों ने उसे पीछे खींच लिया। उसने दाँत भींचे पर कहा कुछ नहीं और बारिश के पानी से आधा भरे लाल पत्थरों से बने एक जलाशय के बगल में एक ढाँचे की छत पर चिल्लाते हुए बंदरों के साथ चला गया। छत के बीचोबीच उन रानियों, जो सौ साल पहले मर चुकी थीं, के लिए सफेद संगमरमर से बनाया गया एक ग्रीष्मकालीन आरामगाह था। आधी गिरी हुई गुंबदाकार छत ने उस सुरंग का द्वार बंद कर दिया था, जिसके जरिए रानियाँ महल में प्रवेश करती थीं। दीवारें नक्काशी किए गए संगमरमर से बनी थीं—उन पर नगीने जड़ी सफेद नक्काशीदार लकड़ी का काम किया हुआ था—और पहाड़ियों के पीछे से जब चाँद निकला तो छत उसकी रोशनी से चमक रही थी और जमीन पर उसकी काली मखमली परछाईं बिछ गई थी। कटुता, नींद और भूख से पीड़ित मोगली उस समय हँसे बिना न रह सका जब बीस-बीस बंदरों ने एक साथ यह कहना शुरू किया कि वे कितने महान्, बुद्धिमान्, ताकतवर और सौम्य हैं और उन्हें छोड़कर जाने की बात सोचनेवाला वह कितना मूर्ख है। ''हम महान् हैं। हम आजाद हैं। हम अद्भुत हैं। पूरे जंगल में हम सबसे अनोखे हैं। हम सब यही कहते हैं, इसलिए यही सच होना चाहिए,'' वे चिल्लाए, ''चूँकि तुम एक नए श्रोता हो और हमारी बात जंगलवासियों तक पहुँचा सकते हो, ताकि

भविष्य में वे हमारा महत्त्व समझें। हम सभी स्वनामधन्य बंदरों के बारे में तुम्हें सबकुछ बताएँगे।'' मोगली ने कोई आपत्ति नहीं जताई और उनके अपने वक्ताओं द्वारा बंदर बिरादरी का गुणगान सुनने के लिए छत पर सैकड़ों बंदर जमा हो गए। जब कोई वक्ता साँस लेने के लिए रुकता तो सब एक साथ चिल्लाते, ''यह सच है, हमसब यही कहते हैं।'' जब वे उससे कोई सवाल पूछते तो मोगली आँख मिचकाते और सिर हिलाते हुए 'हाँ' कहता; शोर से उसका सिर घूम रहा था। ''उस सियार तबाकी ने इन सबको काटा होगा,'' उसने अपने आपसे कहा, ''अब ये सब पागल हो चुके हैं। निश्चित रूप से यह दीवानगी है। क्या ये लोग कभी सोते नहीं? अब चाँद को ढँकने के लिए एक बादल आ रहा है। अगर वह बादल काफी बड़ा हो तो मैं अँधेरे में भागने की कोशिश करता। मगर मैं थका हुआ हूँ।''

उसी बादल को शहर की बाहरी दीवार के नीचे बने सूखे गड्ढे में दो दोस्त भी देख रहे थे, क्योंकि यह अच्छी तरह जानते हुए कि एक बड़ी संख्या में होने पर ये बंदर लोग कितने खतरनाक होते हैं, बघीरा और 'का' कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। जब तक वे एक के मुकाबले सौ न हों, बंदर कभी नहीं लड़ते। जंगल के बहुत कम जानवर इतने हिसाब-किताब से लड़ते हैं।

''मैं पश्चिमी दीवार की तरफ जाऊँगा,'' 'का' फुसफुसाया, ''और तेजी से उपयुक्त ढलान पर आ जाऊँगा। सैकड़ों बंदर मिलकर तो मुझ पर हमला नहीं कर पाएँगे, परंतु...।''

''मैं जानता हूँ,'' बघीरा ने कहा, ''भालू यहाँ होता तो अच्छा रहता, लेकिन हम जो कुछ कर सकते हैं वह हमें करना चाहिए। जब वह बादल चाँद को ढँक लेगा, मैं छत पर जाऊँगा। वे वहाँ लड़के से संबंधित किसी प्रकार की मीटिंग रखते हैं।''

''शुभ शिकार,'' 'का' ने गंभीरता से कहा और सरसराता हुआ पश्चिमी दीवार की ओर चला गया। संयोग से दीवार का वह भाग सबसे कम टूटा-फूटा था और पत्थरों से बने ढाँचे तक अपना रास्ता खोजते हुए उस विशाल साँप को कुछ देर हो गई। बादल ने चाँद को ढँक लिया और जब मोगली अचरज कर रहा था कि अब आगे क्या होगा, उसने छत पर बघीरा के हलके कदमों की आहट सुनी। बिना कोई आवाज किए काला चीता तेजी से पहाड़ी पर चढ़ आया था और वहाँ पहुँचते ही उसने मोगली के चारों ओर घेरा बनाकर बैठे बंदरों पर हमला कर दिया—वह जानता था कि अब इंतजार करने का वक्त नहीं था। डर और गुस्से से पागल बंदरों ने चिल्लाना शुरू कर दिया और जैसे ही बघीरा भागते गिरते-पड़ते बंदरों के शरीरों पर फिसला, एक बंदर चिल्लाया, ''यहाँ एक ही चीता आया है, उसे मार डालो, मार डालो।'' काटते, खँरोचते, बेतहाशा हाथ-पैर चलाते बंदरों के एक झुंड ने बघीरा को घेर लिया, जबकि पाँच या छह बंदर मोगली की ओर झपटे। उसे घसीटते हुए आरामगाह की दीवार के ऊपर ले गए और टूटे हुए गुंबद में बने छेद में से उसे भीतर धकेल दिया। इनसानों द्वारा प्रशिक्षित कोई भी लड़का गिरकर बुरी तरह घायल हो जाता, क्योंकि वह कम-से-कम पंद्रह फुट नीचे गिरा था, परंतु मोगली भालू के बताए तरीके से अपने पैरों के बल गिरा और सुरक्षित रहा।

''यहीं पड़ा रह,'' बंदर चिल्लाए, ''जब तक कि हम तेरे दोस्तों को मार नहीं देते। बाद में हम तेरे साथ खेलेंगे—अगर जहरीले जानवर तुझे जिंदा छोड़ें तो।''

''हम दोनों एक ही खून के हैं—तुम और मैं,'' तेजी से साँपों का आह्वान करते हुए मोगली ने कहा। चारों तरफ फैले लकड़ियों और कूड़े के अंबार में वह साँपों के सरसराने और फुफकारने की आवाज सुन सकता था और अपने आह्वान को और पक्का करने के लिए उसने उसे एक बार और दोहराया।

''सभी ध्यान से सुनें! अपने-अपने फन नीचे कर लें!'' आधा दर्जन धीमी आवाजों ने कहा (भारत में हर एक

खँडहर देर-सवेर साँपों का निवास बन जाता है और वह पुराना आरामगाह नागों से अटा पड़ा था।), ''छोटे भाई, जहाँ खड़े हो वहीं शांत खड़े रहना, क्योंकि तुम्हारे पैर हमें हानि पहुँचा सकते हैं।''

उस गड्ढे के खुले भाग से झाँकते और काले चीते के चारों ओर चल रही भयंकर लड़ाई की आवाजें सुनता हुआ—बंदरों की चीख-पुकार, कोलाहल और नोच-खसोट और अपने दुश्मनों की फौज पर टूट पड़ते बघीरा की करकश गुर्राहट—मोगली जितना शांत और स्थिर खड़ा रह सकता था, खड़ा रहा। अपनी पैदाइश के बाद जीवन में पहली बार बघीरा जिंदगी और मौत की लड़ाई लड़ रहा था।

''भालू को भी यहाँ होना चाहिए था; बघीरा अकेला तो नहीं आया होगा,'' मोगली ने सोचा। फिर वह जोर से चिल्लाया, ''तालाब की ओर जाओ, बघीरा। जल्दी करो।''

बघीरा ने सुना और मोगली की पुकार ने उसे बता दिया कि वह सुरक्षित है। इससे उसमें नए साहस का संचार हुआ। आतुरता से इंच-इंच करके उसने जलाशय की ओर जाने का रास्ता बनाया। फिर जंगल के सबसे पास की जीर्ण-शीर्ण दीवार से भालू का युद्ध-नाद गूँजा। बूढ़े भालू ने चलने के मामले में अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन किया था, परंतु वह इससे पहले नहीं पहुँच सका। ''बघीरा,'' वह चिल्लाया, ''मैं आ गया हूँ। मैं चढ़ रहा हूँ, जल्दी-जल्दी। अहुवोरा! मेरे पैरों के नीचे पत्थर खिसक रहे हैं! जरा मुझे पहुँचने दो, ओ कुख्यात बंदरो!'' वह जैसे ही हाँफता हुआ छत पर पहुँचा बंदरों के एक बड़े ढेर में उसने खुद को गले तक धँसा पाया, परंतु उसने अपने भारी शरीर का वजन पूरी तरह बंदरों पर डाल दिया; फिर अपने अगले पंजों को पूरा फैलाकर जितने बंदर उसमें समा सकते थे, अपनी चपेट में लेकर उन पर शिकंजा कस दिया और फिर नाव में लगे पैडल व्हील से उन्हें मारने लगा। पानी में एक जोरदार छपाके की आवाज से मोगली समझ गया कि लड़ते-लड़ते बघीरा तालाब में पहुँच गया है, जहाँ बंदर उसका पीछा नहीं कर सकते। पानी से बस अपना सिर बाहर निकाले चीते ने एक लंबी साँस ली, जबकि गुस्से से तिलमिलाते हुए बंदर घाट की लाल सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे होते हुए उस समय उस पर टूट पड़ने के लिए तैयार थे, जब वह भालू की मदद के लिए पानी से बाहर निकलता। बघीरा ने अपनी ठुड्डी बाहर निकाली और निराशा में अजगर से उसे सुरक्षा देने का आह्वान किया, ''हम दोनों एक ही खून के हैं—तू और मैं''—क्योंकि वह समझा कि अंतिम क्षणों में अजगर पीछे हट गया है। यहाँ तक कि भालू, जो छत के किनारे पर असंख्य बंदरों के नीचे झुका हुआ था, काले चीते को मदद के लिए गुहार लगाता देख मुसकराए बिना न रह सका।

'का' अभी-अभी ही पश्चिमी दीवार पर चढ़ने में सफल हो पाया था, जहाँ अपने वजन से वह एक बाहर की ओर निकले पत्थर को नीचे गड्ढे में गिराते हुए धम्म से गिरा। वह जमीन से जुड़े रहने के किसी लाभ को खोना नहीं चाहता था और यह परखने के लिए कि उसके लंबे बदन का प्रत्येक पैर सही सलामत था, उसने एक या दो बार कुंडली मारी और फिर खोल दी। इस पूरे समय बंदरों से भालू की लड़ाई चलती रही; तालाब पर बघीरा के चारों ओर बंदर चिल्ला रहे थे। आगे-पीछे उड़ते हुए 'माँग' चमगादड़ ने इस भयंकर लड़ाई की खबर पूरे जंगल में फैला दी जब तक कि जंगली हाथी ने भी चिंघाड़ना शुरू नहीं कर दिया और दूर-दूर तक रहनेवाले बंदर ठंडी पट्टी के अपने साथियों की मदद करने के लिए वृक्ष-मार्ग से उछलते-कूदते वहाँ आने लगे और इस लड़ाई के शोर ने कई मीलों के दायरे में रहनेवाले दिन के पक्षियों को जगा दिया। लड़ाई के इस दौर में मारने के लिए आतुर 'का' सीधे लड़ाई में कूद पड़ा। एक अजगर की लड़ने की शक्ति उसके सिर से किए जानेवाले प्रहार में होती है जिससे उसके शरीर के पूरे वजन और शक्ति का सहयोग मिलता है। यदि आप एक बुलडोजर या लगभग आधे टन के हथोड़े, जिसे एक ठंडा दिमाग संचालित कर रहा हो, की कल्पना कर सकें तो आपको मोटे तौर पर अंदाजा हो जाएगा कि लड़ते समय 'का' क्या चीज था! चार या पाँच फुट लंबा एक अजगर एक आदमी को धराशायी कर सकता है, यदि

वह उसकी छाती पर एक करारा प्रहार करे और आप जानते हैं कि 'का' तीस फुट लंबा था। उसका पहला प्रहार भालू के चारों ओर जमा भीड़ के बीचोबीच हुआ। यह वार खामोशी के साथ मुँह बंद किए किया गया था और दूसरे वार की जरूरत ही नहीं थी। ''अरे, 'का'! यह तो 'का' है। भागो! भागो!'' की पुकार के साथ सारे बंदर तितर-बितर हो गए।

बड़े बंदरों द्वारा रात्रि का चोर 'का', जो इतने चुपके से पेड़ों की शाखाओं के बीच सरक आता है जैसे पानी के अंदर काई उग आती है और वहाँ रहनेवाले सबसे तगड़े बंदर को चुरा ले जाता है, के बारे में कहानियाँ सुनाकर बंदरों को अच्छे आचरण के लिए प्रेरित करते हुए पीढ़ियाँ बीत गई हैं। उसी बूढ़े 'का' के बारे में जो अपने आपको हूबहू एक मृत शाखा या सूखे ठूँठ जैसा बना लेता था कि सबसे बुद्धिमान् बंदर भी धोखा खा जाए और देखते-ही-देखते वह सूखी डाली उसे निगल जाए। जंगल में एक 'का' ही था जिससे वे बेहद डरते थे, क्योंकि उनमें से कोई भी 'का' की शक्ति की सीमा नहीं जानता था, उनमें से कोई भी उससे आँख मिलाकर बात नहीं कर सकता था और उसकी गिरफ्त में आने के बाद कोई भी जिंदा वापस नहीं आया था। इसलिए एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते, डर से हकलाते बंदर घरों की दीवारों और छतों पर भागने लगे और भालू ने राहत की एक गहरी साँस ली। उसकी खाल बघीरा की खाल से काफी मोटी थी, परंतु लड़ाई में वह बुरी तरह घायल हुआ था। फिर 'का' ने पहली बार अपना मुँह खोला और लंबी फुफकार से भरा एक शब्द बोला और वे बंदर भी, जो उससे बहुत दूर थे, दुबककर जहाँ थे, वहीं रह गए जब तक पेड़ों की शाखाएँ उनके बोझ से झुककर चरमरा न गईं। दीवारों और खाली घरों पर बैठे बंदरों ने चिल्लाना बंद कर दिया और शहर पर छा गए सन्नाटे में मोगली ने तालाब से बाहर निकले बघीरा द्वारा अपने गीले बदन को हिलाकर सुखाने की आवाज सुनी। और तब फिर से शोर मचने लगा। दीवारों पर बैठे बंदर उछलकर और अधिक ऊँचे स्थानों पर बैठ गए। वे पत्थरों से बनी विशाल मूर्तियों के गलों से लिपट गए और फिर चीखते हुए किले के प्राचीर से कूदने लगे, जबकि आरामगाह में नाचते हुए मोगली ने झरोखे से झाँककर यह सब देखा तथा अपनी नफरत प्रकट करने के लिए अपने आगे के दाँतों के बीच से उल्लू जैसी आवाज निकालते हुए हूट किया।

''बाल-मानव को उस पिंजरे से निकालो, मैं अब और कुछ नहीं कर सकता,'' बघीरा ने हाँफते-हाँफते कहा, ''हम बाल-मानव को लें और चलें। वे फिर हमला कर सकते हैं।''

''जब तक मैं उन्हें आदेश नहीं देता, वे अपनी जगह से हिलेंगे भी नहीं, बंदरो, जो जहाँ जैसे बैठा या खड़ा है, वैसे ही रहेगा।'' 'का' ने फुफकारा और शहर एक बार फिर खामोश हो गया। ''मैं पहले नहीं आ सका भाई, मगर मैं सोचता हूँ, मैंने तेरी पुकार सुनी थी''—यह बघीरा को संबोधित था।

''मैं-मैं लड़ाई के दौरान चिल्लाया हूँगा,'' बघीरा ने जवाब दिया, ''भालू, क्या तुझे चोट आई है?''

''मैं पक्के तौर पर नहीं कह सकता कि उन्होंने मुझे सौ छोटे छल्लों में से गुजारा था या नहीं,'' एक के बाद एक अपने पैरों को झटकते हुए भालू बोला, ''ओह, मेरा अंग-अंग दुःख रहा है। 'का', तुम्हारी वजह से हमारी—बघीरा की और मेरी—जान बची है।''

''ऐसी बात नहीं है। बाल-मानव कहाँ है?''

''यहाँ, एक पिंजरे में। मैं चढ़कर बाहर नहीं आ सकता,'' मोगली ने चिल्लाकर कहा। टूटे हुए गुंबद का उभरा हुआ सिरा उसके सिर से ऊपर था।

''इसे ले जाओ। वह माओ मोर की तरह नाचता है। वह हमारे बच्चों को कुचल देगा,'' तहखाने में रहनेवाले नागों ने कहा।

''हा!'' एक दबी हुई हँसी के साथ 'का' ने कहा, ''हर जगह उसके दोस्त हैं, यह बाल-मानव। बाल-मानव,

वहीं खड़े रहना। ओ, विषधारियो, तुम लोग छिपे रहो। मैं यह दीवार ही तोड़ डालता हूँ।''

'का' ने गौर से दीवार का मुआयना किया और संगमरमर की नक्काशी में उसका कमजोर स्थल दरशानेवाली एक दरार खोज ली। फिर उसने अपने सिर से दो या तीन बार हलके से दरारवाले स्थान पर प्रहार किया, ताकि वह कुछ चौड़ी हो जाए और फिर अपने बदन के छह फुट भाग को जमीन से ऊपर उठाकर अपनी नाक की तरफ से पूरी ताकत लगाकर करीब आधा दर्जन करारे प्रहार किए। दीवार टूट गई तथा धूल के गुब्बार और मलबे का ढेर बनाती हुई एक तरफ ढह गई; मोगली तहखाने के खुले हिस्से से उछला और सीधे भालू और बघीरा के बीच में जा गिरा—दोनों के भारी गलों में एक-एक बाँह डाले हुए।

''क्या तुझे चोट आई है?'' मृदुता से उसे अपने आगोश में लेते हुए भालू नेपूछा।

''मैं परेशान और भूखा हूँ और खरोंचें भी कम नहीं हैं।'' मगर ओह, उन्होंने तुम्हें बहुत मारा है, मेरे भाई! खून निकल रहा है।

''मार तो उन्होंने भी बहुत खाई है,'' अपने होंठ चाटते और छत पर तथा तालाब के आसपास बंदरों की लाशों की ओर देखते हुए बघीरा ने कहा।

''यह कुछ नहीं, यह कुछ नहीं, अगर तू सुरक्षित है, ओ सभी नन्हे मेंढकों में सबसे प्यारे मेरे मेंढक!'' भालू ने रुआँसी आवाज में कहा।

''उसके बारे में हम बाद में फैसला करेंगे,'' बघीरा ने बेरुखी से कहा, जो मोगली को जरा भी पसंद नहीं आया। ''लेकिन यहाँ पर 'का' है, जिसे यह लड़ाई जीतने का श्रेय जाता है और तुम्हारी तो उसने जान बचाई है। मोगली, तुम हमारे रिवाजों के मुताबिक उसका शुक्रिया अदा करो।''

मोगली ने मुड़कर देखा कि उस विशाल अजगर का सिर उसके अपने सिर से एक फुट ऊपर डोल रहा था।

''तो यह है बाल-मानव,'' 'का' ने कहा, ''इसकी चमड़ी बहुत नर्म है और बंदरों से यह बहुत अलग नहीं है। बाल-मानव, इस बात का ध्यान रखना कि किसी दिन साँझ के धुँधलके में मैं तुझे एक बंदर न समझ बैठूँ, खासतौर से तब, जब मैंने अपनी केंचुल बदली हो।''

''हम दोनों एक ही खून के हैं—तू और मैं,'' मोगली ने जवाब दिया, ''आज मैंने अपना जीवन तुझसे लिया। जब कभी भी तुझे भूख लगे, मेरा शिकार तेरा होगा, ओ, 'का'।''

''धन्यवाद, नन्हे भाई,'' 'का' ने कहा, यद्यपि उसकी आँखें चमक रही थीं। ''इतना बहादुर शिकारी किस जीव का शिकार करता है? मैं इसलिए पूछ रहा हूँ कि अगर वह छुट्टी पर जाए तो मैं भी वही करने की कोशिश करूँ।''

''मैं किसी को नहीं मारता—मैं अभी बहुत छोटा हूँ—लेकिन मैं बंदरों को उनकी ओर हँकाल देता हूँ जो उनका इस्तेमाल कर सकते हैं। तुम कभी खाली हो तो मेरे पास आकर देखना कि मैं सच कह रहा हूँ या नहीं। मेरे इन हाथों में कुछ हुनर है और अगर तुम कभी किसी जाल में फँस जाओ तो मैं तुम्हारा, बघीरा का और भालू का ऋण उतार सकूँगा। आप सब मालिकों को मेरी ओर से शुभ शिकार।''

''बहुत अच्छी बात कही,'' भालू घुरघुराया, क्योंकि मोगली ने बहुत खूबसूरती से धन्यवाद दिया था। अजगर ने एक मिनट के लिए धीरे से अपना सिर मोगली के कंधे पर रख दिया। ''एक बहादुर दिल और एक विनम्र जुबान,'' उसने कहा, ''जंगल के जीवन में ये तुम्हें दूर तक ले जाएँगे, बाल-मानव! मगर अभी अपने दोस्तों के साथ तुरंत यहाँ से निकल लो। जाओ और सो जाओ, क्योंकि चंद्रमा अस्त हो रहा है और उसके बाद जो कुछ होनेवाला है, वह तुझे नहीं देखना चाहिए।''

पहाड़ियों के पीछे चाँद डूब रहा था तथा दीवारों और प्राचीरों पर एक-दूसरे से चिपके हुए डर से काँपते लाइन से

बैठे बंदर फटी-पुरानी बोरियों में रखे कबाड़ जैसे नजर आ रहे थे। भालू नीचे उतरकर तालाब में पानी पीने के लिए गया और बघीरा अपने बालों को सँवारने लगा; 'का' अपनी मस्त चाल से छत के बीचोबीच पहुँचा और अपने जबड़ों को एक साथ लाकर कड़कती-गूँजती आवाज में बंदरों को संबोधित किया जिससे वे सब उसकी ओर देखने लगे।

''चाँद डूब रहा है,'' उसने कहा। ''क्या अब भी इतना उजाला है कि सब देख सकें?''

दीवारों से रुआँसी सी आवाजें आईं, जैसे वृक्ष-शिखरों पर पत्तियों में से हवा के गुजरने से आती हैं—''हम देख सकते हैं, 'का'।''

''बहुत ठीक। अब नाच शुरू होता है—'का' की भूख का नाच। चुपचाप बैठो और तमाशा देखो।''

अपने सिर को दाएँ-बाएँ घुमाते हुए वह एक बड़े से घेरे में दो या तीन बार घूमा। फिर उसने अपने बदन से छल्ले और '8' का अंक बनाना शुरू किया; फिर त्रिभुज, चतुर्भुज और पाँच-कोणीय आकृतियाँ बनाईं और फिर अपनी कुंडलियों से एक चबूतरा जैसा बना दिया—और यह सब उसने बिना विश्राम किए, बिना किसी जल्दबाजी के और धीमी आवाज में गुनगुनाते हुए किया। अँधेरा गहराता जा रहा था और अंतत: उसकी बदलती आकृतियाँ लुप्त हो गईं, परंतु वहाँ मौजूद प्राणी उसकी केंचुल के सरसराने की आवाज सुन सकते थे।

भालू और बघीरा पत्थर की तरह खामोश खड़े थे, जैसे उनके गले में कुछ अटक गया हो; उनके गले के आसपास बाल खड़े हो गए थे; मोगली अचरज से यह सब देखता रहा।

''बंदरो,'' आखिर में 'का' की आवाज आई, ''क्या तुम मेरे आदेश के बिना अपना हाथ या पैर हिला सकते हो?बोलो!''

''तुम्हारे हुकुम के बिना हम अपना हाथ या पैर नहीं हिला सकते ओ 'का'।''

''ठीक है। अब सब लोग एक कदम मेरे नजदीक आएँ।''

बंदरों की पंक्तियाँ असहाय-सी एक कदम आगे बढ़ीं तथा भालू और बघीरा ने भी भारी मन से उनके साथ एक कदम आगे बढ़ाया।

''और नजदीक!'' 'का' ने फुफकारा और वे सब आगे बढ़े।

वहाँ से खिसकने का इशारा करने के लिए मोगली ने अपने दोनों हाथ भालू और बघीरा के कंधों पर रख दिए और वे दोनों शानदार जानवर चौंक पड़े, जैसे सपने से जागे हों।

''अपना हाथ मेरे कंधे पर रखे रहो,'' बघीरा ने फुसफुसाते हुए कहा, ''कहीं मुझे 'का' के पास जाना न पड़ जाए।''

''वह बूढ़ा 'का' ही है जो धूल में वृत्त बना रहा है,'' मोगली ने कहा, ''चलो, हम निकल चलें।'' दीवार के एक खाली स्थान से वे तीनों जंगल की ओर खिसक लिए।

''व्हूफ!'' जब वे शांत पेड़ों के नीचे खड़े हुए तो भालू के मुँह से निकला। ''मैं अब कभी 'का' का सहयोग नहीं लूँगा,'' और उसके सारे बदन में एक झुरझुरी सी दौड़ गई।

''हम से ज्यादा वह जानता है,'' काँपते हुए बघीरा ने कहा, ''मैं वहाँ कुछ देर और रुकता तो सीधे उसके गले में चला गया होता।''

''चाँद दोबारा उगने से पहले इस रास्ते से बहुत से लोग गुजरेंगे,'' भालू ने कहा। ''वह मजे से शिकार करेगा—अपने ही ढंग से।''

''मगर उस सब का मतलब क्या था?'' मोगली ने पूछा, जो एक अजगर की सनकों के बारे में कुछ नहीं जानता

था। ''मैंने एक विशाल साँप को अँधेरा होने तक बेहूदा घेरे बनाने के सिवाय कुछ नहीं करते देखा। उसकी नाक कितनी सूजी हुई लग रही थी। हो-हो।''

''मोगली,'' बघीरा ने उसे झिड़कते हुए कहा, ''उसकी नाक तेरे कारण सूजी हुई थी जैसे मेरे कान, कंधे और पंजे। बंदरों द्वारा काटी हुई भालू की गरदन और कंधे तेरे कारण सूजे हुए थे। आनेवाले कई दिनों तक न तो भालू और न बघीरा ठीक से शिकार कर पाएँगे।''

''कोई बात नहीं,'' भालू ने कहा, ''हमें इस बात की खुशी है कि बाल-मानव फिर हमारे साथ है।''

''यह सच है परंतु उस समय के मामले में, जो बढ़िया शिकार करने में बिताया जा सकता था, जख्मों और बालों—मेरी गरदन के आसपास आधे बाल नोच लिए गए हैं—और अंत में अपनी इज्जत के मामले में हमने भारी कीमत चुकाई है, क्योंकि यह याद रखना मोगली कि मैं, काला चीता, 'का' से संरक्षण माँगने के लिए मजबूर हो गया था और भालू और मैं दोनों उस 'भूख नृत्य' के समय छोटे पंछियों की तरह बेवकूफ बन गए थे। यह सब, बाल-मानव, तुम्हारे बंदरों के साथ खेलने के कारण हुआ।''

''सच, यह सच है,'' मोगली ने दु:खी होते हुए कहा, ''मैं एक बुरा बाल-मानव हूँ और मेरा पेट इस वक्त बहुत उदास है।''

''हाँ तो भालू जंगल का कानून इस बारे में क्या कहता है?''

भालू मोगली को और अधिक परेशानी में नहीं डालना चाहता था, परंतु वह कानून को भी तोड़-मरोड़ नहीं सकता था, इसलिए उसने बुदबुदाते हुए कहा, ''दु:ख प्रकट करना सजा से नहीं बचा सकता। मगर याद रखो बघीरा, वह अभी बहुत छोटा है।''

''मैं याद रखूँगा। परंतु इसने शरारत की है और इसे थप्पड़ पड़ना चाहिए। मोगली, तुझे कुछ कहना है?''

''कुछ नहीं। मैंने गलती की। भालू और तुम दोनों ही घायल हो। मैं सजा के लायक हूँ।''

बघीरा ने एक चीते के मान से हलके हाथों से उसे आधा दर्जन चपत लगाई (जो उसके अपने बच्चे को शायद नींद से जगा भी न पातीं), परंतु सात साल के एक बच्चे के लिए वह उतनी ही कठोर सजा थी, जिससे वे दोनों उसे बचाना चाहते थे। यह सब होने के बाद मोगली को छींक आ गई और एक शब्द भी बोले बिना उसने खुद को सँभाला।

''अब,'' बघीरा ने कहा, ''उछलकर मेरी पीठ पर बैठ जाओ, छोटे भाई! हम घर चलेंगे।''

जंगल के कानून की एक खूबी यह है कि सजा सारा हिसाब चुकता कर देती है। बाद में कोई गिले-शिकवे नहीं होते।

मोगली ने अपना सिर बघीरा की पीठ पर रख दिया और उसे इतनी गहरी नींद आई कि जब उसे अपनी गृह-माँद में उतारा गया तब भी वह सो रहा था।

बंदरों का सड़क-गान

एक उछाले गए तोरण में
थे हम चले आधी दूर तक
ईर्ष्यालु चाँद के!
हमारे कूदते-फाँदते जत्थों से
क्या तुम्हें ईर्ष्या नहीं होती?

क्या तुममें यह कामना नहीं कि
तुम्हारे अतिरिक्त हाथ होते?
यदि तुम्हारी पूँछ वक्र होती
कामदेव के बाण की तरह
तो क्या तुम्हें अच्छा नहीं लगता?
अब तुम कुपित हो पर
गम न करो मेरे भाई, कि
तुम्हारी पूँछ पीछे लटकती चलती है!
यहाँ पेड़ों की शाखाओं में
हम कतारबद्ध बैठे हैं,
सुंदर चीजों के बारे में सोचते हुए,
उन कारनामों की कल्पना करते हुए
जो आला दिमाग की उपज,
श्रेष्ठ और मंगलकारी हों।
हम पूरे कर लेते हैं
बस एक या दो मिनट में,
खयालों में ही! वाह!
ओह, हम भूल गए थे, पर
गम न कर मेरे भाई,
कि तुम्हारी पूँछ
पीछे लटकती चलती है!
बोली हमने सबकी सुनी है
चमगादड़ की, जानवर की और पक्षी की,
उन सबके घालमेल से हमने
अपनी एक भाषा बना डाली!
बहुत खूब! बहुत खूब! वाह!
अब हम बात करते हैं
हू-ब-हू आदमी की जुबां में!
चलो हम यही समझ लें...
गम न कर मेरे भाई,
तेरी पूँछ जरूर
पीछे लटकती चलती है!
यही तो बंदरों की फितरत है।
फिर पूरे जंगल में धूम मचाती
इस ऊधमी मंडली में शामिल हों,

वे जंगली अंगूर के पेड़ों पर
और कूड़े के ढेर पर भी
शोर मचाते, फुदकते हैं
मगर यह तय है, तय है कि
हम कुछ अनोखा करने जा रहे हैं।

❑

टाइगर! टाइगर!

बहुत दिनों से
मस्त शिकार का रोमांच गायब है
ओ बहादुर शिकारी!
इंतजार लंबा और
पस्त कर देनेवाला था,
उस शिकार का क्या हुआ
जिसके पीछे तुम गए थे?
भाई, वह तो अब भी
मौज कर रहा है!
कहाँ खो गई वो
तुम्हारी शक्ति और कीर्ति?
मेरी भुजाओं में अब
वो ताब कहाँ मेरे भाई?
और तुम्हें भी इतनी जल्दी क्या है?
मैं जाता हूँ अपने आखिरी मुकाम पर—मरने!

अब हमें पहली कहानी की ओर वापस लौटना होगा। जब कौंसिल रॉक पर दल के साथ हुए झगड़े के बाद मोगली भेड़िए की माँद को छोड़कर नीचे खेतों की ओर चला गया था, जहाँ गाँव के लोग रहते थे, परंतु वह वहाँ रुका नहीं, क्योंकि वह जगह जंगल के बहुत नजदीक था और वह जानता था कि उसने कौंसिल में कम-से-कम एक खतरनाक दुश्मन बना लिया था। इसलिए वह घाटी से नीचे की ओर जानेवाले दुर्गम मार्ग पर पहले दौड़कर और फिर स्थिर तेज चाल से लगभग बीस मील चला, जब तक कि वह एक ऐसे प्रदेश में नहीं पहुँच गया, जिसे वह नहीं जानता था। घाटी के अंत में एक बड़ा मैदानी इलाका था, जहाँ जगह-जगह चट्टानें थीं और बीच में कई घाटियाँ भी। उसके एक छोर पर एक छोटा सा गाँव था और घना जंगल था, जो एकाएक ही एक चारागाह पर खत्म हो जाता था, जैसे कि एक फावड़े से दोनों को अलग कर दिया गया हो। पूरे मैदान पर गाय-भैंसें चर रही थीं और उन पशुओं की रखवाली कर रहे छोटे लड़कों ने मोगली को देखा तो वे चिल्लाते हुए भाग खड़े हुए और कुछ पीले से लावारिस कुत्ते, जो भारत के हर गाँव के आसपास मँडराते रहते हैं, भौंकने लगे। मोगली चलता रहा, क्योंकि उसे भूख लगी थी। जब वह गाँव के गेट तक पहुँचा तो उसने देखा कि सूरज ढलने के बाद जो बड़ी सी काँटेदार बाड़ गेट के आगे लगा दी जाती थी, रास्ता रोके खड़ी थी।

''उफ्!'' उसने कहा, क्योंकि रातों को भोजन की तलाश में घूमते हुए उसने ऐसे कई अवरोध देखे थे। ''तो यहाँ भी आदमी जंगली जीवों से डरते हैं?'' वह गेट के पास बैठ गया और जब एक आदमी गाँव से बाहर आया तो वह खड़ा हो गया और यह बताने के लिए कि वह खाने के लिए कुछ चाहता था, उसने अपना मुँह खोलकर हाथों से इशारा किया। उस आदमी ने उसे घूरकर देखा और गाँव के पुजारी को पुकारता हुआ ऊपर गाँव की एक गली में घुस गया। सफेद धोती पहने और माथे पर लाल-पीला टीका लगाए पुजारी एक लंबा-चौड़ा मोटा आदमी था। पुजारी गेट पर आया; उसके साथ कम-से-कम सौ लोग थे जो मोगली को घूरते, बतियाते, चिल्लाते हुए उसी की ओर इशारे कर रहे थे।

‘‘इन आदमियों में कोई तहजीब नहीं है,’’ मोगली ने अपने आप से कहा, ‘‘केवल भूरे बंदर इनकी तरह बरताव करते हैं।’’ उसने अपने लंबे बाल पीछे कर लिए और भवें सिकोड़कर भीड़ की ओर देखा।

‘‘डरने की क्या बात है?’’ पुजारी ने कहा, ‘‘उसकी बाँहों और पैरों पर बने निशान देखो। ये भेड़ियों के काटने के निशान हैं। यह एक भेड़िए का बच्चा ही है, जो जंगल से भाग आया है।’’

बेशक, साथ खेलते हुए भेड़ियों के बच्चों ने मोगली के बदन में मंशा से अधिक दाँत गड़ा दिए थे और उसकी पूरी बाजुओं और पैरों में सफेद निशान थे। परंतु उन्हें ‘काटने’ के निशान कहनेवाला वह दुनिया का आखिरी व्यक्ति होता, क्योंकि वह जानता था कि असली काटना क्या होता है।

‘‘अरे, अरे!’’ दो या तीन औरतें एक साथ बोल पड़ीं, ‘‘बेचारे बच्चे को भेड़ियों ने काट लिया है! कितना सुंदर लड़का है। जलते अंगारों की तरह उसकी आँखें हैं। मेरी इज्जत की कसम, मेसुआ, यह तेरे उस लड़के से अलग नहीं है, जिसे बाघ उठा ले गया था।’’

‘‘जरा मैं देखूँ,’’ अपनी कलाइयों और टखनों पर ताँबे की भारी चूड़ियाँ पहने एक औरत ने कहा और अपनी हथेली से आँखों पर छाया करते हुए उसने मोगली को गौर से देखा। ‘‘सचमुच यह अलग नहीं है। पहले से दुबला हो गया है पर यह हू-ब-हू मेरे बेटे जैसा है।’’

पुजारी एक चालाक आदमी था और जानता था कि मेसुआ गाँव के सबसे अमीर किसान की पत्नी थी। इसलिए उसने एक मिनट आकाश की ओर देखा और गंभीरता से बोला, ‘‘जंगल ने जो कुछ लिया था, जंगल ने ही उसे वापस लौटा दिया है। इस लड़के को अपने घर में रख ले बहन और उस पुजारी को दान-दक्षिणा देना मत भूलना जो मनुष्यों के जीवन को इतनी दूर तक देख सकता है।’’

‘‘उस बैल की कसम, जिसकी कीमत पर मैं जंगल में आया,’’ मोगली ने अपने आप से कहा, ‘‘लेकिन ये सब बातें मुझे लेकर एक और दल की सौदेबाजी जैसी हैं। ठीक है, अगर मैं एक आदमी हूँ तो मुझे एक आदमी ही बनकर दिखाना चाहिए।’’

भीड़ छँट गई और उस औरत ने इशारे से मोगली को अपनी झोंपड़ी की ओर चलने के लिए कहा। झोंपड़ी में एक लाल रंग का वार्निश किया हुआ पलंग, मिट्टी से बनी अनाज की खत्ती, जिस पर अजीब से उभरे हुए पैटर्न बने हुए थे, खाना बनाने के लिए ताँबे की आधा दर्जन पतीलियाँ, एक छोटे से आले में किसी हिंदू देवता की मूर्ति और दीवार पर एक असली आईना, जैसा हाट-बाजारों में मिलता है, लटका था।

उस स्त्री ने एक लंबे से गिलास में दूध और कुछ रोटियाँ दीं और फिर उसने अपना हाथ उसके सिर पर रखा और उसकी आँखों में देखा; क्योंकि शायद उसने सोचा कि वह उसका असली बेटा हो सकता है, जो जंगल से लौट आया हो, जहाँ उसे बाघ ले गया था। इसलिए उसने पुकारा, ‘‘नाथू, ओ नाथू!’’ मोगली ने यह नहीं जताया कि वह उस नाम से परिचित था। ‘‘क्या तुझे वह दिन याद नहीं जब मैंने तुझे नए जूते लाकर दिए थे?’’ उसने उसके पैर को छूकर देखा और वह लगभग सींग की तरह कड़ा था। ‘‘नहीं,’’ उसने दु:खी होते हुए कहा, ‘‘इन पैरों ने कभी जूते नहीं पहने हैं, पर तू मेरे नाथू की तरह ही है और तू ही मेरा बेटा रहेगा।’’

मोगली असहज महसूस कर रहा था, क्योंकि इससे पहले वह कभी किसी छत के नीचे नहीं रहा था। परंतु जब उसने घास-फूस से बनी दीवारें और छत देखीं तो उसे लगा कि जब कभी उसका मन यहाँ से जाने का हुआ तो वह उन्हें कभी भी तोड़ सकता है; उसने यह भी देखा कि खिड़की में कोई सिटकिनी भी नहीं है। ‘‘वह आदमी ही क्या,’’ अंत में उसने अपने आप से कहा, ‘‘अगर वह आदमी की भाषा ही न समझे? अब यहाँ मैं उतना ही मूर्ख और बेजुबान हूँ जैसे कि एक आदमी जंगल में हमारे साथ होगा। मुझे उनकी भाषा बोलनी होगी।’’

जब वह भेड़ियों के साथ था तो यह केवल मजा लेने के लिए ही नहीं था कि उसने हिरनों और सुअरों की आवाज की नकल करना सीख लिया था। इसलिए, जैसे ही मेसुआ किसी शब्द का उच्चारण करती, मोगली लगभग हू-ब-हू उसकी नकल करता। दिन ढलने तक उसने झोंपड़ी की कई चीजों के नाम सीख लिए थे।

सोने के समय कुछ कठिनाई आई, क्योंकि मोगली किसी ऐसी चीज के भीतर नहीं सो सकता था जो एक चीते के पिंजरे की तरह दिखती हो, जैसी वह झोंपड़ी थी और जब वे लोग दरवाजा बंद कर देते थे तो वह खिड़की के रास्ते बाहर निकल जाता था। ''उसको अपनी मर्जी माफिक करने दो,'' मेसुआ के पति ने कहा, ''याद रखो, वह अपने जीवन में कभी बिस्तर पर नहीं सोया है। अगर वह सचमुच हमारे बेटे की जगह भेजा गया है तो वह नहीं भागेगा।''

इसलिए मोगली ने खेत के किनारे दूर तक उगी साफ घास पर अपने हाथ-पैर फैला लिए, परंतु इससे पहले कि उसकी आँखें बंद होतीं, स्लेटी रंग की एक नरम नाक ने उसकी ठुड्डी के नीचे गले को स्पर्श किया।

''फ्यू,'' भूरे भाई ने कहा (वह ममा भेड़िया का सबसे बड़ा बेटा था), ''बीस मील चलकर तुम्हें पाया पर मजा नहीं आया। तुम्हारे बदन से लकड़ी के धुएँ और मवेशियों की गंध आ रही है, जैसी आदमियों के बदन से आती है। जागो, छोटे भाई, मैं एक खबर लाया हूँ।''

''जंगल में सब ठीक तो हैं न?'' उसे अपनी बाँहों में भरते हुए मोगली ने पूछा।

''जो भेड़िए लाल फूलों से जल गए थे, उनके सिवाय सब ठीक हैं। अब सुनो! शेरखान शिकार के लिए कहीं दूर चला गया है। जब तक कि उसके बाल फिर से नहीं उग आते, क्योंकि वह बुरी तरह झुलस गया है। उसने कसम खाई है कि जब वह लौटेगा तो तुम्हारी हड्डियाँ बाणगंगा में बहा देगा।''

''इस पर मैं दो शब्द कहूँगा। मैंने भी एक छोटा सा वादा किया है। लेकिन खबर मिलना हमेशा ही अच्छा होता है। आज रात मैं बहुत थका हुआ हूँ—कई चीजों से बेहद थका हुआ, मेरे भाई—मगर ऐसे ही खबरें देते रहना।''

''तुम भूलोगे तो नहीं कि तुम एक भेड़िया हो? क्या आदमी तुम्हें याद रखने देंगे?'' भेड़िया भाई ने आतुरता से पूछा।

''कभी नहीं। मैं हमेशा याद रखूँगा कि मैं तुझे और माँद के सभी लोगों को प्यार करता हूँ। लेकिन मैं यह भी याद रखूँगा कि मैं भेड़ियों की बिरादरी से निकाल दिया गया था।''

''तुम एक और बिरादरी से भी निकाले जा सकते हो। आदमी आखिर आदमी हैं छोटे भाई! उनकी बातें कुएँ के मेंढकों की तरह होती हैं। मैं जब दोबारा यहाँ आऊँगा तब चारागाह के किनारे बाँस के पेड़ों के बीच तुम्हारा इंतजार करूँगा।''

उस रात के बाद अगले तीन महीनों तक मोगली इनसानी तौर-तरीके और रिवाजों को सीखने में इतना व्यस्त रहा कि वह शायद ही कभी गाँव के गेट से बाहर गया हो। पहले तो उसे अपने बदन पर एक कपड़ा लपेटना पड़ा जो उसे बड़ा ही अटपटा लगता था; फिर उसे पैसों के बारे में सीखना पड़ा जो उसे बिलकुल ही समझ नहीं आता था; तीसरा था खेतीबाड़ी का काम, जिसकी उपयोगिता उसे नजर नहीं आती थी। फिर गाँव के छोटे बच्चे उसे बहुत नाराज कर देते। खुशकिस्मती से जंगल के कानून ने उसे सब्र करना सिखाया था, क्योंकि जंगल में आपका जीवन और भोजन सब्र पर निर्भर करता है। परंतु जब वे उसका मजाक उड़ाते कि वह न तो उनकी तरह खेल सकता था और न पतंग उड़ा सकता था या किसी शब्द का उसने गलत उच्चारण कर दिया हो तो केवल यह बोध, कि छोटे-छोटे नंगे बच्चों को मार देना खेल भावना के विपरीत है, उसे रोक लेता था वरना वह उनके टुकड़े कर देता।

अपनी शक्ति के बारे में वह बिलकुल ही नहीं जानता था। जंगल में वह जानता था कि दूसरे जानवरों की तुलना में वह कमजोर था, परंतु यहाँ गाँव में लोग कहते थे कि वह एक साँड़ की तरह ताकतवर था। मोगली को उन

भिन्नताओं का जरा भी अंदाजा नहीं था, जो आदमी और आदमी के बीच में जाति पैदा करती थी। जब कुम्हार का गधा गीली मिट्टी से भरे गड्ढे में गिर जाता, मोगली उसे बेझिझक बाहर निकाल देता और कन्हीवाड़ा के बाजार में ले जाए जाने से पहले मिट्टी के बरतनों को सलीके से जमा देता। लोगों को इस बात से बड़ा झटका लगता था, क्योंकि कुम्हार एक नीची जाति का आदमी था और गधा तो उससे भी गया-गुजरा। जब पुजारी ने उसे डाँटा तो उसने उसे भी गधे पर बिठाने की धमकी दी। पुजारी ने मेसुआ के पति को कहा कि जितनी जल्दी हो सके मोगली को काम पर लगाना होगा। इसके बाद ग्राम प्रधान ने मोगली से कहा कि अगले दिन उसे भैंसों के साथ जाना है और जब वे चर रही हों, उनका ध्यान रखना है। इस आदेश से मोगली से ज्यादा और कोई खुश न था; और उस रात, क्योंकि एक तरह से वह गाँव का सेवक बना दिया गया था, वह एक सभा-स्थल पर चला गया, जहाँ बरगद के एक विशाल वृक्ष के नीचे बने पक्के चबूतरे पर हर शाम एक बैठक रखी जाती थी। वह गाँव की चौपाल थी जहाँ ग्राम प्रधान, चौकीदार, नाई, जो गाँव के हर एक व्यक्ति की खबर रखता था और गाँव का शिकारी बूढ़ा बलदेव, जिसके पास दोनाली बंदूक थी, बैठते और धुआँ उड़ाते। पेड़ की ऊपरी शाखाओं पर बंदर बैठते और बतियाते; चबूतरे के नीचे एक छेद था जिसमें एक नाग रहता था; हर रात उसे कटोरे में दूध दिया जाता था, क्योंकि वह पवित्र था। ये और दूसरे लोग पेड़ के इर्द-गिर्द बैठते और एक बड़ा सा हुक्का गुड़गुड़ाते हुए देर रात तक बातें करते। वे देवताओं, इनसानों और भूतों की अनोखी कहानियाँ सुनाते; जंगली जानवरों के तौर-तरीकों पर बलदेव तब तक इनसे भी अधिक कहानियाँ सुनाता, जब तक कि घेरे के बाहर बैठे बच्चों की आँखें विस्मय और रोमांच से चौड़ी नहीं हो जातीं। अधिकांश कहानियाँ जानवरों के बारे में होती थीं, क्योंकि जंगल गाँव से ही शुरू हो जाता था। हिरन और जंगली सुअर उनकी फसलें चट कर जाते और कभी-कभार गाँव के गेट से दिखाई दे, इतनी दूरी से बाघ किसी आदमी को खींच ले जाता था।

मोगली, जो स्वाभाविक रूप से इस विषय के बारे में जानता था, को तब हँसी छिपाने के लिए अपना चेहरा ढँक लेना पड़ता था, जब बंदूक अपने घुटनों पर रखे बलदेव एक के बाद एक अनोखी कहानी सुनाता तो हँसी रोकने से मोगली के कंधे हिलने लगते।

बलदेव बता रहा था कि वह बाघ, जो मेसुआ का बेटा उठा ले गया था, बाघ के रूप में एक भूत था और उसके शरीर में उस दुष्ट महाजन की आत्मा थी, जो कुछ साल पहले मर गया था। ''मैं जानता हूँ कि यह सच है,'' उसने कहा, ''क्योंकि उस दंगे, जिसमें उसके बही-खाते जला दिए गए थे, में घायल होने के बाद पूरन दास हमेशा लँगड़ाकर चलता था और यह बाघ, जिसकी मैं बात कर रहा हूँ, भी लँगड़ाता था, क्योंकि उसके पैरों के निशान असमान थे।''

''सच है, सच है, यह बात सच ही होगी,'' सहमति में एक साथ सिर हिलाते सफेद दाढ़ीवाले कुछ बूढ़े कहते।

''ये सभी कहानियाँ क्या इसी तरह मनगढ़ंत और बचकानी हैं?'' मोगली ने कहा, ''वह बाघ लँगड़ाता है, क्योंकि वह जन्म से लँगड़ा है, यह बात सभी जानते हैं। एक ऐसे जानवर में, जिसमें कभी एक सियार की भी हिम्मत न रही हो, किसी महाजन की आत्मा होने की बात बिलकुल बचकानी है।''

एक पल के लिए बलदेव अवाक् रह गया और ग्राम प्रधान ने उसे घूरकर देखा।

''ओहो! तो यह जंगल का छोकरा बोला?'' बलदेव ने कहा, ''अगर तू इतना ही होशियार है तो उसकी खाल यहाँ कान्हीवाड़ा में ले आ, क्योंकि सरकार ने उसे मारनेवाले के लिए सौ रुपए का इनाम रखा है। बेहतर होगा कि जब बड़े बात कर रहे हों तो बीच में मत बोलो।''

वहाँ से जाने के लिए मोगली उठा। ''सारी शाम मैं उसकी बातें सुनता रहा,'' जाते-जाते उसने सिर घुमाकर कहा,

''एक या दो बातों को छोड़कर उस जंगल के बारे में बलदेव ने एक शब्द भी सच नहीं बोला है, जो उसके गाँव से लगा ही हुआ है। फिर मैं उन भूत-प्रेतों और देवी-देवताओं, जिन्हें वह कहता है कि उसने देखा है, की कहानियों पर कैसे विश्वास कर सकता हूँ?''

''अब सचमुच वक्त आ गया है कि इस लड़के को गाय-भैंसें चराने के लिए भेज दिया जाए,'' गाँव प्रधान ने कहा, जबकि मोगली की धृष्टता पर बलदेव चिढ़कर हुक्के से लंबे-लंबे कश खींचने लगा।

भारत के अधिकांश गाँवों में यह चलन है कि जल्दी सुबह कुछ लड़कों को गाय-भैंसों को चराने के लिए भेज दिया जाता है, जो देर शाम उन्हें वापस ले आते हैं। वही गाय-भैंसें जो एक अंग्रेज को अपने पैरों तले कुचल डालें, उन बच्चों के मारने, धमकाने और चिल्लाने से चुपचाप उनका कहना मानती हैं, जो मुश्किल से उनकी नाक तक पहुँचते होंगे। जब तक बच्चे उनके साथ होते हैं, वे सुरक्षित रहती हैं, क्योंकि तब तक एक बाघ भी उनके झुंड पर हमला नहीं बोल सकता। परंतु यदि वे फूल तोड़ते या किसी गिरगिट का पीछा करते हुए कहीं दूर निकल जाएँ तो कभी-कभी उन्हें कोई जानवर ले जाता है। सुबह-सुबह मोगली उस विशाल भैंसे रामा की पीठ पर बैठकर गाँव की गली से गुजरता था। पीछे की ओर मुड़े हुए अपने लंबे सींगोंवाली काली भैंसें एक-एक करके बाड़े से निकलकर उसके पीछे-पीछे जातीं। मोगली ने अपने साथ के बच्चों को साफ-साफ यह बता दिया था कि उस समूह का मुखिया वह था। एक लंबे चमचमाते डंडे से वह भैंसों को मारता; उसने उनमें से एक लड़के काम्या को कह दिया था कि जब वह भैंसें चरा रहा हो, वे लोग गायों को चराएँ और अपने समूह से दूर न जाएँ।

भारतीय चारागाह पहाड़ी ढलानों पर उगी झाड़ियों और छोटे वृक्षों से भरपूर होते हैं और छोटी-छोटी घाटियों तक उनका सिलसिला जारी रहता है। इन्हीं वादियों में इधर-उधर बिखरे पशु कभी-कभी दृष्टि से ओझल हो जाते हैं। भैंसें सामान्यत: पोखरों या दलदली भागों में हलकी धूप सेंकते हुए घंटों बैठी रहती हैं। मोगली उन्हें मैदान के छोर पर, जहाँ बाणगंगा जंगल से बाहर निकलती थी, हँकालकर खुद भैंसे पर से उतर जाता और झूमता हुआ बाँसों के झुरमुट में चला जाता, जहाँ उसे अपना भेड़िया-भाई मिल जाता। ''आह!'' भेड़िया-भाई कहता, ''मैं कई दिनों तक यहाँ तुम्हारा इंतजार करता रहा। मवेशी चराने के इस काम का मतलब क्या है?''

''यह एक आदेश है,'' मोगली ने कहा, ''कुछ दिनों के लिए मैं गाँव का चरवाहा बन गया हूँ। शेरखान की क्या खबर है?''

''वह इसी इलाके में वापस आ गया है और काफी समय से तुम्हारा इंतजार कर रहा है। अभी वह यहाँ से चला गया है, क्योंकि यहाँ शिकार मुश्किल से मिलता है। मगर तुम्हें मारने का उसका इरादा पक्का है।''

''बहुत अच्छे,'' मोगली ने कहा, ''जब तक वह यहाँ से दूर है, तू या चारों भाइयों में से कोई एक उस चट्टान पर बैठना, ताकि गाँव से निकलते समय मैं तुझे देख सकूँ। जब वह वापस आ जाए, तू मुझे मैदान के बीच स्थित ढाक के पेड़ के साथवाली घाटी में मिलना। हमें शेरखान का भोजन बनने की जरूरत नहीं है।''

फिर मोगली ने एक छायादार जगह देखी और अपने आसपास चरती भैंसों के बीच लेटा और सो गया। भारत में मवेशी चराना दुनिया के सबसे सुस्त कामों में से एक है। मवेशी धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए चरते हैं, फिर बड़ी देर तक बैठकर जुगाली करते हैं और धीरे से उठकर फिर चल पड़ते हैं; इस बीच वे रँभाते तक नहीं। वे केवल घुरघुराते हैं और भैंसें कभी-कभार ही कुछ बोलती हैं। एक के बाद एक वे कीचड़ भरे पानी में इतनी भीतर चली जाती हैं कि पानी की सतह से ऊपर केवल उनकी नाक और आँखें दिखाई देती हैं और फिर वे लकड़ी के कुंदे की तरह घंटों तक वहाँ पड़ी रहती हैं। सूरज चट्टानों को आग-सा तपा देता था और चरवाहे बालकों को सिर के बहुत ऊपर एक अदृश्य चील को (कभी भी एक से ज्यादा की नहीं) सीटी सुनाई पड़ती है और वे जानते हैं कि यदि वे

मर गए या कोई गाय मर गई तो वह चील एक झपट्टे में नीचे उतर आएगी और उसे उतरता देख उससे मीलों दूर उड़ रही अगली चील उसका अनुसरण करेगी, फिर अगली और उससे अगली और उनके दम तोड़ने से कुछ पहले ही बीसियों चील-गिद्ध न जाने कहाँ से प्रकट हो जाते हैं। फिर वे सो जाते हैं फिर जागकर कुछ देर बाद फिर सो जाते, फिर सूखी घास से एक डलिया सी बनाते और उनमें टिड्डों को बंद कर देते; या दो चींटों को पकड़कर उन्हें लड़वाते; या कुछ लाल और काले जंगली दानों की माला बनाते या एक चट्टान पर धूप सेंकते गिरगिट को देखते; या किसी साँप को किसी मेंढक का शिकार करता हुआ देखते। फिर वे स्थानीय शैली के लंबे-लंबे गाने गाते और दिन अधिकांश लोगों के पूरे जीवनकाल से भी लंबा लगता। वे पुरुषों, घोड़ों और भैंसों के मिट्टी के पुतले बनाते तथा पुरुषों के हाथों में सरकंडे फँसा देते और यह कल्पना करते कि पुरुष राजा थे और दूसरे पुतले उनकी सेनाएँ या फिर उनके देवता थे, जिनकी पूजा की जानी चाहिए। फिर साँझ घिरने लगती और बच्चे पशुओं को आवाज लगाते। पशु बंदूक चलने जैसी आवाज के साथ तेजी से एक के बाद एक कीचड़ से बाहर निकलते और वे सभी मैदान में इकट्ठा होकर टिमटिमाती रोशनियोंवाले गाँव की ओर चल पड़ते।

इस तरह दिन-ब-दिन मोगली भैंसों को उनके लौटने के स्थान पर ले जाता और दिन-ब-दिन वह मैदान से डेढ़ मील ऊपर अपने भेड़िया भाई की पीठ देखता। (जो इस बात की पुष्टि करता था कि अभी शेरखान वापस नहीं लौटा है) दिन-ब-दिन वह जंगल में बिताए अपने पुराने दिनों को याद करते हुए और अपने आसपास की आवाजों को सुनते हुए घास पर लेटा रहता। अपने लँगड़े पैर के साथ बाणगंगा के जंगल में यदि शेरखान ने कुछ गफलत की होती तो मोगली ने सुबह के उस शांत विस्तार में उसकी आवाज जरूर सुनी होती।

अंत में वह दिन आया जब उसने नियत स्थान पर अपने भेड़िया भाई को देखा और वह हँसते हुए भैंसों को ढाक के वृक्ष के पास घाटी, जहाँ सुनहरे-लाल फूल खिले हुए थे, में पानी पिलाने के लिए ले गया। वहाँ भेड़िया भाई बैठा हुआ था—उसकी पीठ का एक-एक रोंआ खड़ा था।

''वह एक महीने से छिपा हुआ है, ताकि तुम असावधान हो जाओ। पिछली रात ही तबाकी के साथ तुम्हारा पीछा करते हुए उसने इस पर्वत श्रृंखला को पार किया है,'' भेड़िया भाई ने हाँफते हुए कहा।

मोगली की भौहें तन गईं, ''मैं शेरखान से नहीं डरता, लेकिन तबाकी बहुत चालाक है।''

''डरने की जरूरत नहीं है,'' अपने होंठों को चाटते हुए भेड़िया भाई बोला, ''आज तड़के ही मैं तबाकी से मिला था। अब वह अपनी सारी चतुराई चीलों को बता रहा होगा मगर इससे पहले कि मैं उसकी कमर तोड़ देता, उसने मुझे सबकुछ बता दिया। शेरखान की योजना आज शाम गाँव के गेट पर तुम्हारा इंतजार करने की है—सिर्फ तुम्हारा इंतजार! अभी वह बाणगंगा की विशाल सूखी घाटी में आराम कर रहा होगा।''

''आज उसने कुछ खाया भी है या वह खाली पेट शिकार करता है?'' मोगली ने पूछा, क्योंकि इस सवाल के जवाब पर उसकी जिंदगी और मौत टिकी हुई थी।

''उसने सुबह-सुबह ही एक सुअर को मारा है और पानी भी पिया है। याद रखना, शेरखान कभी उपवास नहीं कर सकता—बदला लेने के लिए भी नहीं।''

''ओह! मूर्ख, मूर्ख! क्या गधे का बच्चा है! खा लिया और पानी भी पी लिया और वह समझता है कि उसकी नींद पूरी होने तक मैं उसका इंतजार करूँगा! अब यह तो बताओ कि वह कहाँ पसरा हुआ है। हम दस भेड़िए भी होते तो उसे खींच कर ले आते। जब तक इन भैंसों को उसकी भनक न लगे वे उस पर हमला नहीं करेंगे और फिर मैं उनकी भाषा भी नहीं जानता। क्या तुम्हें उसके पदचिह्नों का पता है, ताकि वे उन्हें सूँघकर उसका पीछा कर सकें?''

''उनसे बचने के लिए वह बाणगंगा में बहुत दूर से तैर कर आया था,'' भेड़िया भाई ने कहा।

''मैं जानता हूँ, यह तरीका उसे तबाकी ने ही बताया होगा। वह खुद तो कभी सोच भी नहीं सकता था।'' अपने मुँह में उँगली डाले मोगली सोचने की मुद्रा में खड़ा था। ''बाणगंगा की विशाल घाटी मैदान में जिस जगह खुलती है वह यहाँ से आधा मील दूर भी नहीं होगी। मैं भैंसों को जंगल के रास्ते घाटी के मुहाने पर ले जा सकता हूँ और फिर वहाँ से नीचे की ओर हल्ला बोल दूँगा—मगर वह घाटी के छोर से खिसक लेगा। हमें वह रास्ता भी बंद करना होगा। भाई, क्या तुम मेरे लिए गाय-भैंसों को दो समूहों में बाँट सकते हो?''

''मैं तो शायद नहीं कर पाऊँगा मगर मैं एक होशियार मददगार को साथ लाया हूँ।'' भेड़िया भाई उछलकर कुछ दूर गया और एक गड्ढे में उतर गया। गड्ढे से एक बड़ा सा सिर ऊपर आया, जिसे मोगली अच्छी तरह से जानता था और वहाँ की गरम हवा जंगल की सबसे उदास पुकार से भर गई—भरी दुपहरी में शिकार की तलाश में एक भेड़िए की गुर्राहट।

''अकेला!अकेला!'' तालियाँ बजाते हुए मोगली बोला, ''मुझे मालूम होना चाहिए था कि तुम मुझे नहीं भूलोगे। हमें एक बड़ा काम करना है। इन गाय-भैंसों के झुंड को दो हिस्सों में बाँट दो। अकेला! गाय और बछड़ों को अलग रखो और बैलों और भैंसों को अलग।''

एक वक्र सा बनाते हुए दोनों भेड़िए झुंड के भीतर-बाहर होते रहे और हक्के-बक्के पशु चिंघाड़ते हुए अपने स्वाभाविक समूहों में बँट गए। एक समूह में मैदान के बीच अपने बछड़ों के साथ गाय और भैंसे खड़ी हो गईं और गुस्से से भेड़ियों की ओर देखती रहीं। यदि उनमें से एक भी रुककर उनके निशाने पर आ जाता तो वे उसका पेट फाड़ देतीं। दूसरे समूह में बैल और भैंसे थे, जो पैर पटककर गुस्सा जता रहे थे, परंतु वे काफी कम खतरनाक थे, क्योंकि बछड़ों की रक्षा उन्हें नहीं करनी थी। छह आदमी मिलकर भी उस झुँड को इतने सलीके से नहीं बाँट सकते थे।

''अब क्या हुक्म है?'' अकेला हाँफते हुए बोला, ''वे फिर से मिलने की कोशिश कर रहे हैं।''

मोगली धीरे से रामा भैंसे की पीठ पर सवार हो गया। ''बैलों और भैंसों को बाईं तरफ सँभाल दो, अकेला! और भाई, जब हम चले जाएँ, गायों को एक साथ रखकर उन्हें घाटी की तलहटी पर ले आना।''

''कितनी दूर ले जाऊँ?'' भेड़िया भाई ने हाँफते हुए पूछा।

''उतनी ऊँची जगह तक, जहाँ से शेरखान छलाँग न लगा सके,'' मोगली चिल्लाया, ''जब तक हम नीचे न आ जाएँ, उन्हें वहीं रोके रखना।'' अकेला के भौंकने से बैल-भैंसे आगे और भेड़िया भाई गायों के आगे खड़ा हो गया। वे उसे मारने के लिए लपकीं और वह उनसे आगे-आगे घाटी की तलहटी की ओर भागा जबकि अकेला ने बैलों, भैंसों को बाईं ओर दूर तक हँकाल दिया।

''बहुत अच्छे! एक घुड़की और और वो ठीक से दौड़ेंगे। मगर अब ध्यान से, अकेला! बहुत ज्यादा भौंके तो भैंसे, बैल पलटकर हमला कर सकते हैं। हू जा! काले हिरनों को घेरने से ज्यादा मुश्किल यह काम है। क्या तुम कभी सोच सकते थे कि ये प्राणी इतनी तेज दौड़ सकते हैं?'' मोगली ने पूछा।

''अपने समय में मैंने उनका भी शिकार किया है,'' उड़ती धूल में मुश्किल से साँस लेते हुए अकेला ने कहा, ''क्या मैं उन्हें जंगल के भीतर खदेड़ दूँ?''

''हाँ! उन्हें तेजी से मोड़ दो। रामा गुस्से से पागल हो रहा है। काश, मैं उससे कह सकता कि आज मैं उससे क्या चाहता हूँ।''

उस बार बैल-भैंसे दाईं तरफ मोड़ दिए गए और वे एक घनी झाड़ी से जा टकराए। दूसरे पशुओं के साथ दूसरे

चरवाहे बच्चे, जो आधे मील दूर से यह सब देख रहे थे, सिर पर पैर रखकर गाँव की ओर भागे और उन्होंने गाँव के लोगों को बताया कि भैंसें पगलाकर भाग गए हैं।

परंतु, मोगली की योजना सीधी और सरल थी। वह बस इतना करना चाहता था कि मवेशियों के साथ पहाड़ी रास्ते से घाटी के मुहाने पर पहुँचे और फिर वहाँ से बैलों, भैंसों को धड़धड़ाते हुए नीचे उतारे और शेरखान को भैंसों और गायों के बीच में लाकर उसे घबराहट में डाल दें, क्योंकि वह जानता था कि भरपेट खाने और पीने के बाद वह न तो हमला करने की स्थिति में था और न घाटी की चढ़ाई चढ़कर दूसरी ओर निकल भागने की। भैंसों को शांत करने के लिए वह अब उन्हें पुचकार रहा था और अकेला उनसे बहुत पीछे चल रहा था। पीछे रह गए मवेशियों की चाल तेज करने के लिए वह कभी-कभार भौंक देता था। उन्होंने बहुत लंबा चक्कर लिया था, क्योंकि वे घाटी के बहुत पास रहकर शेरखान को सावधान नहीं करना चाहते थे। अंत में, मोगली ने घाटी ने मुहाने पर घास की एक पट्टी पर चकित पशुओं को इकट्ठा किया जो सीधे नीचे की ओर जाती थी। उस ऊँचाई से आप वृक्ष-शिखरों से नीचे मैदान को देख सकते थे; परंतु मोगली जिस चीज को देख रहा था वह थी घाटी की दोनों भुजाएँ और उसके लिए यह बड़े संतोष की बात थी कि दोनों भुजाओं का ढलान लगभग सीधा था। उन पर उगी झाड़ियाँ और बेलें किसी ऐसे बाघ को यह अवसर नहीं देती थीं कि वह वहाँ से निकल भागे।

''उनको साँस लेने दो अकेला,'' हाथ उठाकर उसने कहा, ''उन्हें अब तक उसकी गंध नहीं आई है! उन्हें साँस लेने दो। अब शेरखान को पता चलेगा कि सिकंदर कौन है। वह अब हमारे जाल में है।''

अपनी गोल हथेली को मुँह के पास ले जाकर वह घाटी के नीचे की ओर चिल्लाया—वह लगभग एक सुरंग में चिल्लाने जैसा ही था—और उसकी गूँज चट्टानों पर से होती हुई पूरी घाटी में फैल गई।

इससे बहुत समय बाद एक भरपेट खाए बाघ, जो अभी-अभी नींद से जागा हो, की उनींदी गुर्राहट की गूँज वापस आई।

''किसने पुकारा?'' शेरखान ने पूछा और अपने विशाल पंख फड़फड़ाता एक शानदार मोर चीखता हुआ घाटी से बाहर की ओर भागा।

''मैं, मोगली। ओ, मवेशी-चोर, अब कौंसिल रॉक पर आने का समय हो गया है! नीचे—उन्हें जल्दी नीचे भेजो, अकेला! नीचे चलो रामा, नीचे!''

पशुओं का झुंड एक पल के लिए ढलान के छोर पर रुका, परंतु जैसे ही अकेला ने पूरी ताकत से अपना शिकारी आह्वान किया, उन्होंने बेतहाशा दौड़ना शुरू किया और उनके पैरों से धूल उड़ने लगी। एक बार दौड़ना शुरू करने के बाद रुकने की कोई गुंजाइश नहीं थी और उनके घाटी की तलहटी तक पहुँचने से पहले ही रामा को शेरखान की गंध आ गई और वह जोर से चीखा।

''हा! हा!'' उसकी पीठ पर बैठा मोगली चिल्लाया, ''अब तुझे पता चलेगा।'' काले सींगों, फड़कते नथुनों, झाग निकलते थूथनों और जलती हुई आँखों के साथ पशु बेतहाशा भाग रहे थे और एक तरफ धकेल दिए गए कमजोर भैंसे झाड़ियों में घुस गए। वह जानता था कि आगे क्या करना है—भैंसों के झुंड के भयंकर हमले के सामने कोई बाघ ठहर नहीं सकता था। शेरखान ने उनके खुरों की तेज आवाज सुनी, किसी तरह खुद को उठाया और घाटी के दोनों ओर निकलने का कोई रास्ता देखते हुए तेजी से नीचे की ओर भागा, परंतु घाटी की दीवारें सीधी थीं और दबाकर किए गए भोजन और पानी की वजह से वह लड़ने के सिवाय कुछ भी करने के लिए तैयार था, इसीलिए भागता रहा। पशुओं का झुंड जोर से रँभाते हुए उस कुंड के पानी में से छपछपाता हुआ निकला जिसे शेरखान ने अभी-अभी छोड़ा था। मोगली ने घाटी की तलहटी से रँभाने की जवाबी आवाज सुनी और शेरखान को वापस मुड़ते

हुए देखा (बाघ जानता था कि बुरी-से-बुरी स्थिति आने पर अपने बछड़ों के साथ खड़ी गायों की बजाय बैलों और भैंसों से टकराना बेहतर होगा) और तब, रामा को ठोकर लगने से वह लड़खड़ाया और चूँकि भैंसे उसके पीछे लगभग सटकर ही दौड़ रहे थे, वह सँभल नहीं पाया और सीधे दूसरे झुंड से जा टकराया। इस टक्कर से कुछ कमजोर बैल और भैंसे उछलकर दूर जा गिरे। उस टक्कर से दोनों ही झुंड गुस्से से पागल होकर एक-दूसरे को सींगें मारते और चिंघाड़ते हुए मैदान में आ गए। मोगली, जो रामा की पीठ पर से पहले ही उतर गया था, हाथ में लकड़ी लिये उसके आजू-बाजू चलता रहा और उपयुक्त समय का इंतजार करता रहा।

''अकेला! जल्दी से उन्हें अलग करो। उन्हें तितर-बितर कर दो, नहीं तो वे एक-दूसरे की जान ले लेंगे। उन्हें दूर भगाओ, अकेला! हई, रामा हई, हई मेरे बच्चो! शांत हो जाओ, शांत हो जाओ।''

अकेला और भेड़िया भाई उनके आगे-पीछे रहकर भौंकते और कभी-कभी उनके पैरों को काट भी लेते। यद्यपि वह झुंड एक चक्कर लगाकर फिर घाटी की ओर दौड़ना चाहता था। मोगली रामा को वापस लाने में सफल रहा और कुछ देर में बाकी के पशु उसके पीछे-पीछे उस कीचड़ में चले गए जहाँ वे रोज आराम करते थे।

शेरखान पशुओं के पैरों तले बुरी तरह कुचला जा चुका था। वह मर गया था और चीलों ने उसके शरीर पर मँडराना शुरू कर दिया था। ''भाइयो! वह कुत्ते की मौत मरा,'' उस चाकू को टटोलते हुए मोगली ने कहा, जिसे वह हमेशा कमरबंद में खोंसे रखता था—अब जबकि वह इनसानों के बीच रहने लगा था, ''वह जिंदगी में कभी लड़ नहीं सका। कौंसिल रॉक पर उसकी खाल खूब जँचेगी। हमें तुरंत इस काम में लग जाना चाहिए।''

आदमियों द्वारा सिखाया गया कोई भी लड़का अकेले एक दस फुट लंबे बाघ की खाल उतारने की सोच भी नहीं सकता था, परंतु किसी और के मुकाबले मोगली अच्छी तरह जानता था कि एक जानवर की खाल किस तरह से कसी होती है और कहाँ से शुरू करने पर अपेक्षाकृत आसानी से उतारी जा सकती है। यह एक दुष्कर काम था और बाघ के शरीर को चीरते-फाड़ते मोगली को एक घंटा लग गया और इस बीच भेड़िए अपनी जीभ निकाले खड़े रहे और आगे आकर उसके कहे अनुसार काम करते रहे। तभी उसने अपने कंधे पर एक हाथ महसूस किया। ऊपर देखने पर उसने अपनी बंदूक के साथ बलदेव को देखा। बच्चों ने सारे गाँव की भैंसों में मची भगदड़ के बारे में बता दिया था और मोगली को डाँट पिलाने का एक अच्छा मौका देख, कि उसने भैंसों की ठीक से रखवाली नहीं की थी, बलदेव गुस्से में गाँव से निकला था। उसे आता देख भेड़िए वहाँ से खिसक लिए थे।

''यह गड़बड़ हुई कैसे?'' बलदेव ने गुस्से से पूछा, ''देखो, तुम ठीक से बाघ की खाल भी नहीं उतार सकते! भैंसों ने उसे कहाँ मारा था? यह वही लँगड़ा बाघ है और इसके सिर पर सौ रुपए का इनाम है। चलो, भैंसों को भागने देने की तुम्हारी गलती को हम माफ कर देंगे और इनाम की राशि में से शायद मैं तुम्हें एक रुपया भी दे दूँगा, जब मैं यह खाल लेकर कान्हीवाड़ा जाऊँगा।'' उसने अपनी कमरबंद में से एक लाइटर निकाला और शेरखान की मूँछों को जलाने के लिए नीचे झुका। अधिकांश देशी शिकारी हमेशा मरे हुए बाघ की मूँछें जला दिया करते थे, ताकि उसका भूत उन्हें तंग न कर सके।

''हुँह!'' एक पंजे की खाल अलग करते हुए मोगली ने जैसे अपने आप से ही कहा, ''तो तू इनाम पाने के लिए इस खाल को कान्हीवाड़ा ले जाएगा और शायद मुझे एक रुपया भी देगा? अब मैं तो सोच रहा हूँ कि अपने इस्तेमाल के लिए इस खाल को मैं अपने पास रखूँ। बुड्ढे खूसट! उस लाइटर को दूर रख!''

''गाँव के प्रधान शिकारी से बात करने का यह क्या तरीका है? तेरी किसमत और भैंसों की बेवकूफी से यह मारा गया है। इस बाघ ने अभी-अभी खाया था वरना अब तक तो यह बीस मील दूर जा चुका होता। तू तो ठीक से इसकी खाल भी नहीं उतार सकता ओ भिखारी छोकरे! तेरी इतनी हिम्मत कि तू बलदेव को उसकी मूँछें जलाने से

रोके! मोगली, मैं इनाम में से तुझे एक आना भी नहीं दूँगा, बल्कि तेरी पिटाई करूँगा। उस लाश को छोड़ दे और दफा हो यहाँ से!''

''उस बैल की कसम जिसने अपनी जान से मेरी कीमत चुकाई,'' बाघ के कंधे तक पहुँचते हुए मोगली ने कहा, ''क्या मैं इस बूढ़े बंदर से बकवास करते हुए सारी दोपहर बिता दूँगा? अकेला, कहाँ हो तुम! यह आदमी मुझे परेशान कर रहा है।''

बलदेव, जो अब भी बाघ के ऊपर झुका हुआ था, ने अपने आपको घास पर चित पड़ा पाया—स्लेटी रंग का एक भेड़िया उसे घूर रहा था, जबकि मोगली खाल उतारने के अपने काम में लगा रहा, जैसे पूरे भारत में वही अकेला हो। ''हाँ,'' उसने दाँत भींचते हुए कहा, ''तूने बिलकुल ठीक कहा बलदेव! तू इनाम में से मुझे एक आना भी नहीं देगा। इस लँगड़े बाघ और मेरे बीच एक पुरानी लड़ाई है—एक बहुत पुरानी लड़ाई—और मैं जीत गया हूँ।''

बलदेव के साथ न्याय करने के लिए यह कहा जाना चाहिए कि अगर उसकी उम्र दस साल कम होती तो वह अकेला से निपटने की सोच सकता था, बशर्ते उसे वह जंगल में मिला होता, परंतु वह भेड़िया जो उस लड़के की आज्ञा का पालन कर रहा था, नरभक्षी बाघों के साथ जिसकी एक निजी लड़ाई थी, एक साधारण जानवर नहीं था। यह एक बड़े ही घटिया दरजे का जादू-टोना है, बलदेव ने सोचा और सोच में पड़ गया कि उसके गले से लटका हुआ ताबीज क्या उसे बचा पाएगा। वह, जितना संभव था, बिना हिलेडुले लेटा रहा—हर मिनट यह उम्मीद करते हुए कि मोगली खुद कब एक बाघ का रूप ले लेता है।

''महाराज! राजाधिराज!'' अंत में वह फुसफुसाते हुए बोला।

''बोलो,'' एक दबी सी हँसी के साथ, बिना सिर घुमाए मोगली ने कहा।

''मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ। मैं नहीं जानता था कि तुम एक चरवाहे से बढ़कर भी कुछ हो। क्या मैं उठकर जा सकता हूँ या तुम्हारा यह सेवक मुझे फाड़ खाएगा?''

''जाओ और चैन से रहो! बस आगे से मेरे किसी काम में दखल मत देना। अकेला, उसे जाने दो।''

जितनी तेजी से वह चल सकता था, कनखियों से यह देखते हुए कि कहीं मोगली ने कोई विकराल रूप तो धारण नहीं कर लिया, बलदेव गिरते-पड़ते गाँव की ओर भागा। गाँव पहुँचकर उसने जादू-टोना और वशीकरण की जो कहानी सुनाई, उससे पुजारी बहुत गंभीर हो गया।

मोगली फिर अपने काम में जुट गया, परंतु इससे पहले कि वह और भेड़िए खाल को उसके शरीर से पूरी तरह अलग करते, लगभग शाम हो चुकी थी।

''अब हमें इसे छिपा देना चाहिए और भैंसों को घर ले जाना चाहिए! उन्हें हँकालने में मेरी मदद करो, अकेला।''

उस झुटपुटे में भैंसें चलने को तैयार हुईं और जब वे गाँव के पास पहुँचे, मोगली ने बत्तियाँ देखीं और मंदिर से आनेवाली घंटियों और शंख की आवाजें सुनीं। ऐसा लगता था जैसे उसके इंतजार में आधा गाँव गेट पर जमा हुआ था।

''यह इसलिए कि मैंने शेरखान को मारा है,'' उसने अपने आप से कहा। परंतु पत्थरों की एक बौछार उसके कानों के पास से गुजर गई और गाँववाले चिल्लाए, ''जादूगर! भेड़िए की औलाद! जंगल के पिशाच! चले जाओ यहाँ से! जल्दी निकल वरना पुजारीजी तुझे फिर से भेड़िया बना देंगे। गोली मार दो इसे, बलदेव।''

एक धमाके के साथ बंदूक चल गई और एक युवा भैंस दर्द से तड़पने लगी।

''और जादूगरी!'' गाँववाले चिल्लाए, ''वह गोलियों की दिशा भी बदल सकता है। बलदेव, वह तुम्हारी भैंस थी न!''

''अब यह सब क्या है?'' पत्थरों की बढ़ती हुई बौछार के बीच हक्के-बक्के मोगली ने कहा।

''हमारी भेड़िया बिरादरी से ये लोग अलग नहीं हैं—तुम्हारे ये भाई,'' शांति से बैठते हुए अकेला ने कहा, ''जहाँ तक मैं समझता हूँ, अगर इन गोलियों का कुछ मतलब है तो ये लोग तुम्हें निकाल देंगे।''

''भेड़िए! भेड़िए के बच्चे! चले जाओ यहाँ से!'' पवित्र तुलसी की एक टहनी को लहराते हुए पुजारी चिल्लाया।

''फिर वही बात!पिछली बार ऐसा इसलिए हुआ था कि मैं एक आदमी था। इस बार इसलिए कि मैं एक भेड़िया हूँ? चलो, अकेला।''

एक स्त्री—यह मेसुआ थी—भीड़ को चीरती हुई पशुओं के झुंड की ओर आई और रोते-रोते बोली, ''ओ मेरे बेटे, मेरे बेटे! ये लोग कहते हैं कि तू एक जादूगर है जो जब चाहे किसी जानवर की शक्ल अख्तियार कर लेता है। मैं यह नहीं मानती मगर तू यहाँ से चला जा, नहीं तो ये लोग तुझे मार डालेंगे। बलदेव कहता है कि तू एक जादूगर है, मगर मैं जानती हूँ कि तूने नाथू की मौत का बदला लिया है।''

''वापस आ जाओ मेसुआ,'' भीड़ चिल्लाई, ''वापस आ जाओ, नहीं तो हम तुझे भी पत्थर मारेंगे।''

मोगली एक संक्षिप्त सी कड़वी हँसी हँसा—एक पत्थर उसके मुँह पर लगा था। ''तुरंत वापस जाओ, मेसुआ। यह उन मूर्खतापूर्ण कहानियों में से एक है, जो ये लोग शाम के वक्त उस बड़े पेड़ के नीचे सुनाते हैं। मैंने कम-से-कम तेरे बेटे की मौत का बदला लिया है। अलविदा, और तेजी से भागो, क्योंकि उनके पत्थरों से ज्यादा तेजी से मैं पशुओं को भेजनेवाला हूँ। मैं कोई जादूगर नहीं हूँ मेसुआ! अलविदा।''

''अब एक बार फिर, अकेला,'' वह चिल्लाया, ''झुंड को गाँव के अंदर ले आओ!''

भैंसें गाँव में जाने के लिए बेताब थीं। उन्हें अकेला के भौंकने की जरूरत ही नहीं थी? भीड़ को तितर-बितर करते हुए तूफान की तरह वे गेट के भीतर दौड़ीं।

''गिन लो,'' मोगली हिकारत से चिल्लाया, ''कहीं मैंने कोई मवेशी चुरा न लिया हो। गिन लो, क्योंकि अब मैं तुम्हारी चरवाहगीरी नहीं करूँगा। अलविदा बाल मानवों मेसुआ को धन्यवाद दो कि मैं अपने भेड़ियों के साथ आकर घरों में घुसकर तुम्हारा शिकार नहीं कर रहा हूँ।''

वह वापस जाने के लिए मुड़ा और उस अकेले भेड़िए के साथ चल दिया। जैसे ही उसने आकाश में तारों को देखा, वह खुश हुआ। ''अब मुझे पिंजरों में सोना नहीं पड़ेगा, अकेला। चलो, शेरखान की खाल लेकर हम वापस चलें। नहीं, हम गाँव को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे, क्योंकि मेसुआ मुझे प्यार करती थी।''

जब चाँद ऊपर आया तो उसकी दूधिया रोशनी में मैदान नहा उठा। उसी समय हक्के-बक्के गाँववालों ने सिर पर एक गठरी रखे मोगली को दो भेड़ियों के साथ भेड़ियों की तेज चाल से जाते देखा, जो मीलों लंबी दूरी मिनटों में तय कर लेती थी। तब उन्होंने मंदिर की घंटियाँ और शंख इतने जोर से बजाए जितने पहले कभी नहीं बजाए थे। मेसुआ रो रही थी और बलदेव जंगल में अपने साहसिक कारनामों की कहानियाँ गढ़कर सुनाता रहा और अंत में उसने बताया कि अपने पिछले पैरों के बल बैठकर अकेला ने कैसे इनसानों की भाषा में उससे बात की थी।

उस समय चाँद डूब रहा था, जब मोगली और दोनों भेड़िए कौंसिल रॉक पहुँचे और वे ममा भेड़िया की माँद में कुछ देर रुके।

''उन्होंने मुझे आदमियों की जमात से बाहर कर दिया माँ,'' मोगली ने कहा, ''लेकिन अपना वचन निभाने के लिए मैं शेरखान की खाल लेकर आया हूँ।''

ममा भेड़िया अपने बच्चों के साथ तेजी से माँद में से निकली और उसने बाघ की खाल देखी तो उसकी आँखें चमकने लगीं।

मैंने उसी दिन उससे कहा था जब तुम्हारा पीछा करते हुए उसने इसी माँद के द्वार में अपना सिर और कंधे फँसा लिए थे, नन्हे मेंढक—मैंने कहा था कि शिकारी एक दिन खुद शिकार होगा। तुमने बहुत अच्छा किया।

''छोटे भाई, तुमने बढ़िया काम किया है,'' झाड़ी में से एक गहरी आवाज आई, ''तुम्हारे बिना जंगल में हम अकेले थे,'' बघीरा दौड़कर मोगली के नंगे पैरों के पास आ गया। वे सब साथ ही कौंसिल रॉक पर चढ़े और मोगली ने उस सपाट पत्थर पर वह खाल बिछा दी, जहाँ अकेला बैठा करता था और बाँस की कुछ खपच्चियों के साथ उसे कस दिया; अकेला उस पर लेट गया और उसने ठीक उसी तरह कौंसिल का आह्वान किया जैसा उसने मोगली को पहली बार यहाँ लाए जाने के अवसर पर किया था, ''ध्यान से, ओ भेड़ियो!''

जब से अकेला को अपने पद से हटाया गया था, दल बिना मुखिया के काम कर रहा था—वे सब अपनी मरजी के मुताबिक लड़ते और शिकार करते थे। परंतु अपनी आदत के अनुसार उन्होंने उस आह्वान का जवाब दिया। उनमें से कुछ जाल में गिरकर पैर तुड़ा बैठे थे, कई गोली लगने के कारण लँगड़ाकर चल रहे थे, कुछ गलत चीज खाकर खजेले हो गए थे और कई भेड़ियों का तो अता-पता ही नहीं था। परंतु जितने बचे थे, वे सब कौंसिल रॉक पर आए और उन्होंने चट्टान पर शेरखान की धारियोंवाली खाल और बिना पैरों के उसके विशाल पँजे लटकते हुए देखे। और तभी मोगली एक गाना गाने लगा जिसके शब्द अपने आप ही उसके दिमाग में आ गए थे और वह उछल-उछलकर खाल पर चढ़ते-उतरते, पैरों की ताल पर तब तक नाचता गाता रहा जब तक कि उसकी साँस न फूलने लगी, जबकि गाने के बोलों के बीच भेड़िया भाई और अकेला भौंकते थे।

''ध्यान से, ओ भेड़ियो! क्या मैंने अपना वादा पूरा किया?'' मोगली ने पूछा। और सभी भेड़िए भौंके, 'हाँ' और एक फटीचर भेड़िया हुआँने लगा।

''फिर से हमारा नेतृत्व करो, ओ अकेला! फिर से हमारा नेतृत्व करो, ओ बाल मानव, क्योंकि इस बेकायदा जिंदगी से हम तंग आ चुके हैं और एक बार फिर हम 'स्वतंत्र लोग' बनेंगे।''

'नहीं', बघीरा गुर्राया, ''वह नहीं हो सकता। जब तुम लोगों का पेट भरा होता है तो तुम पर फिर पागलपन सवार हो सकता है। तुम्हें यूँ ही 'स्वतंत्र लोग' नहीं कहा जाता। तुम आजादी के लिए लड़े हो और उसके हकदार हो। अब यह तुम्हारे हाथ में है, ओ भेड़ियो।''

''इनसान और भेड़िए, इन दोनों की जमात ने मुझे निकाल दिया है,'' मोगली बोला, ''अब जंगल में मैं अकेला ही शिकार करूँगा।''

''और हम तुम्हारे साथ शिकार करेंगे,'' ममा भेड़िया के चार छोटे बच्चों ने कहा।

इस तरह मोगली वहाँ से चला गया और उस दिन से चार छोटे बच्चों के साथ शिकार करने लगा। परंतु वह हमेशा अकेला नहीं रहा, क्योंकि कुछ वर्षों बाद वह जवान हो गया और उसने शादी कर ली।

मोगली का गाना

(जो उसने कौंसिल रॉक पर शेरखान की खाल पर नाचते हुए गाया)

मोगली गीत सुनाए, मोगली गीत सुनाए,
कारनामा सारे जंगल को अपना बताए
शेरखान ने कहा, वह मुझे मार देगा,

साँझ के झुटपुटे में गेट पर
इस मेंढक मोगली को मार देगा!
उसने खाया और पिया, दबा के
पता नहीं खाना फिर मिलता, न मिलता!
सोओ शेरखान और सपने में मारो!
मैं अकेला हूँ चारागाह में ओ भेड़िया भाई,
अकेला, तुम भी आओ,
दुश्मन निशाने पर है, यही मौका है;
ऊपर ले आओ
तगड़े, नीली चमड़ी और लाल आँखोंवाले भैंसों को
आगे और पीछे उन्हें हँका लो
जैसा मैं कहूँ,
अब भी सोता है तू, ओ शेरखान?
जाग जा, जाग जा! यह मैं आया,
और मतवाले भैंसे भी,
तुझे कुचलने के लिए
भैंसों का सरताज रामा
पैर पटकता है बाणगंगा के पानी में,
कहाँ गया शेरखान?
वह इक्की नहीं है कि बिल बनाए,
और न माओ मोर, जो उड़ जाए,
ना वो माँग चमगादड़ है जो
पेड़ पर लटक जाए
तहस-नहस झाड़ियाँ गवाह हैं
कि वह यहाँ से गुजरा था
अउन! वो तो वहाँ है!
आ हू! वो तो वहाँ है,
रामा के पैरों तले, छटपटाता
लँगड़ा शेरखान!
उठ और मार दे!
मांस मजेदार है,
भैंसों की गरदन मरोड़ दे!
शश्श्श! वह सो रहा है।
हम उसे नहीं जगाएँगे
महाबली खान को!

चीलें उतर आई हैं उसे देखने को
काली चींटियों को भी
मुर्दे की गंध आ गई है,
उसके स्वागत में बड़ी भीड़ जमा है!
अलाला! मेरे पास कपड़ा नहीं है
तन पर लपेटने को,
चीलें मुझे नंगा देखेंगी!
कैसे दिखाऊँगा मुँह अपना
इन सबको!
मुझ अपनी खाल दे दे, शेरखान!
तेरी धारियोंवाली चमकीली खाल,
जिसे मैं कौंसिल रॉक पर सजाऊँगा!
उस बैल की कसम जिसने
मुझे एक नई दुनिया दी,
मैंने किया था एक वादा
—एक छोटा सा वादा
जो पूरा होने को है,
बस तेरी खाल की कमी है!
उस चाकू के जरिए जिसे
आदमी इस्तेमाल करते हैं
शिकारी के उस चाकू के जरिए
मैं अपना उपहार हासिल करूँगा
ओ बाणगंगा की धाराओ,
मेरे प्यार की खातिर,
शेरखान यह खाल मुझे देता है
खींचो प्यारे भाई खींचो,
खान की खाल बहुत भारी है, अकेला!
यह इनसानी हुजूम,
कुछ ज्यादा ही खफा है
वे पत्थर फेंकते हैं और
बकवास करते हैं,
खून बह रहा है, मेरे मुँह से,
भागो भइया, भागो!
मेरे साथ भागो, सारी रात भागो चारों,
गाँव की रोशनी से दूर,

ढलते चाँद के शीतल उजाले में
ओ बाणगंगा की धाराओ,
इनसानों की जमात ने मुझे
बाहर कर दिया है,
कुछ नहीं बिगाड़ा था उनका, मैंने
पर वे मुझसे डरते थे। क्यों?
भेड़िया लोगो! तुमने भी वही किया है,
जंगल मेरे लिए बंद है और गाँव का गेट भी! क्यों?
जैसे माँग चमगादड़ उड़ता है,
पशुओं और पक्षियों के बीच,
क्या मैं भी ठेला जाऊँगा,
कभी जंगल में तो कभी गाँव में! क्यों?
मैं नाचता हूँ शेरखान की खाल पर
मन मेरा पर उदास है,
गाँववालों के पत्थरों से
मेरा मुँह कट-फट गया है
मगर दिल में एक सुकून है, क्योंकि
मैं जंगल में वापस आ गया हूँ। क्यों?
ये दोनों चीजें लड़ती हैं मेरे भीतर
जैसे वसंत में साँप लड़ते हैं
मेरी आँखों से आँसू बहते हैं
फिर भी मैं हँसता हूँ। क्यों?
मैं एक नहीं, दो मोगली हूँ,
मगर शेरखान की खाल मेरे पैरों में है,
मैंने शेरखान को मारा है
सारा जंगल जानता है
देखो, ठीक से देखो, ओ भेड़ियो!
आह! मेरा दिल भरा हुआ है
उन बातों से
जो मेरी समझ से बाहर हैं!

❑

सफेद सील

जल्दी करो ओ मेरी बिटिया,
रात हमारा पीछा कर रही है,
और जो पानी चकचकाता हरा लगता था
असल में काला है।
बादलों से निकलकर मुस्तैद चाँद
हमें खोज ही लेता है
हम जो छिद्रों में आराम फरमा रही थीं!
जहाँ लहर से मिलती है लहर,
तुम्हारा सिरहाना नरम होता है,
आह, मेरी थकी-माँदी नन्ही बिटिया,
किसी तरह सिमटकर सो जाओ!
तूफान भी तुम्हें जगा न पाएँगे,
न शार्क तुम्हें मात दे पाएगी
तुम सोई हो
विराट, धीर-गंभीर सागर की बाँहों में!
(सील की लोरी)

बहुत साल पहले बेरिंग सागर में दूर, बहुत दूर बसे सेंट पॉल द्वीप पर नोवास्टोशनाह या नॉर्थ ईस्ट प्वाईंट नाम के एक स्थान पर यह सब हुआ। जाड़ों की फुदकी चिड़िया लिमरशिन ने यह कहानी मुझे तब सुनाई, जब वह जापान जा रहे एक स्टीमर पर बैठकर बहुत दूर निकल आई थी और भूखी-प्यासी थी; मैं उसे केबिन में ले गया और दो दिन तक उसकी सेवा की और खिलाया-पिलाया, जब तक वह उड़कर सेंट पॉल्स तक वापस जाने लायक नहीं हो गई। लिमरशिन एक छोटा सा अनोखा पक्षी है, परंतु वह जानता है कि सच कैसे कहा जाता है।

अपने काम के सिवाय कोई भी नोवास्टोशनाह नहीं आता और वे अकेले ऐसे लोग हैं, जिन्हें नियमित रूप से वहाँ काम होता है—वे हैं सील। वे गरमी के महीनों में लाखों की संख्या में ठंडे स्लेटी समुद्र से वहाँ आती हैं, क्योंकि नोवास्टोशनाह समुद्रतट पूरी दुनिया में कहीं की भी सील मछली के लिए सर्वोत्तम जगह है।

सी कैच यह जानता था और हर वसंत ऋतु में, वह जहाँ कहीं भी हो, वहाँ से टॉरपीडो बोट की तरह सीधे नोवास्टोशनाह तैरकर आ जाता और चट्टानों पर, समुद्र से जितनी संभव हो उतनी पास, एक बढ़िया जगह हथियाने के लिए अपने साथियों से लड़ने में ही एक महीना बिता देता। सी कैच की उम्र पंद्रह साल थी और वह स्लेटी रंग का एक विशाल फरयुक्त सील था, जिसके कंधे पर बाल लटकते प्रतीत होते थे और जिसके कुत्ते जैसे लंबे और खूँखार दाँत थे। जब वह अपने आगे के फ्लिपर्स के बल पर अपने आपको उठा लेता तो उसकी लंबाई जमीन से चार फुट ज्यादा ही हो जाती और यदि कोई उसका वजन लेने की हिम्मत करता तो उसका वजन लगभग सात सौ पौंड निकलता। उसके पूरे बदन पर भयंकर लड़ाइयों के निशान थे और वह एक और लड़ाई के लिए हमेशा तैयार रहता था। लड़ने से पहले वह अपना सिर एक तरफ झुका लेता जैसे दुश्मन से आँख मिलाने में भी उसे डर लग रहा हो; फिर वह बिजली की तरह उस पर टूट पड़ता और जब उसके लंबे दाँत दूसरे सील की गरदन को कस लेते तो वह दूसरा सील, अगर उसमें दम होता तो उससे छूटकर जा सकता था, परंतु सी कैच अपनी तरफ से कोई ढील

नहीं देता।

फिर भी सी कैच ने कभी किसी मार खाए हुए सील का पीछा नहीं किया, क्योंकि ऐसा करना समुद्रतट के नियमों के खिलाफ था। वह केवल अपनी नर्सरी के लिए समुद्रतट के नजदीक जगह चाहता था। परंतु चूँकि हर वसंत में लगभग चालीस या पचास हजार सीलें वही चीज चाहते थे, समुद्रतट पर उनके लड़ने, चीखने, चिल्लाने, गरजने की भयानक आवाजें आती थीं।

हचिंसंस हिल नामक एक छोटी सी पहाड़ी से आप लड़ते हुए सीलों से भरा साढ़े तीन मील से अधिक का विस्तार देख सकते थे और तटीय लहरों के फेन में जमीन पर अपनी जगह लेने की होड़ में तेजी से भागते और उस प्रक्रिया में अपने हिस्से की लड़ाई लड़ते हजारों सीलों के सिर दिखाई देते थे। वे तटीय जल में लड़ते, वे रेत में लड़ते और वे नर्सरी की चिकनी चट्टानों पर भी लड़ते, क्योंकि वे उतने ही मूर्ख और खुदगर्ज थे, जितने आदमी होते हैं। उनकी बीवियाँ मई के अंत या जून के आरम्भ से पहले कभी नहीं आतीं, क्योंकि उन्हें अपनी हड्डियाँ तुड़वाने का कोई शौक नहीं था और सीलों के दो, तीन या चार वर्षीय बच्चे, जिन्होंने अभी अपना घर नहीं बसाया था, लड़ते हुए वरिष्ठ सीलों के बीच से निकलकर आधा मील भीतर चले जाते और झुंड बनाकर सारा दिन रेत पर खेलते और उन्हें जहाँ कहीं वनस्पति नजर आती, उसे तहस-नहस कर देते। उन्हें होलसचिकी—कुँवारे—कहा जाता था और केवल नोवास्टोशनाह में ही उनकी संख्या दो या तीन लाख होगी।

एक वसंत में सी कैच ने अपनी पैंतालीसवीं लड़ाई खत्म की ही थी कि उसकी नाजुक, छरहरी, सौम्य आँखोंवाली पत्नी मेटका समुद्र में से आती दिखाई दी। उसने उसे गरदन से पकड़ा और अपनी आरक्षित जमीन पर पटक दिया और रूखाई से बोला, ''हमेशा की तरह फिर देर से आई। कहाँ थी?''

उन चार महीनों में, जब तक वह समुद्रतट पर रहता था, कुछ भी खाने का चलन नहीं था और इसीलिए उसका मिजाज अकसर गरम रहता था। मेटका जवाब देने का अंजाम जानती थी। उसने चारों ओर देखा और मीठे स्वर में बोली, ''तुमने बड़े दिमाग से काम लिया है। हमने पुरानी जगह फिर से हासिल कर ली है।''

''मैं भी यही सोचता हूँ,'' सी कैच ने कहा, ''जरा मेरी ओर देखो।''

उसके बदन पर कम-से-कम बीस जगह खरोंच और खून बहने के निशान थे; उसकी एक आँख लगभग जा चुकी थी और उसकी बगलें कट-फटकर चिथड़े जैसी हो गई थीं।

''ओह, तुम मर्द लोग!'' अपने पिछले चप्पूनुमा पैर से हवा करते हुए मेटका बोली, ''तुम लोग समझदारी से काम लेकर अपने-अपने ठिकाने शांति से तय क्यों नहीं कर सकते? तुम तो ऐसे लग रहे हो मानो खूनी व्हेल से लड़कर आए हो।''

''मई के मध्य से ही मैंने लड़ने के सिवाय कुछ नहीं किया है। इस बार तो भीड़ ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। मैं लुकानन बीच की कम-से-कम सौ सीलों से मिला हूँ जो अपने जन्मस्थान में ही शिकार कर रहे हैं। लोग अपनी मातृभूमि से ही क्यों नहीं जुड़े रहते?''

''मैंने अकसर सोचा है कि इस भीड़ भरी जगह पर आने की बजाय अगर हम ऑटर द्वीप में गए होते तो ज्यादा खुश रहते,'' मेटका ने कहा।

''क्या? केवल कुँआरे सील ऑटर द्वीप से जाते हैं। अगर हम वहाँ जाते तो लोग कहते कि हम डर गए हैं। हमें अपनी आन बनाए रखनी है, मेरी जान।''

सी कैच ने अपना सिर अपने मोटे कंधों में छिपा लिया, जैसे वह कुछ मिनट के लिए सोने जा रहा हो, परंतु उस पूरे समय किसी संभावित लड़ाई के लिए उसने पैनी नजर रखी थी। अब, जबकि सभी सील और उनकी पत्नियाँ

इलाके में आ गए थे आप उनका शोर तेज झंझावात के बावजूद समुद्र में मीलों दूर तक सुन सकते थे। कम-से-कम गिनने पर भी उस समुद्रतट पर दस लाख से ज्यादा सील होंगे—बूढ़े सील, ममा सील, नन्हे सील और युवा कुँआरे सील। जहाँ तक नजर जाती थी, जमीन का चप्पा-चप्पा घेरे हुए थे, कुहासे को चीरते हुए झुंड-के-झुंड लड़ते-झगड़ते, एक-दूसरे को धकियाते समुद्र में जाते और उससे बाहर आते थे। नोवास्टोशनाह में लगभग हमेशा ही कोहरा छाया रहता था सिवाय उस छोटी सी अवधि के, जब सूरज की किरणें उस पूरे परिदृश्य को इंद्रधनुषी और मोतियों की तरह चमकदार बना देती थीं।

इसी अराजक माहौल में मेटका के बेटे कोरिक का जन्म हुआ था और नीली पनियल आँखोंवाला वह गोल-मटोल सील दूसरे बच्चों जैसा ही था, परंतु उसकी खाल पर ऐसा कुछ था जिसने उसकी माँ को ध्यान से देखने के लिए मजबूर कर दिया।

''सी कैच,'' आखिरकार वह बोली, ''हमारा बेटा सफेद होगा!''

''कूढ़ मगज, खोखली सीपी,'' सी कैच गुर्राया, ''दुनिया में अब तक सफेद सील जैसी कोई चीज नहीं हुई है।''

''इसमें मैं क्या कर सकती हूँ,'' मेटका ने कहा, ''ऐसी चीज अब होगी।'' और उसने धीमी आवाज में वह लयबद्ध सील-गान गाना शुरू कर दिया, जो सभी ममा सीलें अपने बच्चों को सुनाती हैं—

जब तक तुम छह हफ्तों के न हो जाओ
तुम्हें तैरना नहीं चाहिए
वरना तुम्हारे फ्लिपर
तुम्हारा सिर पानी में डुबो देंगे;
और ग्रीष्मकालीन तूफान और खूनी व्हेल,
नन्हे सीलों के लिए खतरनाक हैं
नन्हे सीलों के लिए खतरनाक हैं,
महा खतरनाक, मेरे प्यारे चूहे;
मगर पानी में हाथ-पैर चलाओ
और मजबूत बन जाओ,
फिर तुम पर कोई आँच नहीं आएगी
ओ खुले समंदर के मेरे प्यारे बच्चे!

बेशक, वह नन्हा सील उन शब्दों का अर्थ नहीं समझ सकता था। अपनी माँ की बगल में वह ठुमककर चलता और जब उसका पापा दूसरे सील से लड़ रहा होता और वे दोनों लड़ते-लड़ते चिकनी चट्टान से लुढ़ककर नीचे आ जाते और गुर्राकर फिर ऊपर चढ़ते तब उसने हाथ-पैर मारकर उनके बीच से बाहर निकलना सीख लिया था। उसके लिए खाने की तलाश में उसकी माँ समुद्र में जाती। यद्यपि बच्चे को दो दिन में सिर्फ एक बार भोजन मिलता था, भरपेट खाकर वह दिनोदिन तंदुरुस्त हो रहा था।

उसने सबसे पहले जो काम किया था, वह था किसी तरह रेंगकर अंत: क्षेत्र में चले जाना, जहाँ वह अपनी ही उम्र के हजारों बच्चों से मिला। पिल्लों की तरह वे साथ खेलते, थककर साफ रेत पर सोने चले जाते और फिर खेलना शुरू कर देते। नर्सरी में रहनेवाले वरिष्ठ लोग उन पर कोई ध्यान न देते और कुँवारे अपनी ही गतिविधियों में मस्त थे, इसलिए बच्चों को खेलने का भरपूर मौका मिलता था।

गहरे समुद्र में मछलियों का शिकार करने के बाद जब मेटका वापस आती तो वह सीधे बच्चों के खेल के मैदान

में जाती और जैसे एक भेड़ अपने मेमने को पुकारती है वैसे ही पुकारकर तब तक इंतजार करती जब तक वह कोरिक के मिमियाने की आवाज न सुन लेती। फिर उसके मिमियाने की आवाज के अनुसरण में वह एकदम सीधा रास्ता लेती और रास्ते में आनेवाले बच्चों को धकियाती हुई आगे बढ़ती। वहाँ खेल के मैदान में हर समय हजारों माँएँ अपने बच्चों को खोजती दिखाई देती थीं। परंतु जैसा मेटका कोरिक को कहती थी, ''जब तक तुम कीचड़-भरे पानी में लोटकर खुजली न पैदा कर लो या बदन को चट्टान से इतनी जोर से न रगड़ लो कि जख्म बन जाएँ और जब तक तुम तूफानी समंदर में तैरने के लिए न जाओ, तब तक तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा।''

नन्हे सील इनसानी बच्चों से ज्यादा नहीं तैर सके, परंतु जब तक वे तैरना सीख नहीं लेते, वे नाखुश रहते हैं। जब कोरिक पहली बार समुद्र में उतरा था, एक लहर उसे गहरे पानी में ले गई थी। और ठीक वैसे ही, जैसा उसकी माँ ने सील-गान में बताया था। उसका बड़ा सा सिर डूबने लगा और उसके पिछले फ्लिपर्स ऊपर हवा में उठ गए और यदि अगली लहर ने उसे वापस न फेंक दिया होता तो वह डूब ही जाता।

उसके बाद उसने तट के उथले पानी में लेटे रहना सीख लिया, जहाँ लहर के साथ आया पानी उसे ढँक लेता और कभी-कभी थोड़ा धकेल भी देता और वह अपने फ्लिपर्स चलाने लगता, परंतु उसकी आँखें हमेशा बड़ी लहरों की ओर लगी रहतीं, जो उसे लील सकती थीं। अपने फ्लिपर्स का इस्तेमाल सीखने में उसे दो हफ्ते लग गए और इस पूरी अवधि में वह पानी में जाता, फिर कुछ देर बाद घबराकर खाँसते हुए पानी से बाहर निकलकर कुछ देर रेत पर सुस्ताता और फिर पानी में चला जाता, जब तक कि अंत में उसे पता न चल गया कि वह तो एक जलचर है।

अब आप उस मौज-मस्ती की कल्पना कर सकते हैं, जो ऊँची लहरों के आने पर झुक जाते या उस पर सवार होकर दूर तट पर पटक दिए जाने या वयस्क सीलों की तरह अपनी पूँछ पर बैठकर सिर खुजाते या फिसलन भरी चट्टानों, जिन पर यहाँ-वहाँ वनस्पति उगी हुई थी, पर ''मैं महल का राजा हूँ'' खेलते हुए उसने अपने साथियों के साथ बिताया होगा। कभी-कभी उसे तट के समानांतर बहती किसी बड़ी मछली का फिन दिख जाता और वह समझ जाता कि वह खूनी व्हेल ग्रेंपस था, जो हाथ आने पर सील के बच्चों को निगल जाता था। कोरिक तीर की तरह किनारे की ओर भागता और धीरे-धीरे वह फिन गायब हो जाता, जैसे वह किसी भी घात में था ही नहीं।

अक्तूबर के अंत तक परिवार और बिरादरी के साथ सीलें सेंट पॉल्स छोड़कर गहरे समुद्र में जाना शुरू कर देते; नर्सरी को लेकर होनेवाली लड़ाइयाँ अब खत्म हो चुकी थीं और कुँआरे सील जहाँ चाहे खेल सकते थे। ''अगले साल,'' मेटका ने कोरिक से कहा, ''तुम भी एक वरणीय कुँआरा बन जाओगे, लेकिन इस साल तुम्हें मछली पकड़ना सीखना होगा।''

वे प्रशांत महासागर पार करने के लिए साथ ही निकल पड़े और मेटका ने कोरिक को बताया कि अपने फ्लिपर्स को एक तरफ समेटकर और अपनी छोटी सी नाक को पानी से बस जरा सा ऊपर रखकर अपनी पीठ के बल कैसे सोया जाता है। दुनिया का कोई भी पलना प्रशांत महासागर की झुलाती लंबी उत्ताल तरंगों से ज्यादा आरामदायक नहीं हो सकता।

जब कोरिक ने अपने पूरे बदन की त्वचा पर सुरसुराहट महसूस की तो मेटका ने उसे बताया कि वह ''पानी को महसूस करना'' सीख रहा है और वह सुरसुराहट या हलकी सी खारिश का एहसास आनेवाले खराब मौसम की सूचना भी थी और उससे निपटने के लिए उसे और ज्यादा मेहनत से तैरना होगा।

''कुछ ही समय में'' मेटका ने कहा, ''तुम्हें पता चल जाएगा कि किस तरफ तैरना चाहिए, लेकिन इस समय हम समुद्री सुअर यानी सूँस के पीछे-पीछे चलेंगे, क्योंकि वह बहुत बुद्धिमान है।'' सूँसों का एक झुंड उछलते-कूदते पानी को चीरकर आगे बढ़ रहा था और नन्हे कोरिक ने उनकी रफ्तार से तैरने की पूरी कोशिश की। ''तुम्हें

कैसे पता चलता है कि किस तरफ जाना है?'' उसने हाँफते हुए उनसे पूछा। उस समूह के मुखिया ने अपनी सफेद आँख मटकाई और एक गोता लगाकर बोला, ''मेरी पूँछ में सनसनाहट होती है, छोटे मियाँ। इसका मतलब है तूफान मेरे पीछे है। देखो, जब तुम चिपचिपे पानी (उसका आशय भूमध्य रेखा से था) के दक्षिण में होते हो और तुम्हारी पूँछ में सनसनाहट होती है तो इसका मतलब है कि तूफान तुम्हारे सामने की ओर है और तुम्हें उत्तर दिशा में जाना चाहिए। मेरे साथ चलते रहो। यहाँ पानी ठीक नहीं है।''

यह उन बहुत सी बातों में से एक थी, जो कोरिक ने सीखी थीं और सीखने के लिए वह हमेशा तैयार रहता था। मेटका ने समुद्र की भीतरी संरचनाओं में रहनेवाली कॉड और हेलीबट मछलियों का पीछा करके वनस्पति के बीच छिपे उनके घरों से कॉकलिंग हड़प लेना सिखाया था और पानी की सतह से छह सौ फुट नीचे पड़े जहाज के मलबे से किस तरह बचके निकलना; जब पूरे आकाश में बिजली चमक रही हो तो लहरों की पीठ पर कैसे नाचना; और कैसे झपट्टा मारते लंबी टाँगोंवाले अलबेट्रॉस पक्षी और युद्धप्रिय बाज के सामने विनम्रता से अपने फ्लिपर फड़फड़ाना; कैसे एक डॉल्फिन की तरह फ्लिपरों को समेटे और पूँछ टेढ़ी किए पानी की सतह से चार या पाँच फुट तक उछलना; कैसे उड़नेवाली मछलियों की अनदेखी करना, क्योंकि उनमें हड्डियों के सिवाय और कुछ नहीं होता; किस तरह साठ फुट गहरे पानी में पूरी रफ्तार से दौड़ रही कॉड मछली को दबोच लेना और कभी किसी नौका, विशेष रूप से सैलानी नौका या जहाज को रुककर कभी न देखना। छह महीने बाद गहरे समुद्र में मछली का शिकार करने के बारे में कोरिक जो कुछ नहीं जानता था, वह जानने लायक ही नहीं था। उस पूरी अवधि में उसने अपने फ्लिपर जमीन पर नहीं उतारे थे।

अलबत्ता एक दिन जब वह जुआन फर्नांडीज़ द्वीप से कुछ दूर किसी जगह गुनगुने पानी में अर्द्धनिद्रा में लेटा हुआ था, उसने स्वयं को सुस्त और अलसाया सा महसूस किया, जैसा वसंत के आगमन पर मनुष्य महसूस करते हैं। उसे सात हजार मील दूर स्थित नोवास्टोशनाह के सुखद मजबूत समुद्रतट, साथियों के साथ खेले खेल, समुद्री वनस्पति की गंध, सीलों की चिल्ल-पों और उनकी लड़ाइयाँ, ये सब याद आ गए। और उसी मिनट एक स्थिर गति से तैरते हुए वह उत्तर की ओर मुड़ गया। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ा उसे अपने बचपन के बीसियों साथी मिले, जो सभी उसी गंतव्य की ओर जा रहे थे और उन्होंने कहा, ''बधाई हो, कोरिक! इस साल हम सब वरणीय कुँआरों की श्रेणी में आ गए हैं। अब हम लुकानन समुद्र तट की चट्टानों के पास अग्नि-नृत्य कर सकते हैं और नई घास पर खेल सकते हैं। परंतु तुम्हें यह सफेद रंगत कहाँ से मिली?''

कोरिक की काया अब लगभग पूरी तरह सफेद हो चुकी थी। यद्यपि वह उस पर गर्व महसूस करता था, उसने इतना ही कहा, ''तेजी से तैरो! उस जगह पर पहुँचने के लिए मेरी हड्डियाँ तक कसमसा रही हैं।'' इस तरह वे सब उस समुद्रतट पर आ गए, जहाँ उनका जन्म हुआ था और उन्होंने पसरते मुहानों में वरिष्ठ सीलों और उनके पिताओं के लड़ने की आवाजें सुनीं।

उसी रात कोरिक ने एक वर्षीय सीलों के साथ अग्नि-नृत्य किया। गरमियों की रातों में नोवास्टोशनाह से लुकानन तक समुद्र आग से भरा होता है, क्योंकि प्रत्येक सील, जब वह उछलता है, जहाज की तरह ज्वलनशील तेल और आग जैसी एक चमक अपने पीछे छोड़ता है और लहरों पर असंख्य जुगनुओं की रोशनी नाचने लगती है। फिर वे भीतरी भागों में स्थित कुँआरों के मैदानों में चले जाते हैं और जंगली वनस्पति के बीच खूब धमाचौकड़ी मचाते और लंबी समुद्री यात्रा के दौरान अपनी कारगुजारियों की कहानियाँ सुनाते। प्रशांत महासागर के बारे में वे इस तरह बातें करते जैसे वे उसके सभी सदस्यों को जान गए हों। तीन और चार वर्षीय दनदनाते हुए हचिंसंस हिल से उतरते और कहते, ''परे हटो, छोकरो! समुद्र बहुत गहरा है और तुम अभी नहीं जानते कि उसके भीतर क्या-क्या भरा पड़ा है।

कुछ और तजुर्बा हासिल करो। अरे मुन्ना, यह सफेद कोट तुम्हें कहाँ मिला?''

''कहीं से मिला नहीं है,'' कोरिक ने कहा, ''यह अपने आप विकसित हुआ है।'' जैसे ही वह प्रश्नकर्ता को धकियाने के लिए आगे बढ़ा, रेत के टीले के पीछे से काले बालों और लाल मुँहवाले दो आदमी प्रकट हुए। कोरिक जिसने इससे पहले किसी आदमी को नहीं देखा था, खाँसा और सिर झुका लिया। उससे सवाल करनेवाला सील अनचाहे ही तीन-चार गज पीछे हट गया और बैठकर मूर्खों की तरह देखने लगा। वे आदमी और कोई नहीं, द्वीप की सीलों का मुख्य शिकारी कोरिक बूटरिक और उसका बेटा पॅटालेमन थे। वे उस छोटे से गाँव से आते थे, जो नर्सरी से आधा मील दूर भी नहीं था और वे यह तय कर रहे थे कि कौन सी सीलों को कसाईबाड़े की तरफ ले जाया जाए—उन्हें भेड़ों की तरह हँकाला जाता था—बाद में सील की खाल से जैकेट बनाने के लिए।

''हो!'' पॅटालेमन किलककर बोला, ''देखो, एक सफेद सील!''

अपने हैट के नीचे कोरिक बूटरिक का चेहरा लगभग सफेद पड़ गया, क्योंकि वह एक एल्यूट था और एल्यूटी लोग साफ-सुथरे नहीं होते। फिर प्रार्थना की मुद्रा में वह कुछ बुदबुदाने लगा। ''उसे हाथ मत लगाना, पॅटालेमन। जब से—मैं पैदा हुआ हूँ, दुनिया में कोई सफेद सील नहीं रही है। यह शायद बूढ़े ज़हरोफ का भूत है। पिछले साल के भयंकर तूफान में वह लापता हो गया था।''

''मैं उसके पास नहीं जा रहा,'' पॅटालेमन ने कहा, ''वह बुरी बला है। तुम सचमुच सोचते हो कि वह बूढ़े ज़हरोफ की आत्मा है? उसके सीगल के कुछ अंडे मुझ पर उधार हैं।''

''उसकी तरफ देखो भी नहीं,'' कोरिक ने कहा, ''उन चार वर्षीय सीलों के पीछे जाओ। आज तक दो सौ खालों का लक्ष्य था मगर यह मौसम की शुरुआत है और वे लोग इस काम में नए हैं। हम सौ का आँकड़ा तो छू ही लेंगे। जल्दी करो।''

पॅटालेमन ने कुँआरे सीलों के झुंड में आगे खड़े सील के कंधे को भाले की नोक से कोंचा। डर के मारे उन सभी की साँसें रुक सी गईं। फिर वह भाला लहराते हुए झुंड के भीतर तेजी से लपका और उन सभी ने भागना शुरू कर दिया; कोरिक ने उन्हें द्वीप के भीतरी भाग की ओर हँकाला और उन्होंने अपने साथियों के पास जाने की कोशिश तक नहीं की। लाखों सीलें उन्हें हँकाले जाते देख रहे थे, परंतु वे सब अपने-अपने कामों लगे रहे। अकेला कोरिक ही था जो सवाल पूछता था, परंतु उसके साथियों में से कोई भी इसके सिवाय कुछ नहीं बता पाता था कि हर साल छह हफ्ते या दो महीने मनुष्य इसी तरह सीलों को ले जाते रहे हैं।

''यही पता लगाने के लिए मैं उनके पीछे जाऊँगा,'' कोरिक ने कहा और जैसे ही झुंड की दिशा में आगे बढ़ा, पॅटालेमन की आँखें फटी रह गईं।

''वह सफेद सील हमारे पीछे आ रहा है,'' वह चिल्लाया। ''यह पहली बार हुआ है कि कोई सील खुद चलकर कसाईवाड़े की ओर आया हो।''

''शश्शश!पीछे मुड़कर मत देखो,'' कोरिक ने कहा, ''वह ज़हरोफ का भूत है! इसके बारे में मुझे फादर से बात करनी होगी।''

वहाँ से वधस्थल की दूरी केवल आधा मील ही थी, परंतु उसे तय करने में एक घंटा लग गया, क्योंकि कोरिक जानता था कि यदि सीलें ज्यादा तेज चलीं तो उनका शरीर गरम हो जाएगा और फिर उनकी खाल साबुत नहीं, बल्कि टुकड़ों में हासिल होगी। इसलिए, वे सी लायंस नेक, वेबस्टर हाउस से गुजरते हुए बहुत ही धीमे चले जब तक कि साल्ट हाउस न पहुँच गए, जो कि समुद्रतट पर मौजूद सीलों के ओझल होने के तुरंत बाद ही आ गया था। कौतूहल से भरे हाँफते हुए कोरिक ने उनका पीछा किया। उसे ऐसा लगा जैसे दुनिया का अंत आ गया हो, परंतु

उसके पीछे सीलों की नर्सरी से शोरगुल इतनी तेजी से हो रहा था जैसे किसी रेलगाड़ी के सुरंग से निकलते समय होता है। फिर कोरिक एक टीले पर बैठ गया। उसने जेब से एक भारी सी जस्ते से बनी घड़ी में समय देखा और सीलों के झुंड को आधा घंटा विश्राम करने दिया। कोरिक को उसकी टोली के सिरे से ओस की बूँदें टपकने की आवाज आ रही थी। फिर दस या बारह आदमी तीन या चार फीट लंबे लोहे के सरिए हाथों में लिये निकल आए और कोरिक ने झुंड में खड़े एक या दो सीलों की ओर इशारा किया, जिन्हें उनके साथियों ने काट लिया था या किसी वजह से उनका शरीर गरम था और उन आदमियों ने उन्हें वालरस के गले की खाल से बने भारी बूटों से मारकर अलग कर दिया, फिर कोरिक जोर से बोला, ''शुरू हो जाओ!'' तब उन आदमियों ने जितनी तेजी से संभव था, सीलों के सिर पर सरिए बरसाना शुरू कर दिया।

दस मिनट बाद नन्हे कोरिक को अपने दोस्तों को पहचानना मुश्किल था, क्योंकि उनकी नाक से लेकर पिछले फ्लिपर्स तक की खाल निकाल ली गई थी और हड्डियों और मांस को मैदान में एक ढेर पर फेंक दिया गया था। कोरिक के लिए इतना काफी थी। वह मुड़ा और अपनी पूरी ताकत से समुद्र की ओर भागा (एक सील थोड़े समय के लिए बहुत तेज दौड़ सकता है); उसकी नई उगी छोटी-छोटी मूँछें डर से काँप रही थीं। सी लायंस नेक, जहाँ तट पर सी लायंस बैठते हैं, से उसने समुद्र के ठंडे पानी में गोता लगाया था और मुश्किल से साँस लेते हुए पानी में हाथ-पैर मारने लगा। ''यह क्या हो रहा है?'' रुँधे स्वर में एक सी लायन ने पूछा, क्योंकि आदत के मुताबिक सी लायन किसी किस्म का खलल पसंद नहीं करते।

''स्कूचनी!ओचन स्कूचनी'', ''मैं बहुत अकेला महसूस कर रहा हूँ'' कोरिक ने कहा, ''वे लोग समुद्र तटों पर सभी कुँआरे सीलों को मार रहे हैं!''

सी लायन ने अपना मुँह घुमा लिया। ''बकवास,'' उसने कहा, ''हमेशा की तरह तुम्हारे दोस्त गुल-गपाड़ा कर रहे हैं। तुमने कोरिक को उनके कान उमेठते हुए देखा होगा। ऐसा वह पिछले तीस सालों से करता आया है।''

''वह बहुत ही भयंकर दृश्य था,'' कोरिक के यह कहते ही एक विशाल लहर ने उसे अस्थिर कर दिया; अपने आपको सँभालते हुए एक कुशल खिलाड़ी की तरह उसने अपने फ्लिपर्स से एक स्क्रू स्ट्रोक को अंजाम दिया जिसने उसे चट्टान के नुकीले किनारों से महज तीन इंच के फासले पर ला खड़ा किया।

''एक साल के सील के लिए वह एक बढ़िया स्ट्रोक था!'' सी लायन ने कहा, जो अच्छी तैराकी की तारीफ कर सकता था। ''तुम्हारे नजरिए से देखने पर मैं समझ सकता हूँ कि वह सचमुच एक डरावना अनुभव था, लेकिन अगर तुम सील लोग साल-दर-साल इसी तरह यहाँ आते रहे तो यह तय है कि आदमियों को इसका पता चलेगा और जब तक तुम लोग कोई और द्वीप न खोज लो, जहाँ आदमी आते- जाते न हों, तुम्हें हमेशा इसी तरह से हँकाला जाएगा।''

''क्या ऐसा कोई द्वीप है?'' कोरिक ने पूछा।

''मैंने बीस साल तक पॉल्टुओं (हेलीब्ट्स) का पीछा किया है मगर मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने ऐसा द्वीप देखा है। मगर सुनो—तुम बड़ों से कुछ सीख लेनेवाले बच्चे मालूम होते हो—अगर तुम वालरस द्वीपिका जाकर सी विच से बात करो तो? शायद उसे इसका पता हो। तुम्हें इसी वक्त भागने की जरूरत नहीं है। उसके लिए तुम्हें छह मील तैरना होगा और तुम्हारी जगह अगर मैं होता तो पहले तो मैं लेटकर एक अच्छी नींद ले लेता, छोटे मियाँ।''

कोरिक ने भी महसूस किया कि वह एक अच्छी सलाह थी और इसलिए वह तैरकर अपने तट पर चला गया और खुले आसमान के नीचे आधे घंटे तक तबियत से सोया; हाँ, सोते समय उसके बदन में ऐंठन जरूर हुई, जो सीलों को अकसर होती है।

फिर वह सीधे वालरस द्वीपिका जाने के लिए निकल पड़ा, जो नोवास्टोशनाह के लगभग सीधे उत्तर-पूर्व में था तथा नीची चट्टानों और गल पक्षी के घोंसलों से भरा हुआ था और जहाँ वालरस उन्मुक्त घूमते थे।

वह सी विच—एक महाकाय, बदसूरत मोटा, मुहाँसेयुक्त मोटे गले और लंबी सूँड़वाला उत्तरी प्रशांत महासागरीय एक वालरस था, जिसे कोई तहजीब नहीं थी, सिवाय तब के जब वह सो रहा हो और जब कोरिक वहाँ पहुँचा तो अपने पिछले फ्लिपर्स को आधा पानी में और आधा हवा में टाँगे चित पड़ा सो ही रहाथा।

''जागो,'' कोरिक जोर से भौंका, क्योंकि गलपक्षी बहुत शोर मचा रहे थे।

''हा! हा! उफ्! क्या बात है?'' सी विच ने पूछा और अपनी सूँड़ से अगले वालरस को एक करारी चपत लगाकर उसे जगा दिया और उस वालरस ने अपने से अगले और फिर अगले वालरस के साथ ऐसा ही किया जब तक कि वे सभी जाग न गए और सही दिशा को छोड़कर हर तरफ घूरने लगे।

''हाय! यह मैं हूँ,'' पानी के झाग में डूबते-उतराते और एक खड़े घोंघे की तरह दिखाई दे रहे कोरिक ने कहा।

''फिर! मैं क्या अपनी खाल उतारूँ?'' सी विच ने कहा और वे सब कोरिक को इस तरह घूरने लगे जैसे बूढ़े-खूसट लोगों का समूह एक छोटे बच्चे को कौतूहल से देखता हो। कोरिक ने खाल उतारने के बारे में और अधिक सुनने की जरूरत महसूस नहीं की—वह काम उसने कुछ ज्यादा ही देख लिया था। इसलिए उसने सीधे सवाल किया, ''क्या सीलों को जाने के लिए कोई ऐसी जगह मिल सकती है जहाँ आदमी आते-जाते न हों?''

''जाओ और अपने आप ढूँढ़ लो,'' अपनी आँखें बंद करते हुए सी विच ने कहा, ''भाग जाओ यहाँ से। हम सब व्यस्त हैं।''

डॉल्फिन की तरह हवा में उछलते हुए जितनी जोर से कोरिक चिल्ला सकता था, चिल्लाया, ''घोंघे और काई खानेवाले! तू है क्या?'' वह जानता था कि सी विच ने जिंदगी में कभी मछली नहीं पकड़ी थी और वह घोंघों और समुद्री वनस्पति खाकर ही काम चलाता था, यद्यपि वह एक खूँखार प्राणी होने का स्वाँग करता था। स्वाभाविक रूप से गल, किटीवेक्स और पफिन पक्षियों के हुजूम, जो हमेशा किसी के साथ बदतमीजी करने की ताक में रहते थे, ने कोरिक के शब्दों को पकड़ लिया और—लिमरशिन ने मुझे बताया—लगभग पाँच मिनट तक आप वालरस द्वीपिका पर गोली चलने की आवाज भी नहीं सुन सकते थे। वहाँ की सारी आबादी चीख चीखकर कह रही थी, ''काई खानेवाला बूढ़ा खूसट,'' और दाँत भींचते और खाँसते हुए सी विच इधर-से-उधर चक्कर लगा रहा था।

''क्या अब तुम बताओगे?'' कोरिक ने मजा लेते हुए पूछा।

''जाओ और समुद्री गाय से पूछो,'' सी विच ने कहा, ''अगर वह अब भी जीवित है तो वही बता सकेगी।''

''मैं समुद्री गाय को पहचानूँगा कैसे?'' कोरिक ने पूछा।

''समुद्र में वह एक ही जीव है जो सी विच से भी ज्यादा बदसूरत है,'' सी विच की नाक के पास से गोला लगाते गल पक्षी चीखा, ''ज्यादा बदसूरत और ज्यादा बदतमीज।''

गल पक्षियों को चीखता हुआ छोड़कर कोरिक तैरकर वापस नोवास्टोशनाह आ गया। वहाँ पहुँचकर उसने पाया कि सीलों के लिए एक सुरक्षित स्थान की तलाश के लिए उसके द्वारा किए जा रहे प्रयासों से किसी को भी सहानुभूति नहीं थी। उन्होंने उससे कहा कि मनुष्य हमेशा से कुँआरी सीलों को ले जाते रहे हैं—यह उनके रोज के काम का हिस्सा है—और यह कि अगर वह वीभत्स दृश्य नहीं देखना चाहता तो उसे वधस्थल नहीं जाना चाहिए था। परंतु किसी भी अन्य सील ने वास्तव में सीलों को मारे जाते और उनकी खाल उतारते नहीं देखा था तथा उनमें और उसमें यही फर्क था। इसके अतिरिक्त कोरिक एक सफेद सील था।

''तुम्हे जो करना है वो यह है,'' अपने बेटे के साहसिक कारनामों के बारे में सुनकर बूढ़े सी कैच ने कहा, ''बड़े

होकर अपने पिता की तरह एक बड़ा सील बन जाओ और समुद्र तट पर अपनी नर्सरी बनाओ, तब वे तुम्हारी ओर नहीं देखेंगे। अगले पाँच सालों में तुम अपनी लड़ाइयाँ खुद लड़ सकोगे। जाओ, समुद्र में खेलो, कोरिक।'' कोरिक वहाँ से चला गया और भारी मन से अग्नि-नृत्य करने लगा।

उसी वर्ष सरदियों में उसके दिमाग में जो बात घूम रही थी, उसके कारण वह अकेला ही अपने तट से निकल पड़ा। अगर ऐसा कोई प्राणी समुद्र में हो तो वह समुद्री गाय से मिलने और एक ऐसे शांत द्वीप का पता लगाने जा रहा है, जहाँ सीलों के ठहरने लायक अच्छा समुद्र तट हो और जहाँ आदमी उन तक न पहुँच सकें। इसलिए चौबीस घंटों में तीन सौ मील तक तैरकर उसने उत्तरी से लेकर दक्षिणी प्रशांत महासागर पूरा छान डाला। उसे इतने रोमांचकारी अनुभव हुए कि उन सबका बयान करना मुश्किल है। वह धूप सेंकती शार्क, धारियोंवाली शार्क और हेमरहेड का शिकार बनने से बाल-बाल बचा; वह उन सब आवारागर्द जीवों से मिला, जो बदमाशी करते समुद्र में घूमते-फिरते थे; वह भारी किंतु विनम्र मछलियों और सुर्ख लाल धारियोंवाले घोंघों, जो सैकड़ों वर्षों से एक ही स्थान पर बने रहते हैं और उस पर गर्व भी करते हैं, से भी मिला; परंतु उसे समुद्री गाय कहीं न मिली और न वह द्वीप, जिसकी उसे तलाश थी।

जहाँ समुद्रतट अच्छा और ठोस था और साथ ही सीलों के खेलने के लिए तट के पीछे ढलान भी, परंतु वहाँ क्षितिज पर हमेशा व्हेल का शिकार करनेवाले पोतों का शोर रहता था और कोरिक जानता था कि उसका मतलब क्या था? कहीं-कहीं वह देख सकता था कि उस द्वीप में कभी सील आए थे और मारे गए थे और कोरिक जानता था कि आदमी जहाँ एक बार आए हों, वहाँ वे दोबारा भी आ सकते हैं।

वह एक बूढ़े सीधी पूँछवाले अलबॅट्रोस से मिला, जिसने उसे बताया कि अमन-चैन के लिए सबसे बढ़िया जगह थी करग्वेलन द्वीप और जब कोरिक वहाँ गया तो आँधी-तूफान के साथ बादल गरजने और बिजली चमकने के साथ हो रही हिम-वर्षा के कारण वह एक चट्टान से टकराते हुए बाल-बाल बचा। फिर जब तूफान शांत हुआ, वह देख सकता था कि यहाँ भी कभी सीलों की एक नर्सरी रही थी। वह जितने भी द्वीपों में गया, उन सभी में यही बात देखने को मिली।

लिमरशिन ने उन द्वीपों की एक लंबी सूची दी, क्योंकि उसने बताया कि कोरिक ने पाँच वर्षों तक उस द्वीप की खोज की थी, जिनमें से हर वर्ष चार महीने वह नोवास्टोशनाह आकर विश्राम करता था और युवा कुँआरे सील उसका और उसके मनगढ़ंत द्वीपों का मजाक उड़ाया करते थे। वह भूमध्य रेखा पर स्थित भयंकर गरमीवाले एक द्वीप गलापॅगोस भी गया, जहाँ मारे गरमी के लगभग उसके प्राण ही निकल गए थे। वह जॉर्जिया द्वीप समूह, द ऑर्कनीज़, एमेराल्ड द्वीप, लिटिल नाइटिंगेल द्वीप, गफ्स आइलैंड, बूवेट्स आइलैंड, द क्रॉसेट्स और यहाँ तक कि केप ऑफ गुड होप के दक्षिण में स्थित एक लघु द्वीप में भी गया। परंतु हर जगह सागरवासियों ने उससे एक ही बात कही कि किसी समय उन द्वीपों पर सील रहते थे, परंतु इनसानों ने उन सबको मार डाला था। यहाँ तक कि वह प्रशांत महासागर से परे हजारों मील तैरकर केप कॉरिएंटिस नाम की एक जगह पर पहुँचा (यह तब की बात है जब वह गफ्स आइलैंड से वापस लौट रहा था) जहाँ उसने एक चट्टान पर कुछ सौ खजेली सीलों को देखा और उन्होंने बताया कि आदमी वहाँ भी आए थे।

इस बात ने उसका दिल लगभग तोड़ दिया और वह हॉर्न द्वीप का चक्कर लगाते हुए अपने समुद्र तट पर पहुँच गया; फिर उत्तर दिशा में यात्रा करने के दौरान वह एक ऐसे द्वीप में पहुँचा, जो हरियाली से भरा हुआ था। वहाँ उसे एक बहुत ही बूढ़ा सील मिला, जो मरने के करीब था; कोरिक उसके लिए कुछ मछलियाँ लेकर आया और उससे अपनी सारी परेशानियों का जिक्र किया। कोरिक ने कहा, ''मैं वापस नोवास्टोशनाह जा रहा हूँ और अगर

दूसरे कुँआरे सीलों के साथ मुझे भी कसाईवाड़ा ले जाया गया तो भी मुझे परवाह नहीं है।''

उस बूढ़े सील ने कहा, ''एक बार और कोशिश करो। मैं लॉस्ट इनकरी ऑफ मेसाफ्युएरा वंश का आखिरी सील हूँ और जब इनसान लाखों की संख्या में हमें मार रहे थे, समुद्रतटों पर एक कहानी प्रचलित थी कि किसी दिन उत्तरी प्रशांत महासागर से कोई सफेद सील आएगा और सभी सीलों को एक निरापद स्थान में ले जाएगा। मैं बहुत बूढ़ा हूँ और वह दिन देखने के लिए जीवित नहीं रहूँगा मगर दूसरे सील वह दिन देखेंगे। एक बार और कोशिश करो।''

कोरिक ने अपनी मूँछे (जो बहुत सुंदर थी) मरोड़ीं और बोला, ''समुद्रतटों पर अब तक पैदा हुए सीलों में मैं ही एकमात्र सफेद सील हूँ और केवल मैं ही ऐसा, सील हूँ जिसने सीलों के लिए नए द्वीप खोजने के बारे में सोचा तक है।''

इस एहसास से उसका मन खुशी से भर गया और गरमियों में जब वह नोवास्टोशनाह वापस आया तो उसकी माँ मेटका ने उसे शादी करके घर बसाने की प्रार्थना की, क्योंकि अब वह एक सामान्य वरणीय कुँआरा नहीं रह गया था, बल्कि कंधे तक आ गए घुँघराले बालों के साथ अपने पिता की तरह ही एक भीमकाय, आक्रामक और पूर्ण विकसित सी कैच बन गया था। ''मुझे एक मौसम का वक्त और दो माँ,'' उसने कहा, ''और याद रखो कि वह सातवीं लहर होती है, जो तट पर सबसे दूर जाती है।''

एक अनोखी बात यह थी कि एक सील और थी जो यह सोचती थी कि कोरिक की माँ उसकी शादी एक साल के लिए टाल देगी। अपने आखिरी खोज अभियान पर निकलने से पिछली रात पूरे लुकानन तट पर कोरिक ने उसके साथ अग्नि-नृत्य किया। इस बार वह पश्चिम दिशा में गया, क्योंकि वह हेलीबट मछलियों के एक बड़े झुंड के पीछे चला गया था, क्योंकि इतनी बड़ी यात्रा के लिए खुद को फिट रखने के लिए उसे एक दिन में कम-से-कम सौ पौंड मछलियों की खुराक की जरूरत थी। थककर चूर होने तक उसने उनका पीछा किया और फिर ताँबे के द्वीप में एक उभरी हुई सतह पर एक गड्ढे में उकड़ूँ होकर सो गया। उस तट को वह अच्छी तरह जानता था। आधी रात को जब उसने स्वयं को पानी और वनस्पति से हलके से धकियाए जाते महसूस किया तो वह समझ गया कि आज रात तेज ज्वार आया है और उसने पानी के अंदर ही धीरे से अपनी आँखें खोलीं और हाथ-पैर फैलाकर सो गया। फिर जब उसने किसी महाकाय आकृति को पानी में से सिर उठाते और वनस्पति के भारी डंठलों को चबाते देखा तो वह एक बिल्ली की तरह उछलकर खड़ा हो गया।

''मेगेलान के महान् योद्धाओं की कसम!'' अपनी मूँछों के नीचे से उसने कहा, ''उस गहरे समुद्र में ये कौन लोग हैं?''

वे किसी वालरस, सी लायन, सील, भालू, व्हेल, शार्क, मछली, स्क्विड या घोंघे से मिलते-जुलते नहीं थे, जिन्हें कोरिक पहले देख चुका था। वे बीस से तीस फुट लंबे थे और उनके पिछले पैरों पर कोई फ्लिपर्स नहीं, बल्कि एक फावड़ेनुमा पूँछ थी, जो ऐसी लगती थी मानो गीले चमड़े को तराशकर बनाई गई हो। उनके सिर जैसी मूर्खतापूर्ण चीज आपने कभी न देखी होगी और जब वे चर न रही हों, वे गहरे पानी में अपनी पूँछों के जरिए खुद को संतुलित करती थीं और जैसे एक मोटा आदमी अपने हाथ हिलाकर अभिवादन करता है, वैसे एक-दूसरे के सामने झुककर सम्मान प्रकट करती थीं।

''आहम!'' कोरिक ने कहा, ''आपका खेल अच्छा है, महानुभावो?'' उन विशाल जीवों ने झुककर और अपनी पूँछ लहराकर अभिवादन का उत्तर दिया। जब उन्होंने फिर से चरना शुरू किया तो कोरिक ने देखा कि उनके ऊपरी होंठ दो भागों में बँट जाते थे, जिनमें वे लगभग एक फुट का अंतर बना लेते थे और उस अंतर के बीच समुद्री

वनस्पति का एक बड़ा सा गट्ठर आने पर उन जुदा होठों को फिर जोड़ लेते थे। चारे को मुँह में भरकर वे उसे आराम से चबाते रहते थे।

''बड़ा भद्दा तरीका है खाने का,'' कोरिक ने कहा। उन्होंने फिर झुककर सलाम किया और कोरिक को गुस्सा आने लगा। ''बहुत अच्छे,'' उसने कहा, ''अगर तुम्हारे अगले फ्लिपर्स की बनावट में कोई दोष है तो इसका प्रदर्शन करने की जरूरत नहीं है। आप लोग अभिवादन बहुत सलीके से करते हैं, परंतु मैं आपके नाम जानना चाहूँगा।'' उनके होंठ हिले फिर तन गए और काँच की तरह उनकी हरी आँखों ने घूरा पर वे बोले कुछ नहीं।

''तुम्हारी मरजी,'' कोरिक ने कहा, ''मगर मैं जितने भी लोगों से मिला हूँ उनमें सी बिच से भी ज्यादा कुरूप तुम लोग हो और उससे भी ज्यादा बदतमीज।''

उसी क्षण उसे याद आया कि एक वर्ष की आयु में जब वह वालरस द्वीपिका में था, तब वर्गोमास्टर गलपक्षी ने चीखकर उससे क्या कहा था और वह पानी में ही लुढ़क गया, क्योंकि वह जानता था कि आखिरकार उसे समुद्री गाय मिल ही गई।

वे समुद्री गायें वनस्पति को चरने और चबाने में लगी रहीं, जबकि कोरिक ने उनसे उन सभी भाषाओं में सवाल पूछे, जो उसने अपनी यात्राओं के दौरान सीखी थीं; और समुद्री जीव लगभग उतनी ही भाषाएँ बोलते हैं, जितनी मनुष्य बोलते हैं। परंतु समुद्री गाय इसलिए जवाब नहीं दे सकीं कि वे बोलना नहीं जानती थीं। उसके गले में बोलने के लिए जरूरी सात के बजाय छह हड्डियाँ ही होती हैं और समुद्र में यह बात प्रचलित है कि इसी वजह से वे अपने साथियों से भी बात नहीं कर सकती थीं। परंतु जैसा कि आप जानते हैं कि उसके आगे के फ्लिपर्स में एक-एक अतिरिक्त ज्वाइंट है और उसे ही ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ घुमाकर एक अनगढ़ टेलीग्राफिक कोड की तरह वे अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करती हैं।

दिन का प्रकाश होने तक कोरिक के बाल खड़े हो गए और उसका धैर्य जवाब दे रहा था। फिर उन समुद्री गायों ने बहुत ही धीमी चाल से उत्तर दिशा में चलना शुरू कर दिया; बीच-बीच में रुककर वे अपने अटपटे इशारों से सलाह- मशविरा भी करती जाती थीं और यह सोचते हुए कोरिक उनके पीछे चल पड़ा, ''इन जैसे बेवकूफ प्राणी कब के मार दिए जाते अगर उन्हें कोई सुरक्षित स्थान न मिला होता। जो जगह समुद्री गायों के लिए सुरक्षित है, वह सीलों के लिए भी होगी। फिर भी खुदा के लिए, ये लोग जरा तेज चलें।''

उनका पीछा करना कोरिक के लिए एक थका देनेवाला काम था। वह झुंड एक दिन में चालीस या पचास मील से ज्यादा की दूरी नहीं तय कर सकता था; रात में वे खाने के लिए भी रुकते थे और आमतौर पर समुद्रतट के नजदीक ही रहते थे; कोरिक उनके आसपास, उनके ऊपर और उनके नीचे तैरा, परंतु वह उनकी चाल को आधा मील भी बढ़ा नहीं सका। जैसे-जैसे वे उत्तर की ओर आगे बढ़े, इशारों में चलनेवाली उनकी कॉन्फ्रेंसों की संख्या बढ़ती गई। कोरिक अधीरता में अपनी मूँछें चबाने ही वाला था कि उसने देखा कि वे गुनगुने पानी की एक धारा का अनुसरण कर रहे थे और तब उसके मन में उनके प्रति कुछ आदर-भाव पैदा हुआ।

एक रात वे चमकीले पानी से नीचे चली गईं—जैसे एक पत्थर पानी में डूबता है—और जब से वह उनसे मिला था, पहली बार उन्हें तेजी से तैरते हुए देखा। कोरिक ने उनका पीछा किया और उनकी गति देखकर वह दंग रह गया, क्योंकि उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि समुद्री गाय अच्छी तैराक भी हो सकती हैं। वे तट से लगी हुई एक चट्टान की ओर बढ़ीं—एक चट्टान, जो पानी में गहराई तक गई थी—और उन्होंने समुद्र तल से एक सौ बीस फुट नीचे एक अँधेरे गड्ढे में गोता लगाया। वह एक लंबी तैराकी थी और उस अँधेरी सुरंग में से निकलने से पहले उसे बुरी तरह ताजी हवा की जरूरत महसूस हो रही थी।

''बाप रे!'' दूसरे छोर पर मुश्किल से साँस लेते और हाँफते हुए खुले पानी में आकर उसने कहा, ''वह एक लंबा गोला था, परंतु फलदायी भी।''

समुद्री गाय अब झुंड से अलग हो गई थीं और इतने बढ़िया समुद्र तटों से लगी हुई चट्टानों के बीच मजे से वनस्पति चर रही थीं। वहाँ मीलों तक चिकनी चट्टानों का एक सिलसिला था, जो सील नर्सरियों के लिए बिलकुल उपयुक्त था और उनके पीछे ढलान पर खेलने के लिए रेत के मैदान थे; वहाँ लोटने के लिए लंबी घास उगी हुई थी। चढ़ने-उतरने के लिए रेत के टीले थे और सबसे बढ़कर वहाँ के पानी का स्पर्श, जो एक सच्चे सी कैच को कभी धोखा नहीं देता, यह दरशाता था कि कभी कोई मनुष्य वहाँ नहीं पहुँचा था।

सबसे पहला काम जो उसने किया था, वह था उस इलाके में मछलियों की उपलब्धता का पता लगाना और फिर तट के समानांतर तैरते हुए उसके कुहाँसे से आधे ढँके हुए सुंदर रेतीले द्वीप देखे। समुद्र की ओर उत्तर दिशा में ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ थीं, जो किसी जहाज को तट से छह मील के घेरे में आने की गुंजाइश नहीं छोड़ती थीं तथा उन द्वीपों और मुख्यभूमि के बीच गहरे पानी की एक पट्टी थी, जो ऊँची चट्टानों के साथ-साथ चलती थी और इन्हीं चट्टानों के नीचे कहीं पर सुरंग का द्वार था।

''यह तो दूसरा नोवास्टोशनाह है, मगर उससे दस गुना बेहतर,'' कोरिक ने कहा, ''समुद्री गाय उससे कहीं अधिक बुद्धिमान् लगती हैं, जितना मैं उन्हें समझा था। अगर कोई आदमी आए तो भी वह चट्टानों को पार नहीं कर सकता और समुद्र के भीतर खड़ी चट्टानें किसी भी जहाज के टुकड़े-टुकड़े कर देंगी। यदि समुद्र में कोई जगह सुरक्षित है तो वह यही है।''

वह अपनी प्रेमिका के बारे में सोचने लगा, जिसे वह पीछे छोड़ आया था, परंतु यद्यपि वह वापस नोवास्टोशनाह पहुँचने की जल्दी में था, उसने इस इलाके की बारीकी से छानबीन की, ताकि वह सारे सवालों के जवाब दे सके।

उसने गोता लगाया और एक बार फिर से सुरंग का प्रवेश द्वार देखा और फिर तेजी से दक्षिण की ओर आ गया। केवल एक समुद्री गाय या सील ही ऐसी किसी जगह की कल्पना कर सकता था। कोरिक ने जब उन चट्टानों को देखा तो उसे भी विश्वास नहीं हो रहा था कि वह उन्हीं के नीचे से आया है।

घर पहुँचने में उसे छह दिन लग गए, यद्यपि वह धीमे नहीं तैर रहा था; और जब वह सी लायंस नेक चट्टान पर पहुँचा तो सबसे पहले उसकी मुलाकात अपनी प्रेमिका से हुई, जो उसका इंतजार कर रही थी और कोरिक की आँखों में चमक से ही उसने समझ लिया कि आखिरकार उसे अपनी कल्पना का द्वीप मिल ही गया था।

परंतु जब उसने अपनी खोज के बारे में उन्हें बताया तो कुँआरे सील, उसके पिता सी कैच और दूसरे सभी सीलों ने उसका मजाक उड़ाया। उसकी अपनी उम्र के ही एक सील ने कहा, ''ये सब तो ठीक है कोरिक! परंतु न जाने कहाँ से लौटकर तुम हम सबको इस तरह हुक्म नहीं दे सकते। यह याद रखो कि हम अपनी नर्सरीज़ के लिए लड़ते आए हैं और यही काम तुमने अब तक नहीं किया है। उसकी बजाय तुम सारे सागरों की खाक छानते रहे हो।''

इस पर सभी सील हँसने लगे और वह युवा सील अपना सिर एक ओर से दूसरी ओर घुमाने लगा। उसने उसी साल शादी की थी और इस बात पर वह काफी इतराता था।

''मेरे पास कोई नर्सरी नहीं है, जिसके लिए मैं लड़ूँ,'' कोरिक ने कहा, ''मैं तो बस तुम सब लोगों को वह जगह दिखाना चाहता था, जहाँ तुम सब सुरक्षित रहोगे। हमें लड़ने की जरूरत ही क्या है?''

''ओह, अगर तुम लड़ने से बचना चाहते हो तो बेशक मुझे और कुछ नहीं कहना है,'' एक भद्दी सी मुसकान के साथ उस युवा सील ने कहा।

''तुम्हारे साथ लड़ाई में अगर मैं जीत जाऊँ तो क्या तुम मेरे साथ चलोगे?'' कोरिक ने कहा। उसकी आँखों में

एक हरी सी रोशनी चमकने लगी, क्योंकि वह इस बात से बहुत नाराज था कि उसे एक फिजूल की लड़ाई लड़नी पड़ रही थी।

''ठीक है,'' उस युवा सील ने लापरवाही से कहा, ''अगर तुम जीते तो मैं आऊँगा।''

इससे पहले कि वह कुछ सोच पाता, कोरिक उस पर टूट पड़ा था और उसके दाँत उस युवा सील की गरदन की चर्बी में धँस गए थे। फिर वह अपने दुश्मन को घसीटकर तट पर ले गया, उसे झकझोर दिया और एक जोरदार घूँसे के प्रहार से उसे चारों खाने चित कर दिया। फिर सभी सीलों को संबोधित करते हुए कोरिक दहाड़ा, ''पिछले पाँच सालों से तुम लोगों के लिए मैंने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया। मैंने एक ऐसे द्वीप का पता लगाया है जहाँ तुम सब सुरक्षित रहोगे मगर जब तक तुम्हें गरदन से पकड़कर घसीटा न जाए, तुम इस बात पर भरोसा नहीं करोगे। अब यह बात मैं तुम्हारे भेजे में उतारूँगा। सँभालो अपने आपको।''

लिकरशिन ने मुझे बताया कि उसने अपने जीवन में—हर साल दस हजार बड़ी सीलों को लड़ते देखता है—नर्सरी पर धावा बोलते कोरिक के रौद्र रूप जैसी कोई चीज नहीं देखी। किसी सबसे ताकतवर सील को देखकर वह उस पर टूट पड़ता, उसे गले से पकड़ता और उस पर लात-घूँसों की बरसात कर देता और उसे किसी चट्टान पर दे मारता और जब वह दया की भीख माँगने लगता तो उसे एक तरफ फेंककर किसी दूसरे सील पर हमला कर देता। कोरिक ने कभी चार महीनों का उपवास नहीं किया था, जैसा सारे बड़े सील हर साल करते थे और पिछले पाँच सालों में गहरे समुद्रों में किए गए उसके अभियानों ने उसे पूरी तरह चुस्त-दुरुस्त रखा था और सबसे बढ़कर, वह इससे पहले कभी लड़ा नहीं था। गुस्से की वजह से उसके घुँघराले सफेद बाल खड़े हो गए थे, उसकी आँखें अंगारों की तरह जल रही थीं, उसके कुत्ते जैसे दाँत चमक रहे थे और वह बहुत शानदार लग रहा था। वरिष्ठ सी कैच, उसके पिता ने उसे बिजली की तरह झपटते, भूरे सीलों को इस तरह घसीटते मानो वे हेलीबट हों और युवा सीलों को उठा-उठाकर हर दिशा में फेंकते हुए देखा; और बूढ़ा सी कैच अपनी मूँछें मरोड़ते और रेल के इंजन की तरह सीटी बजाते हुए बतख जैसी डगमगाती चाल से उसके पास आया, जबकि मेटका और वह युवती सील, जो कोरिक से शादी करनेवाली थी, दुबक गईं और अपने पुरुष-वर्ग को प्रशंसा भाव से देखने लगीं। वह एक शानदार लड़ाई थी, क्योंकि जब तक एक भी सील बचा था जो सिर उठाने की हिम्मत करता, दोनों बाप-बेटे लड़ते रहे और जब सारा विरोध खत्म हो गया तो दोनों ने साथ-साथ गरजते हुए पूरे समुद्रतट पर अपनी विजय-यात्रा निकाली।

रात में जब कुहासे में से उत्तर दिशा से आनेवाली रोशनियाँ टिमटिमा रही थीं, कोरिक एक सूनी चट्टान पर चढ़ गया और उसने नीचे ध्वस्त नर्सरियों और घायल, कराहते सीलों की ओर देखा। ''अब,'' वह बोला, ''मैंने तुम्हें तुम्हारा सबक सिखा दिया है।''

''तौबा-तौबा!'' अपने आपको मुश्किल से ऊपर चढ़ाते हुए, क्योंकि वह भी बुरी तरह घायल हुआ था, बूढ़े सी कैच ने कहा, ''खूनी व्हेल ने भी इनका यह हाल न बनाया होता। बेटे, मुझे तुम पर गर्व है। इससे भी बढ़कर मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे द्वीप पर आऊँगा—अगर ऐसी कोई जगह है तो।''

''सुनते हो सागर के मोटे सुअरो!समुद्री गाय की सुरंग में मेरे साथ कौन आना चाहता है? जवाब दो, वरना मैं तुम्हें दोबारा सबक सिखाऊँगा,'' कोरिक गरजा।

पूरे समुद्र तट से ज्वार के पानी की तरह धीमा शोर उठा। ''हम आएँगे,'' थकी हुई हजारों आवाजों ने एक साथ कहा, ''हम तुम्हारे पीछे-पीछे आएँगे सफेद सील कोरिक।''

तब कोरिक ने अपना सिर कंधों के बीच धँसा लिया और गर्व से अपनी आँखें बंद कर लीं। अब वह एक सफेद सील नहीं रह गया था, बल्कि सिर से लेकर पूँछ तक लाल हो गया था। अपने घावों की तरफ देखना या उन्हें

सहलाना उसके स्वभाव में नहीं था।

एक हफ्ते बाद कोरिक के नेतृत्व में उसकी सेना (लगभग एक हजार युवा और बूढ़े सील) उत्तर में समुद्री गाय की सुरंग की ओर चल पड़े और जो सीलें नोवास्टोशनाह में ही रह गए थे, उन्होंने उन्हें मूर्ख करार दिया।

परंतु अगले वसंत में जब वे सब प्रशांत महासागर के मछली बहुल तटों पर मिले तब कोरिक के साथ गए सीलों ने समुद्री गायों की सुरंग से आगे अपने नए तटों के बारे में ऐसी-ऐसी कहानियाँ सुनाईं कि और ज्यादा सीलों ने नोवास्टोशनाह तट छोड़ दिया। बेशक, वे सभी एक साथ नहीं गए थे, क्योंकि सील इतने चतुर नहीं होते और अपनी धारणाएँ बदलने में उनको लंबा समय लगता है, परंतु साल-दर-साल ज्यादा-से-ज्यादा सील नोवास्टोशनाह, लुकानन और अन्य नर्सरीज को छोड़कर उन शांत सुरक्षित तटों पर चले गए, जहाँ कोरिक हर साल और बड़ा, मोटा और शक्तिशाली होते हुए सारी गरमियाँ बिता देता था और युवा कुँआरे सील उस सागर में, जहाँ कोई आदमी नहीं आता था, उसके आसपास खेला करते थे।

लुकानन

(यह गहरे सागर से संबंधित वह महान् गाना है, जिसे उस समय सेंट पॉल के सभी सील गाते हैं, जब गरमियों में वे अपने-अपने तटों की ओर लौटते हैं। यह अति उदास सीलों का एक प्रकार का राष्ट्रगान है)

सुबह सुबह
मैं अपने साथियों से मिला
जहाँ चट्टानों से
मदमाती लहरें टकराती थीं
परंतु लुकानन के तटों से
जो बीस लाख सीलों का घर है
एक कोरस उठा, जिसने
महातरंगों के शोर को दबा दिया।
(और यही देखते-सुनते मेरी उम्र गुजर गई है)
नमकीन झीलों की बगल में
सुखद ठिकानों का गान
उन तेज हवाओं का गान,
जो रेत के टीलों को
उलट-पलट देती हैं,
उन मध्य-रात्रि नृत्यों का गान
जो सागर में आग लगा देते हैं,
ऐसे थे लुकानन के तट,
सील हत्यारों के आने से पहले!
सुबह-सुबह मैं अपने साथियों से मिला
(अब कभी शायद मिल न पाऊँ)
शिकारियों की फौज

आई और गई;
सारे तट को अँधेरा कर गई
जहाँ तक आवाज जाती थी
उस फेनिल क्षितिज पर आए
मुसाफिरों का
हमने स्वागत किया
और गाते-बजाते
उन्हें तट पर ले आए।
लुकानन के तट
जहाँ सागर का कुहासा
गेहूँ की, सर्दी की लंबी फसल
और सिकुड़ी हुई बेलों को
भिगो देता है!
हमारे खेल के नरम
और चमकीले मैदान
लुकानन के तट-
हमारे जन्म स्थान!
सुबह-सुबह,
मैं अपने साथियों से मिला
टूटकर बिखर गई एक मंडली से!
आदमी पानी में हम पर
गोली चलाते हैं
और जमीन पर डंडे बरसाते हैं
और कमअक्ल भेड़ों की तरह
हमें हाँक ले जाते हैं,
सॉल्ट हाउस की ओर!
फिर भी हम गाते हैं लुकानन
शिकारियों के आने से पहले
भागो, भागो ओ गूवरूस्का!
दक्षिण की ओर,
और गहरे समुद्र के आकाओं को
हमारी व्यथा कथा सुनाओ;
शार्क के अंडे की तरह खोखले हैं
जीत के ये जश्न,
लुकानन के तट

अपने बच्चों को
पहचान नहीं पाएँगे!

❑

रिकि-टिकि-टावी

उस बिल के पास जाकर
जिसमें वह गायब हो गया था,
लाल आँखोंवाले ने
सिकुड़ी हुई त्वचावाले से कहा,
लाल आँखवाला जो कुछ कहता है
उसे ध्यान से सुन,
''नाग, ऊपर आकर नाचो
मौत के साथ!''
आँख-से-आँख और
सिर-से-सिर की लड़ाई
(हिसाब तू रखना, नाग)
दोनों में से एक मरेगा,
तभी यह लड़ाई खत्म होगी
(तू क्या चाहता है, नाग?)
जोरदार उलट-पलट और
तोड़-मरोड़ होगी,
(भागकर कहीं छुप जा, नाग)
आह! फणिधर बच गया!
(सत्यानाश हो तेरा, नाग!)

यह उस महायुद्ध की कहानी है, जिसे सिगौली छावनी में स्थित एक बड़े बँगले के बाथरूम में रिकि-टिकि-टावी ने अकेले लड़ा था। उस टेलरबर्ड दरजी और छछूँदर चुंद्रा, जो फर्श के बीचो-बीच कभी नहीं चलती, बल्कि हमेशा दीवार के किनारे-किनारे चलती है, ने उसे सलाह दी थी, परंतु असली लड़ाई रिकि-टिकी ने ही की थी।

वह एक नेवला था, उसके रोएँ और पूँछ एक छोटी बिल्ली जैसे, परंतु उसके सिर की बनावट और आदतें बिलकुल वीजल जैसी। उसकी आँखें और उसकी अस्थिर नाक गुलाबी थी। वह अपने अगले या पिछले, किसी भी पैर से अपने शरीर का कोई भी अंग खुजा सकता था। अपनी पूँछ के बालों को वह इतना फैला सकता था मानो वह बोतल साफ करनेवाला ब्रश हो और लंबी घास में से सरपट दौड़ते हुए उसका युद्धनाद था, ''रिक-टिक-टिकि-टिकि-टूचक!''

एक दिन गरमियों में आनेवाली बाढ़ ने उसे अपने बिल, जिसमें वह अपने पिता और माँ के साथ रहता था, से निकालकर सड़क किनारे की एक नाली में पटक दिया। एक बहती हुई टहनी उसके हाथ में आ गई और बेहोश होने से पहले वह उससे चिपट गया। जब उसे होश आया तो उसने खुद को कीचड़ से लिथड़ी हुई हालत में एक बगीचे के पक्के रास्ते में धूप में पाया; एक छोटा सा लड़का कह रहा था, ''अरे, यह बेचारा नेवला तो मर गया। चलो इसे कहीं दफना देते हैं।''

''नहीं,'' उसकी माँ ने कहा, ''इसे घर ले चलते हैं और किसी सूखी और सुरक्षित जगह पर रख देते हैं। शायद वह मरा न हो।''

वे उसे अपने घर ले गए और वहाँ एक बड़े से आदमी ने अपनी उँगली और अँगूठे के बीच उसे उठा लिया और कहने लगा कि वह मरा नहीं था, बस उसकी साँस ठीक से नहीं आ रही थी। इसलिए उन्होंने उसे रूई से ढँक दिया और उसे आग से कुछ दूर रख दिया। कुछ देर बाद उसने आँखें खोलीं और छींका।

''अब,'' उस भारी भरकम आदमी (वह एक अंग्रेज था, जो अभी-अभी ही इस बँगले में रहने के लिए आया था) ने कहा, ''उसका डर दूर होने दो और हम देखते हैं कि वह क्या करता है।''

किसी नेवले को डराना दुनिया का सबसे मुश्किल काम है, क्योंकि नाक से लेकर पूँछ तक वह जिज्ञासा से भरा होता है। नेवला बिरादरी का उसूल होता है, ''दौड़ो और पता लगाओ।'' रिकि-टिकि एक सच्चा नेवला था। उसने ऊनी रूई को देखा और यह तय किया कि वह खाने लायक नहीं थी, टेबल के चारों ओर दौड़ा, फिर बैठकर अपने फर को सँवारा, पंजों से अपना बदन साफ किया; फिर कूदकर उस छोटे से बच्चे के कंधे पर चढ़ गया।

''टेडी, डरना मत,'' उसके पिता ने कहा, ''दोस्ती करने का उसका यही तरीका है।''

''आउच! वह मेरी ठुड्डी के नीचे गुदगुदी कर रहा है,'' टेडी ने कहा।

रिकि-टिकि ने लड़के की शर्ट के कॉलर और गरदन के बीच नीचे झाँका, उसके कान को सूँघा, फिर उतरकर फर्श पर बैठ गया और टेबल के पाए से अपनी नाक रगड़ने लगा।

''देखो तो,'' टेडी की माँ ने कहा, ''वह एक जंगली जीव है! मैं समझती हूँ हमने उसकी मदद की है, इसीलिए हमारे साथ इतना सौम्य है।''

''सभी नेवले ऐसे ही होते हैं,'' उसके पति ने कहा, ''अगर टेडी उसे पूँछ से पकड़कर न उठाए या पिंजरे में बंद न करे तो वह सारा दिन घर के अंदर और बाहर आता-जाता रहेगा। चलो, हम उसे कुछ खाने के लिए देते हैं।''

उन्होंने उसे कच्चे मांस का एक टुकड़ा दिया। रिकि-टिकि ने उसे बड़े चाव से खाया, फिर बाहर बरामदे में जाकर धूप में बैठ गया और अपने रोएँ फैला लिए, ताकि वे जड़ों तक सूख जाएँ। तब उसने बेहतर महसूस किया।

''मेरा परिवार सारी जिंदगी में जितना जान सकता है, उससे कहीं ज्यादा जानने लायक इस घर में है। यह तय है कि यहीं रहूँगा और पता लगाऊँगा।'' उसने अपने आपसे कहा।

उसने सारा दिन पूरे घर में घूमकर बिताया। बाथ-टब में उसने खुद को लगभग डुबा ही लिया था; लिखने की मेज पर अपनी नाक स्याही में डाल दी और उस विशाल आदमी की सिगार के जलते हुए सिरे से अपनी नाक जला बैठा, क्योंकि यह देखने के लिए कि लिखा कैसे जाता है, वह उसकी गोद में बैठ गया था। रात होने पर यह देखने के लिए कि मिट्टी के तेल में जलनेवाली लालटेन कैसे जलाई जाती है, वह टेडी के कमरे में चला गया और टेडी के सो जाने के बाद वह भी उसी बिस्तर पर चढ़ गया। परंतु वह एक बेचैन साथी था, क्योंकि पूरी रात, कहीं भी कोई आवाज होने पर उसका स्रोत जानने के लिए उसे बार-बार उठना पड़ता था। सोने से पहले टेडी के माता-पिता उसके कमरे में आए तो देखा कि टेडी की बगल में उसके तकिए पर रिकि-टिकि बैठा हुआ था। ''यह बात मुझे पसंद नहीं है,'' टेडी की माँ ने कहा, ''वह बच्चे को काट सकता है।'' ''वह ऐसा कुछ नहीं करेगा, पिता ने कहा, उस छोटे-से जानवर के साथ हमारा टेडी उससे कहीं ज्यादा सुरक्षित है, जितना वह एक खूँखार कुत्ते की निगरानी में होता। अगर उसके कमरे में कोई साँप घुस आए''

परंतु टेडी की माँ ने ऐसी किसी अशुभ बात को सुनने से इनकार कर दिया।

सुबह-सुबह टेडी के कंधे पर सवार होकर रिकि-टिकि नाश्ते के लिए बरामदे में आ गया और उन्होंने उसे एक केला और उबले हुए अंडे दिए। वह एक के बाद एक उन सभी की गोद में बैठा, क्योंकि हर सुपोषित नेवले को हमेशा एक घरेलू नेवला बनने और घूमने-फिरने के लिए एक बड़े से मकान में रहने की उम्मीद होती है और रिकि-

टिकि की माँ (वह सिगौली में जनरल के बँगले में रहती थी) ने बहुत सावधानी से उसे बताया था कि एक गोरे आदमी से सामना होने पर क्या करना चाहिए।

फिर यह देखने के लिए कि वहाँ देखने लायक क्या था, रिकि-टिकि बाहर बगीचे में चला गया। वह एक बड़ा बगीचा था, जिसका केवल आधा भाग ही विकसित किया गया था, बाकी आधे भाग में ऊँची घनी झाड़ियाँ, गुलाब, नींबू और संतरे के पेड़, बाँस के पेड़ों के झुरमुट और दूर तक फैली ऊँची घास थी। रिकि-टिकि ने अपने होंठों पर जीभ फेरी। ''यह तो बड़ा शानदार शिकार-क्षेत्र है,'' उसने कहा और इस विचार-मात्र से उसकी पूँछ के बाल खड़े हो गए, यहाँ-वहाँ सूँघते हुए वह बगीचे के चक्कर लगाता रहा, जब तक कि एक कँटीली झाड़ी से उसे रोने की आवाजें सुनाई न दीं।

वह टेलरबर्ड दरजी और उसकी पत्नी थी। उन्होंने दो बड़ी पत्तियों को जोड़कर और उनके किनारों की सिलाई करके उनके भीतर की खाली जगह को रूई और गिरे हुए बालों और रेशों से भरकर एक सुंदर घोंसला बनाया था। घोंसला हवा से आगे-पीछे झूल रहा था और उसके किनारे पर बैठकर वे रो रहे थे।

''बात क्या है?'' रिकि-टिकि ने पूछा।

''हम बड़े अभागे हैं,'' दरजी ने कहा, ''कल हमारा एक बच्चा घोंसले से बाहर गिर गया और नाग उसे खा गया।''

''हूँ!'' रिकि-टिकि ने कहा, ''यह बड़े दुःख की बात है—मगर इस जगह पर मैं नया हूँ। नाग कौन है?''

जवाब दिए बिना दरजी और उसकी पत्नी घोंसले में दुबक गए, क्योंकि झाड़ी के नीचे जमीन पर उगी घनी घास में एक दबी हुई सी फुफकार सुनाई दी—एक भयानक निर्दय आवाज, जिसे सुनकर रिकि-टिकि उछलकर पूरे दो फुट पीछे हट गया। फिर घास में से इंच-दर-इंच एक बड़े काले नाग का सिर निकला और उसने अपने फन फैला दिए—जीभ से लेकर पूँछ तक वह पाँच फुट लंबा था। जब उसने अपने शरीर का एक तिहाई भाग जमीन से उठा दिया था, ठीक डेंडेलियन पौधे के गुच्छ की तरह अपने शरीर को आगे-पीछे करके उसने अपना संतुलन बनाए रखा और उसने साँप की कुटिल आँखों, जो हर स्थिति में एक जैसी रहती हैं और उसके इरादों का पता नहीं चलने देतीं, से रिकि-टिकि की ओर देखा।

''नाग कौन है?'' उसने कहा, ''मैं हूँ नाग। साक्षात् ब्रह्मा ने हम सबके माथे पर तिलक लगाया था, जब दुनिया के पहले नाग ने भगवान् ब्रह्मा, जब वे सो रहे थे, को धूप से बचाने के लिए अपने फन फैला दिए थे। उसे देखो और डरो!''

उसने अपना फन पहले से भी ज्यादा फैला लिया और रिकि-टिकि ने उसके पीछे स्पष्ट रूप से वह चिह्न देखा, जो कुछ खुले हुए एक छल्ले की तरह दिखाई देता था। एक मिनट के लिए तो वह डर गया, परंतु एक नेवले के लिए ज्यादा देर तक भयभीत रहना असंभव था और यद्यपि इससे पहले रिकि-टिकि का सामना एक जीवित नाग से कभी नहीं हुआ था। उसकी माँ ने उसे कई मरे हुए साँप खिलाए थे और वह जानता था कि एक वयस्क नेवले का जीवन में काम ही यही था; साँपों से लड़ना और उन्हें मारकर खा जाना। नाग भी यह बात जानता था और अपने कठोर दिल की गहराई में वह डरा हुआ था।

''अच्छा!'' रिकि-टिकि ने कहा और उसकी पूँछ फिर फैलने लगी, ''निशान हो या न हो पर क्या तुम किसी घोंसले से एक पक्षी के बच्चे को खा जाना ठीक समझते हो?''

नाग कुछ सोच रहा था और साथ ही रिकि-टिकि के पीछे घास में होनेवाली हर छोटी-से-छोटी हलचल पर भी उसकी नजर थी। वह जानता था कि बगीचे में किसी नेवले के होने का मतलब देर-सवेर उसकी और उसके परिवार

की मौत थी, परंतु वह रिकि-टिकी को असावधान स्थिति में देखना चाहता था। इसलिए उसने अपने सिर को थोड़ा झुकाया और एक तरफ कर लिया।

''चलो, हम बात कर लेते हैं,'' उसने कहा, ''तुम अंडे खाते हो तो मुझे पक्षी क्यों नहीं खाने चाहिए?''

''पीछे देखो! अपने पीछे देखो!'' दरजी ने गाकर कहा।

रिकि-टिकी ने देखने में अपना समय बरबाद नहीं किया। वह जितनी ऊपर उछल सकता था, हवा में उछला और उसके ठीक नीचे से नाग की दुष्ट पत्नी नागिन सरसराती हुई निकल गई। जब वह बात कर रहा था, उसका काम तमाम करने के लिए वह चुपके से उसके पीछे आ गई थी। रिकि-टिकि ने उसकी जोरदार फुफकार सुनी, हालाँकि उसका वार खाली गया था। वह लगभग नागिन की पीठ पर नीचे आया और यदि वह एक वयस्क नेवला होता तो जानता कि वही एक बढ़िया मौका था जब वह उसकी पीठ में अपने दाँत गड़ा उसने सकता था, परंतु वह उसके कातिलाना पलटवार से डरता था। असल में उसने काटा था मगर उसके दाँत गहरे नहीं गए थे और वह उसकी लहराती पूँछ से बचते हुए कूदा था और काट लिए जाने के बाद नागिन गुस्से से पागल हो रही थी।

''दुष्ट, पाजी दरजी!'' उस कँटीली झाड़ी पर बने घोंसले को लक्ष्य बनाकर अपनी पूरी शक्ति से उछलते हुए नाग ने कहा। परंतु दरजी ने साँपों को ध्यान में रखकर ही वह घोंसला बनाया था और वह सिर्फ हिलकर रह गया।

रिकि-टिकि की आँखें अंगारे जैसी लाल हो रही थीं (अगर किसी नेवले की आँखें लाल हो जाएँ तो समझो वह गुस्से में है)। वह अपनी पूँछ और पिछले पैरों पर एक नन्हे कँगारू की तरह गुस्से से चारों ओर देखने लगा। परंतु नाग और नागिन घास में कहीं गायब हो गए थे। जब किसी साँप का वार खाली जाता है, वह कभी कुछ नहीं कहता, न अपने इरादों की भनक तक लगने देता है। रिकि-टिकि ने उनका पीछा करना ठीक नहीं समझा, क्योंकि उसे भरोसा नहीं था कि वह एक ही समय में दो साँपों का मुकाबला कर पाएगा। इसलिए वह घर के पास बने कच्चे रास्ते पर चला गया और बैठकर सोचने लगा। उसके लिए यह एक गंभीर मामला था।

यदि आप प्राकृतिक इतिहास की पुरानी पुस्तकें पढ़ें तो आप उनमें यह लिखा पाएँगे कि जब नेवला साँप से लड़ता है और साँप द्वारा काट लिया जाता है तो वह दौड़कर कोई जड़ी-बूटी खा लेता है और ठीक हो जाता है। यह सच नहीं है। जीत का दारोमदार आँखों और पैरों की तीव्र प्रतिक्रिया पर है—साँप का वार और नेवले की कूद पर—और चूँकि कोई आँख वार करते साँप के फन पर लगातार नजर नहीं रख सकती, उनकी लड़ाई कमोबेश बराबर की हो जाती है। रिकि-टिकि जानता था कि अभी वह एक नौसिखिया लड़ाका है और यह सोचकर उसे और भी ज्यादा खुशी हुई कि पीछे से आई नागिन के वार से उसने खुद को बचा लिया था। इस एहसास से उसमें आत्मविश्वास जगा और जब टेडी उस कच्चे रास्ते से दौड़कर उसके पास आया तो वह दुलराए जाने के लिए तैयार था।

परंतु उसे उठाने के लिए जैसे ही टेडी झुका, जमीन पर धूल में कोई चीज सरकी और एक बहुत ही धीमी आवाज आई, ''सावधान! मैं मौत हूँ!'' यह धूल में रेंगनेवाला धूसर रंग का सपोला क्रेट था और उसका काटा भी उतना ही घातक था, जितना एक नाग का काटा। परंतु वह इतना छोटा है कि कोई उस पर ध्यान नहीं देता और इसलिए वह लोगों को ज्यादा हानि पहुँचाता है।

रिकि-टिकि की आँखें फिर से लाल हो गईं और अपने अनोखे झूलते, लहराते अंदाज में वह क्रेट के ऊपर इस तरह नाचा, जैसा उसने अपने पुरखों से सीखा था। देखने में वह बहुत हास्यास्पद लगता है, परंतु यह एक इतनी परिपूर्ण संतुलित मुद्रा है कि उस स्थिति से आप किसी भी ओर छलाँग लगा सकते हैं और साँपों से निपटने के लिए वह बहुत उपयोगी है। काश रिकि-टिकि को पता होता कि वह नाग से लड़ने से भी ज्यादा खतरनाक काम कर रहा

था, क्योंकि क्रेट इतना छोटा है और इतनी तेजी से पलट सकता है कि जब तक रिकि ने उसके सिर के पीछे बहुत नजदीक अंग पर दाँत न गड़ाएँ हों, क्रेट का पलटवार सीधे उसकी आँख या होंठ पर आ सकता था, परंतु रिकि को यह पता नहीं था। उसकी आँखें लाल थीं और उचित स्थान पर दाँत गड़ाने के लिए वह आगे-पीछे हो रहा था। क्रेट ने वार किया। रिकि एक तरफ उछला और उसने फिर भिड़ने की कोशिश की मगर धूसर रंग के उस छोटे से दुष्ट प्राणी ने उसके कंधे पर वार कर दिया और उसे क्रेट के ऊपर से कूदना पड़ा और क्रेट ने नजदीकी से उसका पीछा किया।

घर की ओर देखते हुए टेडी चिल्लाया, ''ओह! जरा इधर देखो! हमारा नेवला एक साँप को मार रहा है।'' रिकि-टिकि ने टेडी की माँ की चीख सुनी। उसके पापा एक डंडा लेकर बाहर दौड़े, परंतु जब तक वे वहाँ पहुँचते, क्रेट उछलकर दूर जा चुका था। रिकि-टिकि भी उछला, उस साँप के ऊपर कूदा, अपने सिर को अगले पैरों के बीच से नीचे ले गया और क्रेट की पीठ के जितना संभव था, उतने ऊपरी भाग को अपने दाँतों के बीच उसने कस कर दबाया और पलट गया। उस दंश ने क्रेट का संघर्ष समाप्त कर दिया और अपने परिवार के डिनर के तरीके के अनुसार पूँछ से शुरू करके उसे खाने ही वाला था कि उसे याद आया कि भरपेट भोजन एक नेवले को सुस्त बना देता है और अगर उसे चुस्त-दुरुस्त रहना है तो मोटा होने से बचना होगा।

धूल में नहाने के लिए वह अरंडी की झाड़ियों के नीचे चला गया, जबकि टेडी के पिता उस मरे हुए क्रेट को डंडे से पीट रहे थे। ''अब उससे क्या फायदा?'' रिकि-टिकि ने सोचा, ''मैंने तो सब कुछ कर ही दिया था।'' फिर टेडी की माँ ने उसे धूल में से उठाया और अपनी गोद में ले लिया। वह रोते-रोते कह रही थी कि उसने टेडी को मौत से बचा लिया था और टेडी के पिता ने कहा, यह सब विधि का विधान था और टेडी भयभीत आँखों से देखता रहा। निश्चय ही ये सब भावनात्मक उद्गार रिकि-टिकि की समझ से बाहर थे, बल्कि उन पर उसे मन-ही-मन हँसी आ रही थी। आज तो टेडी की माँ उसके धूल में खेलने पर भी शायद उसे दुलारती। आज रिकि खूब मौज में था।

उस रात डिनर टेबल पर मदिरा के प्यालों के बीच घूमते हुए वह चाहता तो मजेदार व्यंजनों से अपना पेट रोज के मुकाबले तीन गुना भर लेता। परंतु उसे नाग और नागिन याद आ गए, यद्यपि उसे टेडी की माँ का दुलार और टेडी के कंधे पर बैठना बहुत अच्छा लग रहा था, कभी-कभी उसकी आँखें लाल हो जाती थीं और उसका लंबा युद्धनाद ''रिक-टिक-टिकि-टिकि-ट्च'' शुरू हो जाता था।

टेडी उसे अपने साथ बिस्तर पर ले गया और वह चाहता था कि रिकि-टिकि उसके सीने पर ही सो जाए। सलीकेदार रिकि उसे कभी काट या खरोंच नहीं सकता था, परंतु जैसे ही टेडी को नींद आई, वह अपनी रात्रिकालीन गश्त पर निकल पड़ा; अँधेरे में उसे दीवार के किनारे-किनारे चलती चुचुंद्रा छछूँदर मिल गई। चुचुंद्रा एक छोटा सा जीव है, जिसका दिल टूटा हुआ है। इसी उधेड़बुन में कि वह कमरे के बीच में से जाए या न जाए, वह चिंचियाती हुई सारी रात घूमती रहती है। परंतु वह ऐसा कभी कर नहीं पाती।

''मुझे मत मारो,'' लगभग रोते हुए चुचुंद्रा बोली, ''रिकि-टिकि, मुझे मत मारो।''

''तुम समझती हो साँप को मारनेवाला जीव किसी छछूंदर को मारेगा?'' रिकि-टिकि ने हिकारत से कहा।

''जो साँपों को मारते हैं, वे साँपों के हाथों मारे भी जाते हैं,'' और भी ज्यादा दु:खी होते हुए चुचुंद्रा ने कहा, ''मैं यह कैसे कह सकती हूँ कि किसी अँधेरी रात में तुम्हारे धोखे में नाग मुझे ही पकड़ नहीं लेगा?''

''इस बात से तुम बेफिक्र रहो,'' रिकि-टिकि ने कहा, ''नाग बगीचे में है और मैं जानता हूँ कि तुम वहाँ नहीं जातीं।''

''मेरे चचेरे भाई चूहे ने मुझे बताया—'' चुचुंद्रा कहते-कहते रुक गई।

''क्या बताया?''

''शश्श्श! नाग सब जगह है, रिकि-टिकि। तुम्हें बगीचे में ही चूहे से बात कर लेनी चाहिए थी।''

''मैंने नहीं की—इसलिए तुम बताओ। जल्दी, चुचुंद्रा, नहीं तो मैं तुम्हें काट लूँगा।''

चुचुंद्रा बैठकर तब तक रोती रही, जब तक कि उसके आँसू ढुलककर उसके होंठों तक न आ गए। ''मैं बहुत गरीब प्राणी हूँ,'' उसने सिसकते हुए कहा, ''कमरे के बीच तक जाने की मेरी कभी हिम्मत नहीं हुई। शश्श्श! मुझे तुमसे कुछ भी नहीं कहना चाहिए। तुम सुन रहे हो न, रिकि-टिकि?''

रिकि-टिकि कान लगाकर कुछ और सुनने की कोशिश कर रहा था। घर बिलकुल खामोश था, परंतु उसके विचार से वह दुनिया की सबसे धीमी सरसराहट भी सुन सकता था—खिड़की के शीशे पर चलती हुई मक्खी की आवाज तक—ईंटों से बने रास्ते पर साँप के शल्कों की सूखी सरसराहट।

''वह नाग होगा या नागिन,'' उसने अपने आप से कहा, ''और वह बाथरूम की नाली में से अंदर आ रहा है। तुम ठीक कहती हो, चुचुंद्रा, मुझे चूहे से बात कर लेनी चाहिए थी।''

वह चुपके से टेडी के बाथरूम में गया, परंतु वहाँ कुछ नहीं था; फिर टेडी की माँ के बाथरूम में गया। बाथरूम की चिकनी दीवार के तल में से बाथवाटर की निकासी के लिए वहाँ से एक ईंट हटा दी गई थी और जैसे ही रिकि-टिकि बाथटब की बगल से होकर उस छिद्र के पास पहुँचा, उसने बाहर चाँद की रोशनी में नाग और नागिन को खुसफुस करते हुए सुना।

''जब यह घर इनसानों से खाली हो जाएगा,'' नागिन ने अपने पति से कहा, ''उसे यहाँ से जाना पड़ेगा और तब बगीचा फिर से हमारा हो जाएगा। खामोशी से अंदर जाओ और याद रखना उस ऊँचे-पूरे आदमी, जिसने क्रेट को मारा है, को सबसे पहले काटना है। फिर बाहर आकर मुझे बताना, उसके बाद हम रिकि-टिकि का शिकार करेंगे।''

''परंतु क्या तुम्हें पक्का भरोसा है कि इनसानों को मारने से हमें कुछ फायदा होगा?'' नाग ने कहा।

''फायदा-ही-फायदा!जब इस बँगले में कोई इनसान नहीं था तब क्या बगीचे में कोई नेवला था? जब तक यह बँगला इनसानों से खाली है, हम दोनों बगीचे के राजा और रानी हैं। यह याद रखना कि तरबूज के खेत में जब हम अंडे सेएँगे (और यह कल भी हो सकता है), हमारे बच्चों को शांति और स्थान की जरूरत होगी।''

''इस बारे में मैंने नहीं सोचा था,'' नाग ने कहा, ''मैं जाऊँगा मगर बाद में रिकि-टिकि का शिकार करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं उस ऊँचे पूरे आदमी और उसकी पत्नी को और यदि संभव हुआ तो बच्चे को भी मार डालूँगा और चुपके से निकल आऊँगा। फिर बँगला खाली हो जाएगा और रिकि-टिकि चला जाएगा।''

यह सुनकर गुस्से और नफरत से रिकि-टिकि के तन-बदन में आग लग गई और तभी नाली के रास्ते नाग का सिर भीतर आया और उसके पीछे उसका पाँच फुट लंबा ठंडा शरीर। गुस्से से भरे रिकि ने उस विशाल नाग का आकार देखा तो वह बहुत डर गया। नाग ने कुंडली मारी, अपना सिर उठाया और अँधेरे में बाथरूम का निरीक्षण किया, रिकि उसकी आँखों की चमक देख सकता था।

''अब अगर इसे मैं यहीं मार देता हूँ तो नागिन को पता चल जाएगा और अगर मैं खुले फर्श पर इसका मुकाबला करता हूँ तो यह लाभ की स्थिति में होगा। मैं करूँ तो क्या करूँ?'' रिकि-टिकि ने खुद से कहा।

नाग आगे-पीछे लहराया और रिकि-टिकि ने सबसे बड़े जार, जो टब को भरने के काम आता था, में से उसके पानी पीने की आवाज सुनी। ''पानी अच्छा है,'' साँप ने कहा, ''अब, जब क्रेट मारा गया था, उस ऊँचे पूरे आदमी के पास एक डंडा था। अब भी उसके पास वह डंडा हो सकता है मगर जब वह सुबह नहाने के लिए आएगा,

उसके पास डंडा नहीं होगा। उसके आने तक मैं यहाँ इंतजार करूँगा। नागिन—क्या तुम सुन रही हो?—सुबह होने तक मैं इस ठंडी जगह पर इंतजार करूँगा।''

बाहर से कोई जवाब नहीं आया, इसलिए रिकि-टिकि समझ गया कि नागिन चली गई थी। पानी के जार के पास एक उठी हुई जमीन पर एक कुंडली बनाते हुए नाग कुंडली मारकर बैठ गया और रिकि-टिकि मौत जैसी खामोशी के साथ खड़ा रहा। एक घंटे बाद धीरे-धीरे खिसकते हुए वह जार की तरफ बढ़ा। नाग सोया हुआ था; रिकि-टिकि ने उसकी लंबी भारी पीठ की ओर देखा और अंदाजा लगाने लगा कि दाँत गड़ाने के लिए पीठ का कौन सा भाग उपयुक्त रहेगा। अगर अपने पहले ही वार में मैंने उसकी पीठ नहीं तोड़ी, रिकि ने कहा, ''वह लड़ता रहेगा। और अगर वह लड़ा तो—ओ, रिकि, तेरा क्या होगा! उसने उसके फन के नीचे गरदन की मोटाई देखी, परंतु वह उसके बस से बाहर था और उसकी पूँछ में दाँत गड़ाने से वह और भी भयंकर हो जाएगा।''

''उसका सिर ही सबसे सही जगह है,'' अंतत: उसने कहा, ''फन से ऊपर का सिर। और एक बार दाँतों के बीच आने पर उसे छोड़ना नहीं है।''

फिर वह कूदा। नाग का सिर पानी के जार से जरा हटकर उसकी उठी-उठी हुई गोलाई के नीचे; रिकी ने मिट्टी से बने उस लाल जार को पीछे जाकर जरा सा खिसका दिया, ताकि उसके सिर की हलचल में कुछ बाधा आए। इससे उसे बस एक सेकेंड का लाभ मिला और उसने उस लाभ का पूरा फायदा उठाया। जैसे ही उसने नाग का सिर अपने मुँह में लिया, नाग ने हड़बड़ाकर उसे अपनी लंबाई से लपेट लिया और दोनों गुत्थमगुत्था होकर जमीन पर कई बार उलट-पलट हो गए और उसी संघर्ष में वे दोनों उछलकर एक बास्केट, जिसमें प्रसाधन का सामान जैसे टूथ पेस्ट, ब्रश आदि रखे थे, से जा टकराए और जोर की आवाज करती हुई ये सब चीजें नीचे आ गिरीं। उसे ऐसा लगा कि टब और दीवारों से टकरा-टकराकर उसकी जान निकल जाएगी और उसने अपने दाँत और कसकर दबा दिए, ताकि उसके मर जाने के बाद कम-से-कम दाँत टूटने की शर्म से बच सके। उसके सारे बदन में दर्द हो रहा था, चक्कर आ रहे थे और उसके पीछे से जब बिजली कड़कने जैसी आवाज आई तो उसे लगा कि उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे। एक गरम हवा ने उसे बेसुध कर दिया और आग से उसके रोएँ झुलस गए। शोर सुनकर टेडी का पिता जग गया था और उसने अपनी दोनाली बंदूक से नाग के फन के पिछले हिस्से को शूट कर दिया था।

अपनी आँखें बंद किए रिकि-टिकि साँस रोककर बैठा रहा, क्योंकि अब उसे यकीन हो गया था कि वह मर चुका है। वह जड़ हो चुका था; तभी उस ऊँचे पूरे आदमी ने उसे गोद में उठा लिया और बोला, ''यह तो अपना नेवला ही है, एलिस! इस नन्हे प्राणी ने इस बार हमारी जान बचाई है।''

फिर डर से सफेद चेहरा लिए टेडी की माँ वहाँ आई और उसने नाग का क्षत-विक्षत शरीर देखा; रिकि-टिकि किसी तरह टेडी के शयनकक्ष तक पहुँचा और बाकी बची रात के आधे समय वह अपना बदन हिलाकर तसल्ली करता रहा कि उसके चालीस टुकड़े नहीं हुए हैं, जैसा कि उसे लगता था।

सुबह होने पर भी वह सदमे में ही था, परंतु साथ ही उसे अपने किए पर खुशी भी थी। ''अब नागिन से निबटना बाकी है, परंतु वह पाँच नागों से भी ज्यादा खतरनाक होगी और कोई नहीं जानता कि अपने जिन अंडों के बारे में वह बता रही थी, वे कब परिपक्व होंगे। तौबा-तौबा! मुझे जाकर दरजी से मिलना चाहिए,'' उसने कहा।

नाश्ते का इंतजार किए बिना रिकि-टिकि दौड़कर उस कँटीली झाड़ी की ओर गया, जहाँ ऊँची आवाज में दरजी विजय-गान गा रहा था। नाग की मौत की खबर पूरे बगीचे में फैल चुकी थी, क्योंकि सफाई कर्मचारी ने उसके मृत शरीर को कूड़े के ढेर पर फेंक दिया था।

''ओह, परों का गुच्छा, तू मूर्ख प्राणी,'' रिकि-टिकि ने गुस्से से कहा, ''यह कोई गाने का वक्त है?''

‘‘नाग मर गया-मर गया,’’ दरजी गाता रहा। ‘‘बहादुर रिकि-टिकि ने उसे सिर से पकड़ा और जकड़े रहा। वह विशाल आदमी अपना धमाकेदार डंडा लेकर आया और नाग के दो टुकड़े हो गए! अब वह मेरे बच्चों को कभी नहीं खा पाएगा।’’

‘‘यह सब सही है मगर नागिन कहाँ है?’’ उसके आसपास ध्यान से देखते हुए रिकि-टिकि ने पूछा।

‘‘नागिन ने बाथरूम की नाली के पास आकर नाग को आवाज दी थी,’’ दरजी ने कहा, ‘‘मगर नाग तो एक डंडे के सिरे पर लटका हुआ बाहर आया—सफाई कर्मचारी ने डंडे के सिरे से उसे उठाया और कूड़े के ढेर पर फेंक दिया। मुझे महान्, लाल आँखोंवाले रिकि-टिकि के बारे में गाने दो।’’ दरजी ने खँखारकर गला साफ किया और फिर गाने लगा।

‘‘अगर मैं तेरे घोंसले की ऊँचाई तक पहुँच सकता तो मैं खुद तेरे बच्चों को बाहर फेंक देता!’’ रिकि-टिकि ने कहा, ‘‘तू सही वक्त पर सही काम करना नहीं जानता। तू यहाँ अपने घोंसले में सुरक्षित है मगर मेरे लिए यह धर्मयुद्ध है। एक मिनट के लिए गाना बंद कर, दरजी।’’

‘‘अपने महान्, खूबसूरत रिकि-टिकि की खातिर मैं बंद करता हूँ,’’ दरजी ने कहा, ‘‘क्या बात है, ओ, भयंकर नाग का वध करनेवाले?’’

‘‘मैं तीसरी बार पूछ रहा हूँ, नागिन कहाँ है?’’

‘‘अस्तबल के पास, कूड़े के ढेर पर नाग के लिए आँसू बहाती हुई। सफेद दाँतोंवाले मेरा महान् रिकि-टिकि।’’

‘‘मेरे सफेद दाँतों को छोड़ो!क्या तुमने कभी सुना है कि वह अपने अंडे कहाँ रखती है?’’

‘‘बाउंड्रीवॉल के आखिरी छोर पर, जहाँ तरबूज उगे हैं और पूरे दिन धूप रहती है। कई हफ्ते पहले उसने वहाँ छिपा दिए थे।’’

‘‘तूने कभी यह बात मुझे बताने लायक नहीं समझी?दीवार के आखिरी छोर पर, तूने कहा?’’

‘‘रिकि-टिकि, तुम उसके अंडे खाने तो नहीं जा रहे?’’

‘‘खाने तो नहीं जा रहा। और दरजी, अगर तुझमें जरा सी भी अक्ल है तो तू अस्तबल तक जाएगी और यह नाटक करेगी कि तेरा एक पंख टूट गया है; फिर तुझे चट कर जाने के लिए नागिन तेरे पीछे-पीछे इस झाड़ी तक आ जाएगी। मुझे तरबूज के खेत में जाना तो है मगर मैं अभी वहाँ गया तो वह मुझे देख लेगी।’’

उस छोटे से पक्षी दरजी की अक्ल उसके परों में थी और उसके दिमाग में एक बार में एक ही विचार टिक सकता था। सिर्फ इसलिए कि नागिन के बच्चे भी उसी के बच्चों की तरह अंडों में से निकलते थे, वह उन्हें मारना ठीक नहीं समझता था। परंतु उसकी पत्नी समझदार थी और वह जानती थी कि नाग के अंडों का मतलब था बाद में और नाग पैदा होना। इसलिए दरजी को अपने बच्चों का खयाल रखने और नाग की मौत पर अपना गाना जारी रखने के लिए कहकर वह घोंसले से उड़ गई। दरजी कई बातों में आदमियों की तरह ही था। अपने पंख फड़फड़ाती हुई वह कूड़े के ढेर पर नागिन के सामने रोने लगी, ‘‘ओह, मेरा पंख टूट गया है!’’ उस घर के लड़के ने मेरी ओर एक पत्थर फेंका और मेरा पंख तोड़ दिया। फिर वह और भी बदहवास होकर फड़फड़ाने लगी।

नागिन ने अपना सिर उठाया और फुफकारते हुए बोली, ‘‘मैं जब रिकि-टिकि को मारने ही वाली थी कि तुमने उसे सावधान कर दिया था। लँगड़ी होने के लिए सचमुच तुमने एक बुरा स्थान चुना है।’’ धूल में से गुजरकर वह दरजी की पत्नी की ओर आगे बढ़ी।

‘‘उस दुष्ट लड़के ने पत्थर मारकर मेरा पंख तोड़ दिया!’’ दरजी की पत्नी चीखी।

‘‘कोई बात नहीं! मरने के बाद तुम्हें इस बात की तसल्ली तो रहेगी कि मैंने उस लड़के से तुम्हारा बदला ले

लिया है। आज सुबह से मेरा पति कूड़े के इस ढेर पर पड़ा है, लेकिन रात होने से पहले इस घर का लड़का बिलकुल बेजान पड़ा होगा। तुम्हें अब भागने से कोई फायदा नहीं। यह निश्चित है कि मैं तुम्हें पकड़ लूँगी। नन्ही बेवकूफ! मेरी तरफ देख।''

दरजी की पत्नी होशियार थी कि उसने ऐसा नहीं किया, क्योंकि एक पक्षी जो साँप की आँखों में देखता है, डर के मारे जड़ हो जाता है। दरजी की पत्नी फड़फड़ाते हुए रोती-बिलखती रही, परंतु उसने कभी जमीन नहीं छोड़ी और नागिन ने अपनी चाल तेज कर दी।

रिकि-टिकि ने अस्तबल से उनके चलने की आवाज सुनी और उसने दीवार के आखिर में तरबूज के छोटे से खेत की तरफ दौड़ लगाई। वहाँ तरबूज की बेल के गुच्छों के बीच उसने बहुत चालाकी से छिपाए हुए लगभग बेंटम पक्षी के अंडों के आकार के, परंतु सीपिया के बजाय कुछ ज्यादा सफेदी लिये हुए, पच्चीस अंडे देखे।

''मैं बिलकुल सही समय पर आया,'' उसने कहा, क्योंकि वह अंडों के छिलकों के भीतर नन्हे नागों को कुंडली मारे बैठा देख सकता था, और वह जानता था कि उन अंडों को सेते ही उनमें से हर एक नाग-शिशु एक आदमी या नेवले को मार सकता था। उसने अपने दाँतों से उन अंडों के ऊपरी भाग तोड़ दिए और नन्हे नागों को कुचल दिया; साथ ही वनस्पति के गुच्छों को उलट-पलटकर देखता रहा कि कोई अंडा उससे छूट तो नहीं गया है। अंत में, केवल तीन अंडे बचे थे और रिकि-टिकि मुसकराया जब उसने दरजी की पत्नी को चीखते सुना, ''रिकि-टिकि! मैं नागिन को घर की ओर ले आई और वह बरामदे की तरफ गई है, और—ओह, जल्दी आओ—वह किसी को मारने पर तुली हुई है।''

रिकि-टिकि ने दो अंडे कुचल दिए और तीसरा अंडा अपने मुँह में लेकर तेजी से बरामदे की ओर भागा। सुबह के नाश्ते के लिए टेडी, उसकी माँ और पिता डाइनिंग टेबल के इर्द-गिर्द बैठे थे, परंतु रिकि-टिकि ने देखा कि वे खा नहीं रहे थे। वे पत्थर की तरह जड़वत् बैठे थे और उनके चेहरे सफेद थे। टेडी की कुरसी के पास कालीन पर कुंडली मारे नागिन बैठी हुई थी, जहाँ से टेडी के नंगे पैर को आसानी से निशाना बनाया जा सकता था; विजय-गान गाती हुई, वह अपने फन को आगे-पीछे कर रही थी।

''उस लंबे-चौड़े आदमी के बेटे, जिसने नाग को मारा है,'' फुफकारते हुए उसने कहा, वैसे ही बैठे रहना। अभी मैं तैयार नहीं हूँ। थोड़ा सा इंतजार करो। और तुम तीनों, बिलकुल खामोश बैठे रहना! तुममें से कोई भी हिला तो मैं काट लूँगी और यदि न हिले तो भी काटूँगी। ओ, मूर्ख लोगो, मेरे नाग को किसने मारा''

टेडी की आँखें अपने पिता पर जमी हुई थीं और वह फुसफुसाने के सिवाय कुछ नहीं कर पा रहा था, ''टेडी शांत बैठो। तुम्हें हिलना नहीं है। टेडी, शांत बैठे रहो।''

तब रिकि-टिकि आया और चिल्लाकर बोला, ''पीछे मुड़कर देख, नागिन। मुड़ और मुकाबला कर।''

''चल, तू भी सही वक्त पर आया,'' अपनी नजरें हटाए बिना नागिन ने कहा, ''मगर अभी तो मैं इनसे हिसाब बराबर करूँगी। अपने दोस्तों की ओर देख रिकि-टिकि। डर के मारे उनकी घिग्घी बँधी हुई है। वो हिलने की भी हिम्मत नहीं कर सकते, और तूने एक कदम भी आगे बढ़ाया तो मैं डस लूँगी।''

''तू पहले जाकर अपने अंडों की खबर ले,'' रिकि-टिकि ने कहा, ''दीवार के नजदीक तरबूज के खेत में। जा और देखकर आ, नागिन!''

वह विशाल नागिन आधी मुड़ी और उसने बरामदे में अपने अंडे को पड़ा देखा। ''आह, उसे मुझे दे दो,'' उसने कहा।

रिकि-टिकि ने अपने दोनों पंजे अंडे के दोनों तरफ जमा दिए; उसकी आँखें सुर्ख लाल हो चुकी थीं। ''एक साँप

के अंडे की कीमत क्या है?एक नन्हे नाग की?एक नन्हे राजसी नाग की?तेरे आखिरी जीवित अंडे की? तरबूज की उन क्यारियों के बीच बाकी के उन कुचले हुए अंडों को चीटियाँ खा रही होंगी।''

अपने उस अकेले जीवित अंडे की खातिर सबकुछ भूलकर नागिन अब पूरी तरह घूम गई। रिकि-टिकि ने बिजली की चपलता से टेडी के पिता के बड़े से हाथ निकलते, टेडी को उठाकर ऊँची डाइनिंग टेबल पर रखते हुए देखा, जहाँ वह नागिन की पहुँच से दूर, सुरक्षित था।

''फँस गई! फँस गई! रिक्क-टिक्क-टिक!'' रिकि-टिकि खुशी से चिल्लाया, ''अब लड़का सुरक्षित है और वह मैं था, जिसने पिछली रात बाथरूम में नाग के फन को पकड़ा था।'' फिर वह अपना सिर जमीन की ओर किए चारों पैरों से उछलने लगा। ''उसने झटककर मुझे आगे-पीछे फेंकने की कोशिश की थी मगर वह खुद को छुड़ा न सका। उस विशाल आदमी के फायर से दो टुकड़े हो जाने से पहले ही वह मर चुका था। मैंने उसे मारा था। रिकि-टिकि-टिक-टिक! फिर आओ नागिन! मेरे साथ लड़ो। तुम ज्यादा दिनों तक विधवा नहीं रहोगी।''

नागिन ने देखा कि वह टेडी को मारने का मौका खो चुकी थी और उसका अंडा रिकि-टिकि के पंजों के बीच था। ''मुझे वह अंडा दे दो, रिकि-टिकि। वह मेरा आखिरी अंडा मुझे दे दो और मैं यहाँ से चली जाऊँगी और फिर कभी वापस नहीं आऊँगी,'' अपना फन नीचे करते हुए वह बोली।

''हाँ, तुम जाओगी और कभी वापस नहीं आओगी, क्योंकि तुम भी अपने नाग के साथ कूड़े के उस ढेर पर जाओगी। लड़, विधवा!वह विशाल आदमी अपनी बंदूक लेने के लिए गया है। लड़!''

अपनी अंगारों जैसी जलती आँखों के साथ रिकि-टिकि उसे वार करने का मौका न देते हुए उसके चारों ओर उछल रहा था। नागिन ने पोजीशन ली और उस पर टूट पड़ी। रिकि-टिकि पीछे की ओर ऊपर उछला। नागिन ने बार-बार वार किया और हर बार उसका सिर बरामदे की पतली, सख्त कालीन पर 'धक' की आवाज के साथ और वह घड़ी की खोली गई स्पिंग की तरह बार-बार फिर कुंडली मारकर वार करने की मुद्रा में बैठ जाती। तब रिकि-टिकि ने उसके पीछे आने के लिए तेजी से उसके चारों ओर चक्कर लगाया और अपना सिर उसके सिर के सामने रखने के लिए नागिन भी बिजली की चपलता के साथ घूमी और इस प्रक्रिया में फ्लोरमैट पर उसकी पूँछ के सरसराने की तेज आवाज आई, जैसे हवा में उड़ती सूखी पत्तियों की आती है।

इस दौरान वह अंडे के बारे में भूल ही गया था। वह अब भी बरामदे में पड़ा था तथा नागिन उसके और ज्यादा पास आती गई जब तक कि अंत में, जब रिकि-टिकि अपनी साँसों पर काबू पा रहा था, उसने अंडे को मुँह में रखा, बरामदे की सीढ़ियों की ओर मुड़ी और एक तीर की तरह बाहर की ओर भागी, रिकि-टिकि उसके पीछे था। जब एक नाग अपनी जान बचाने के लिए भागता है तो वह घोड़े की पीठ पर पड़नेवाले चाबुक की तेजी से भागता है।

रिकि-टिकि जानता था कि उसे पकड़ना ही होगा, नहीं तो सारी मुसीबतें फिर से खड़ी होंगी। वह सीधे उस कँटीली झाड़ी के आसपास उगी लंबी घास की ओर भागी, जहाँ उसका पीछा करते रिकि-टिकि को अब भी दरजी पक्षी के उस मूर्खतापूर्ण विजय-गान की आवाज आ रही थी। परंतु दरजी की पत्नी ज्यादा बुद्धिमान् थी। वह अपने घोंसले से निकली और उसने सरपट दौड़ती नागिन के सिर के ऊपर अपने पंख फड़फड़ाए। अगर दरजी ने मदद की होती तो वे दोनों मिलकर उसे फिर से घर की ओर ले जाने की कोशिश करते। फिर भी, कुछ पलों के ही इस व्यवधान से रिकि-टिकि नागिन तक पहुँच गया और जैसे ही वह अपने बिल में घुसी, जहाँ वह नाग के साथ रहती थी, उसकी पूँछ पर रिकि-टिकि के छोटे सफेद दाँत धँस गए और वह भी नागिन के साथ नीचे बिल में चला गया और बहुत कम नेवले, चाहे वे कितने भी अनुभवी और बुद्धिमान क्यों न हों—एक नाग के बिल में घुसकर उसका मुकाबला करने की सोचते! बिल में अँधेरा था और रिकि-टिकि यह अंदाज भी नहीं लगा सकता था कि किस बिंदु

पर वह इतना चौड़ा हो जाएगा कि नागिन पलटकर उस पर वार कर सके। उसने नागिन की पूँछ पर कसकर दाँत गड़ाए रखे और उस उष्ण, नमीयुक्त ढलान पर उतरने की गति में ब्रेक लगाने के मकसद से उसने अपने चारों पैर फैला लिए।

जब बिल के प्रवेश-मार्ग के आसपास की घास हिलनी बंद हो गई तो दरजी ने कहा, ''रिकि-टिकि अब गया काम से! अब हमें उसका मरण-गीत गाना होगा। बहादुर रिकि-टिकि मर गया! क्योंकि जमीन के नीचे नागिन उसे यकीनन मार देगी।''

इसलिए उसने एक बड़ा दर्द-भरा गीत गाना शुरू कर दिया, जिसे उसने उसी वक्त रचा था और जैसे ही वह उस गीत के मर्मस्पर्शी भाग तक पहुँचा, घास फिर हिली और धूल-मिट्टी से ढँका हुआ रिकि-टिकि अपनी मूँछों को चाटता हुआ निढाल सा बाहर निकला। एक हलकी सी चीख के साथ दरजी ने गाना बंद कर दिया। रिकि-टिकि ने अपने बालों पर से कुछ धूल झाड़ी और छींका। ''सब ठीक हो गया,'' उसने कहा, ''वह विधवा अब कभी बाहर नहीं आएगी।'' और घास की परतों के बीच रहनेवाली लाल चींटियों ने उसकी आवाज सुनी और यह देखने के लिए कि वह सच कह रहा था या नहीं, एक-एक करके धीरे-धीरे उनकी फौज बिल में उतर गई।

रिकि-टिकि घास पर उकड़ूँ होकर लेट गया और वहीं सो गया—और देर दोपहर तक सोता रहा, क्योंकि वह बहुत भारी काम करके लौटा था।

''अब,'' जागने पर उसने कहा, ''मैं घर वापस जाऊँगा। ठठेरा और दरजी पक्षियों को कह दो। वे सारे बगीचे में खबर कर देंगे कि नागिन मर चुकी है।''

ठठेरा एक ऐसा पक्षी है जो हू-ब-हू ऐसी आवाज निकालता है जैसी एक ताँबे के घड़े पर छोटी सी हथौड़ी से चोट करने पर आती है। उसके ऐसा करने का कारण है उसका सार्वजनिक उद्घोषक होना, जो हर भारतीय बगीचे में पाया जाता है और वह हर तरह की खबरें प्रसारित करता रहता है। जैसे ही रिकि-टिकि उस रास्ते पर आगे बढ़ा, उसने एक नन्ही डिनर-साँग की तरह उसकी ''कृपया ध्यान दीजिए'' की आवाज और फिर लगातार ''डिंग डोंग-टॉक! नाग मर गया है—डोंग। नागिन मर गई है! डिंग-डोंग-टॉक'' सुनी। इस घोषणा के बाद बगीचे के सारे पक्षी चहचहाने लगे और सारे मेंढक टर्राने लगे, क्योंकि नाग और नागिन मेंढक और नन्हे पक्षी खा जाया करते थे।

जब रिकि घर पहुँचा, टेडी, टेडी की माँ (उसका चेहरा अब भी बहुत सफेद नजर आ रहा था, क्योंकि उसे बेहोशी के दौरे आते रहे थे) और टेडी के पिता बाहर आए और उससे लिपटकर रोने लगे। उस रात रिकि को जो कुछ भी दिया गया था, उसने भरपेट खाया और टेडी के कंधे पर ही सो गया—जब टेडी की माँ देर रात अपने बेटे को देखने के लिए आई, रिकि तब भी वहीं सो रहा था।

''इसने हमारी और टेडी की जान बचाई,'' उसने अपने पति से कहा, ''जरा सोचो, इसने हम सबकी जान बचाई है।''

एक झटके के साथ रिकि-टिकि जाग गया—नेवलों की नींद हलकी होती है।

''ओह, यह आप हैं,'' उसने कहा, ''आप किस बात की चिंता करती हैं? सभी नाग मर चुके हैं। और नहीं भी मरते तो मैं हूँ ना।''

रिकि-टिकि को खुद पर गर्व करने का हक था। परंतु वह ज्यादा अहंकारी भी नहीं बना और उस बगीचे की उस तरह से देखरेख की जैसे एक नेवले को करनी चाहिए—कूद-फाँद से, नुकीले दाँतों से, जब तक कि उस बगीचे की चार दीवारी के भीतर किसी नाग ने कभी अपना फन उठाने की हिम्मत नहीं की।

दरजी का राग

(रिकि-टिकि-टावी के सम्मान में गाया गया)
अपनी खुशियों को दुगुनी करता
मैं हूँ एक अनोखा गायक दरजी
मुझे नाज है अपनी रागिनियों पर,
उन घोंसलों पर, जो मैंने सिए हैं,
जिस जतन और मेहनत से,
मैं अपनी धुनें बनाता हूँ
उसी जतन और मेहनत से
अपने आशियाने भी गढ़ता हूँ।
अपने चूजों को फिर गाना सुनाओ
उनकी अम्मा! सिर उठा के फिर से
जियो शान से!
जीना दूभर कर रखा था
जिस दुष्ट ने
वह अब मरा पड़ा है।
बगीचे में मँडरानेवाली मौत
खुद मर चुकी है।
गुलाब की झाड़ियों में छिपा आतंक
अब निस्तेज है—
गोबर के ढेर पर फेंक दिया गया, मुर्दा!
कौन है हमारा मुक्तिदाता?
बताओ उसका नाम और पता
बहादुर, सच्चा रिकि,
जलती आँखोंवाला टिकि,
नुकीले सफेद दाँतोंवाला
जलती आँखोंवाला शिकारी
रिकि-टिकि-टावी!
दुम के पर फैलाए, झुककर
पक्षियों का आभार
उस तक पहुँचाओ।
बुलबुल के लफ्जों में
उसकी शान में कसीदे गाओ।
नहीं, उसकी वीर-गाथा
मैं खुद सुनाऊँगा

सुनो! उस लंबी, झबरी पूँछवाले
बहादुर की गाथा मैं खुद सुनाऊँगा।
(यहाँ रिकि-टिकि-टावी ने व्यवधान डाला था और गीत का बाकी भाग दुनिया के सामने नहीं आ पाया।)

❑

हाथियों का तुमईर्

रस्सियों और जंजीरों से
मैं तंग आ गया हूँ,
मैं याद करूँगा कि मैं क्या था,
अपनी पुरानी शक्ति को
जंगल में बिताए दिनों को
मैं याद करूँगा।
गन्ने के एक गट्ठर की खातिर,
मैं अपनी पीठ आदमी को नहीं बेचूँगा :
अपने जैसों के साथ,
माँदों में रहनेवाले
जंगली जीवों के साथ
मैं बाहर निकलूँगा
मैं दिन ढलने तक
या अगली सुबह तक वापस आऊँ
फैसला मेरा होगा
निर्मल हवा के झोंकों का
मैं आनंद लूँगा,
स्वच्छ जल में
देर तक क्रीड़ा करूँगा
अपने टखनों में बँधे
भारी छल्लों की परवाह न कर,
मैं अपने खूँटे उखाड़ फेंकूँगा
अपने प्रियजनों, बचपन के साथियों से
मैं फिर मिलूँगा
नुकीला अंकुश चुभोने के लिए
कोई मालिक मेरी पीठ पर न होगा!

काला नाग ने सैंतालीस साल तक हर उस तरह भारत सरकार की सेवा की थी जैसे एक हाथी को करनी चाहिए और जब वह पकड़ा गया था, वह अपनी उम्र के बीस बरस पूरे कर चुका था; उसका मतलब है कि अब वह लगभग सत्तर साल का होगा—एक हाथी की पकी हुई उम्र। उसे याद था कि कैसे बंदूकों के बल पर, उसके सिर पर चमड़े का एक पैड रखकर उसे ले जाया गया था और यह घटना 1842 के अफगान युद्ध से पहले हुई थी—तब तक उसमें एक हाथी की पूरी शक्ति नहीं आई थी।

उसकी माँ राधा प्यारी, जो उसी अभियान में काला नाग के साथ ही पकड़ी गई थी, ने काला नाग को तब कहा था जब उसके दूध के दाँत भी नहीं निकले थे कि जो हाथी डरते हैं वे ही तकलीफ पाते हैं। काला नाग जानता था कि वह सलाह सही थी, क्योंकि जब उसने पहली बार गोला फटते हुए देखा था तो वह चीखकर पीछे राइफलों के

ढेर पर गिर गया था और उसके नाजुक अंगों में संगीनें चुभ गई थीं। इसलिए, पच्चीस बरस का होने से पहले उसने डरना छोड़ दिया था और इसीलिए भारत सरकार की सेवा में वही सबसे प्यारा और जतन से रखा जानेवाला हाथी था। उत्तरी भारत के पहाड़ी भागों में चले अभियानों के दौरान उसने बारह सौ पौंड वजन के टेंट्स को ढोया था। भाप से संचालित एक क्रेन के जरिए उसे एक समुद्री जहाज पर चढ़ाकर, कई दिनों की यात्रा के बाद सागर पार भारत से बहुत दूर एक विचित्र चट्टानी देश में ले जाया गया था, जहाँ उसकी पीठ पर तोपों की ढुलाई की गई थी। उसने मगडाला में सम्राट थियोडोर को मृत पड़े हुए देखा था और उस स्टीमर में, जैसा सैनिकों ने बताया, उसे वापस लाया गया, जो एबिसीनियाई वार मेडल का हकदार था। दस साल बाद अली मसजिद नामक एक जगह पर उसने संगी हाथियों को सरदी, मिरगी, भूख और लू से मरते देखा था। उसके बाद उसे हजारों मील दक्षिण में स्थित मोलमीन के टिंबरयार्ड्स में शीशम की लकड़ी के बड़े-बड़े गट्ठों की ढुलाई के लिए ले जाया गया। वहाँ उसने एक अधीनस्थ युवा हाथी, जो अपने हिस्से के काम से बचना चाहता था, को अधमरा कर दिया था।

उसके बाद उसे लकड़ी की ढुलाई के काम से हटाकर अन्य कई हाथियों के साथ, जो इस काम के लिए प्रशिक्षित किए गए थे, गारो पहाड़ियों में जंगली हाथियों को पकड़ने में मदद करने के काम पर लगा दिया गया। भारत सरकार द्वारा बहुत कड़ाई से हाथियों का रखरखाव किया जाता है। एक पूरा विभाग उनका पीछा करने, पकड़ने और उनका बँटवारा करके देश के विभिन्न स्थानों, जहाँ उनकी जरूरत है, पर भेजने के सिवाय कुछ नहीं करता।

कंधे तक काले नाग की ऊँचाई दस फुट थी और उसके बाहरी दाँतों को काटकर पाँच फुट लंबा कर दिया गया था। उनके सिरों पर ताँबे का आवरण चढ़ा दिया गया था, ताकि वे टूटे नहीं, परंतु अपने उन ठूँठों से भी वह उन अप्रशिक्षित हाथियों, जिनके दाँत कुदरती और नुकीले थे, से ज्यादा कुछ कर सकता था। उस पूरे पहाड़ी इलाके में बिखरे हुए हाथियों को एक निश्चित स्थान तक लाने के लिए हफ्तों की सतर्क मेहनत के बाद जब चालीस या पचास मतवाले जंगली हाथी पेड़ों के मोटे तनों से बने गेट में से एक बड़े घेरे में धकेल दिए जाते तब काला नाग आदेश मिलने पर उस भीषण शोर-शराबे और अफरा-तफरी के बीच (आमतौर पर रात के समय जब टॉर्चों की जलती-बुझती रोशनी जंगली हाथियों को दूरी का सही अंदाजा नहीं लगाने देती) घुस जाता और उस पैक में सबसे तगड़े और उत्पाती हाथी को अपने सधे हुए बदन से दो-चार बार जमकर धक्का देकर उसे शांत कर देता, जबकि दूसरे हाथियों पर बैठे आदमी छोटे हाथियों को रस्सियों और जंजीरों से जकड़ देते।

लड़ने की कला में ऐसी कोई बात नहीं थी, जिसे अनुभवी काला नाग नहीं जानता था, क्योंकि अपने समय में उसने एक से अधिक बार एक घायल शेर के हमले का मुकाबला किया था और अपनी मृदु सूँड़ को ऊपर मोड़कर सुरक्षित रखते हुए सिर को थोड़ा टेढ़ा करके हवा में ही उस उछलते हुए बाघ की बगल में ऐसा प्रहार किया था कि वह बल खाकर कई फुट दूर जा गिरा था—इस दाँव का उसने खुद आविष्कार किया था—फिर अपना चट्टान जैसा घुटना बाघ के बदन पर रख दिया था जब तक कि एक असहाय चीख के साथ उसकी जान न निकल गई थी और वहाँ जमीन पर दबी-कुचली धारियोंवाली कोई गुदगदी चीज के सिवाय कुछ न बचा था, जिसे काला नाग ने मरे बाघ की पूँछ से पकड़कर एक तरफ कर दिया था।

''हाँ,'' उस नीग्रो तुमई, जो उसे अबीसीनियो ले गया था, के बेटे और हाथियों के तुमई, जिसने उसे पकड़े जाते देखा था, के पोते, उसके महावत बड़े तुमई ने कहा, ''काला नाग दुनिया में किसी से नहीं डरता, सिवाय मेरे। उसने उसे पालते-पोसते हमारी तीन पीढ़ियों को देखा है और हमारी चौथी पीढ़ी भी देखेगा।''

''वह मुझसे भी डरता है,'' बदन पर केवल एक छोटा सा मैला कपड़ा लपेटे, चार फुट ऊँचे नन्हे तुमई ने कहा।

वह दस वर्ष का था और बड़े तुमई का सबसे बड़ा बेटा। परंपरा के अनुसार बड़ा होने पर काले नाग की गरदन पर वही अपने पिता का स्थान लेगा और लोहे के उस भारी अंकुश का इस्तेमाल करेगा, जिसे उसके पिता, दादा और परदादा ने इस्तेमाल कर-करके चिकना सा बना दिया था।

वह जानता था कि वह क्या कह रहा था, क्योंकि वह काले नाग के साए में ही पैदा हुआ था। चलना सीखने से पहले उसकी सूँड़ के सिरे से खेला था, चलना सीखने के कुछ समय बाद ही उसे पानी पिलाने ले जाता और काला नाग पतली आवाज में दिए गए उसके छोटे-मोटे आदेशों की अवज्ञा करने की सोच भी नहीं सकता था, जैसे उस दिन भी वह उस बच्चे को मारने के बारे में सोच भी नहीं सकता था जब बड़ा तुमई गेहुँआ रंग के उस बालक को उसके दाँतों पर बिठाकर ले गया था और उसे सामने खड़ा करके काला नाग को अपने भावी स्वामी को सलाम करने का आदेश दिया था।

''हाँ,'' नन्हे तुमई ने कहा, ''वह मुझसे डरता है,'' और लंबे-लंबे डग भरता हुआ वह काला नाग के पास गया, उसे ''मोटे बूढ़े सुअर'' कहकर पुकारा और उसे एक के बाद एक अपना पैर उठाने का आदेश दिया।

''वाह!'' नन्हे तुमई ने कहा, ''तू तो एक बड़ा हाथी है,'' घुँघराले बालोंवाले अपने सिर को हिलाते हुए उसने अपने पिता के शब्द दोहराए। ''सरकार भले ही पैसा देती हो मगर इन हाथियों पर असल में हम महावतों का अधिकार चलता है। काला नाग जब तू बूढ़ा हो जाएगा, कोई धन कुबेर राजा आएगा और तेरे आकार और सलीकों के कारण तुझे सरकार से खरीद लेगा और फिर अपनी पीठ पर सोने से जड़ा हौदा रखे और अपनी पीठ के दोनों ओर सोना जड़ा हुआ एक लाल कपड़ा लटकाए तुझे अपने सोने के कुंडलों से ज्यादा वजन नहीं उठाना पड़ेगा और राजा के विशाल जुलूसों में ठाठ से आगे-आगे चलना होगा। फिर काला नाग एक चाँदी का अंकुश लिये मैं तेरी गरदन पर बैठूँगा और हाथों में सुनहरी छड़ियाँ लिये हुए लोग यह चिल्लाते हुए हमारे आगे-आगे दौड़ेंगे, ''राजा के हाथी के लिए रास्ता छोड़ो। उस समय बहुत मजा आएगा काला नाग! मगर इतना नहीं, जितना यहाँ जंगल में शिकार करने में आता है।

''ओफ्!'' बड़े तुमई ने कहा, ''तू अभी बच्चा है और भैंस के एक बछड़े की तरह नटखट। इन दुर्गम पहाड़ियों में ऊपर-नीचे दौड़ते फिरना कोई सबसे बढ़िया सरकारी नौकरी नहीं है। मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ और मैं जंगली हाथियों को प्यार नहीं करता। मुझे तो करीने से रखी गई ईंटों के बीच के सीधे रास्तोंवाले परिसर, उन्हें सुरक्षित रूप से बाँधने के लिए मजबूत खूँटे और इन अनगढ़ अस्थायी कैंपों की जगह चौड़ी-समतल सड़कें चाहिए। अहा, कानपुर के बैरक कितने अच्छे थे! बाजार भी नजदीक था और दिन में केवल तीन घंटों का काम।''

बाल तुमई को कानपुर हाथीशाला के बारे में याद था, परंतु वह कुछ नहीं बोला। वह कैंप-जीवन को बहुत बेहतर समझता था और अब चौड़ी, समतल सड़कों से नफरत करता था, जहाँ चारे के लिए रोज जंगल की खाक छाननी पड़ती थी और जहाँ दिन भर खूँटे से बँधे काले नाग को मक्खियाँ उड़ाते देखने के सिवाय करने के लिए कुछ नहीं था।

जिन बातों को बाल तुमई पसंद करता था, वे थीं, उन सँकरे रास्तों पर दौड़कर चढ़ना; जिन पर केवल हाथी चल सकते थे, नीचे घाटी की जलधारा में डुबकी लगाना, मीलों दूर चरते जंगली हाथियों की झलक पा जाना, गुजरते काला नाग के पैरों के पास से भयभीत सुअरों और मोर पक्षियों का भागना, मूसलाधार बारिश; जब सभी पहाड़ियाँ और घाटियाँ गिरती हुई बूँदों की चादर से ढँक जाती थीं; कुहासे से लदी खूबसूरत सुबह, जब कोई नहीं जानता था कि अगला कैंप कहाँ होगा; सावधानी से जंगली हाथियों को निरंतर बाड़े की ओर प्रेरित करना; पिछली रात के अभियान का कोहराम, भगदड़ और अफरातफरी, जब हाथी भूस्खलन की तरह बाड़े में धकेल दिए जाते और जब

उन्हें पता चलता कि वे बाहर नहीं निकल सकते तो वे अपनी पूरी ताकत से पोस्ट पर बने गेट से जूझते और उन्हें भारी चीख-पुकार, कनस्तरों की भड़भड़, टॉर्चों की रोशनी से चुँधियाने और खाली कारतूसों की बौछार से उन्हें फिर भीतर धकेल दिया जाता।

एक छोटा लड़का भी वहाँ काम आ सकता था और तुमई तीन लड़कों के बराबर उपयोगी था। वह अपनी टॉर्च को लहराता और आदमियों के साथ चिल्लाता। परंतु असल मजा तब आता जब कैद किए गए हाथियों को खेड़े से बाहर निकालना शुरू किया जाता और तब वहाँ का माहौल ऐसा लगता मानो दुनिया का अंत आ गया हो और आदमियों को इशारों में बात करनी पड़ती थी, क्योंकि उस भयानक शोर- शराबे में वे अपनी आवाज भी नहीं सुन सकते थे। तब बाल तुमई खेड़े की खस्ता हाल चौकियों में से एक पर चढ़ जाता—धूप में सिंके उसके बाल कंधों के ऊपर झूलने लगते और टॉर्चों की अस्थिर रोशनी में उसका चेहरा एक भूत की तरह दिखाई देता। कुछ पलों की अपेक्षाकृत शांति में हाथियों के चिंघाड़ने, तोड़-फोड़ करने, रस्सियों के टूटने और बँधे हुए हाथियों के कराहने की आवाजों से ऊपर आप उसके चिल्लाने की पतली तीखी आवाज सुन सकते थे जब वह काला नाग को प्रोत्साहित कर रहा होता था। ''और जोर से, काला नाग! उसकी बगल में दाँत मार! सँभल के, सँभल के! मार, मार और मार! चौकी को बचा के। अरे, अरे, ये क्या कर रहा है।'' वह चिल्लाता तथा काला नाग और उस जंगली हाथी की भीषण लड़ाई खेड़े के पार चली जाती और हाथी पकड़नेवाले पुराने लोग अपनी आँखों तक आ गए पसीने को पोंछते और चौकी पर चढ़े खुशी से उछलते बाल तुमई को देखकर, उसके जोश को देखकर, सहमति में सिर हिलाते।

इस सारे ड्रामे का मजा लेने से ज्यादा भी वह कुछ करता था। एक रात वह चौकी से नीचे उतरा और हाथियों के बीच में घुसकर जमीन पर पड़ी एक रस्सी हाथी पर बैठे महावत की ओर उछाल दी, जो एक जंगली हाथी के बच्चे के पैरों में उलझाने के प्रयास में उससे गिर गई थी (वयस्क हाथियों के मुकाबले हाथी के बच्चे ज्यादा परेशान करते हैं।) काला नाग ने जब यह देखा तो उसने बाल तुमई को अपनी सूँड़ से उठाकर बड़े तुमई के सामने रख दिया। बड़े तुमई ने उसी वक्त उसे एक तमाचा मारा और फिर चौकी पर चढ़ा दिया।

अगली सुबह उसने बाल तुमई को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा, ''क्या अच्छे हाथीशाला परिसर में रहना और कुछ छोटे-मोटे तंबू ढोकर ले जाना काफी नहीं है कि अब तू अपनी मरजी के मुताबिक हाथी पकड़ने लगा है, निकम्मे पिल्ले? अब उन बेवकूफ शिकारियों, जिनकी तनख्वाह मुझसे भी कम है, ने पीटरसन साहब से इस बात की शिकायत कर दी होगी।'' बाल तुमई डर गया। गोरे लोगों के बारे में वह ज्यादा नहीं जानता था, परंतु पीटरसन साहब उसके लिए दुनिया में सबसे महान् गोरा आदमी था। वह खेड़े की गतिविधियों का संचालन प्रमुख था—वह व्यक्ति, जो भारत सरकार के लिए सारे हाथी पकड़ता था—और किसी भी जीवित आदमी के मुकाबले हाथियों के बारे में ज्यादा जानता था।

''अब...अब क्या होगा?'' बाल तुमई ने पूछा।

''क्या होगा?बुरे से बुरा होगा। पीटरसन साहब एक पागल आदमी हैं। नहीं तो इन जंगली राक्षसों को पकड़ने के लिए वे यहाँ क्यों आते? वह तुझे भी इस काम में लगा देंगे; फिर तुझे भी इन भयानक जंगलों में कहीं भी सोना पड़ेगा और कभी तू भी किसी जंगली हाथी के पैरों तले आ जाएगा। अब तो बस यह अभियान बिना किसी हादसे के जल्द-से-जल्द पूरा हो जाए। अगले हफ्ते यह अभियान खत्म हो रहा है और हम मैदानी लोगों को अपने-अपने स्टेशनों पर भेज दिया जाएगा। तब हम बढ़िया सड़कों पर चल सकेंगे और इस फजीहत को भूल जाएँगे। परंतु बेटे, मैं इस बात पर नाराज हूँ कि तुमने उस काम में हाथ डाला, जो इन गंदे असमिया जंगली लोगों का काम है, क्योंकि

काला नाग मेरे सिवाय किसी का आदेश नहीं मानता। मुझे तो उसके साथ खेड़े में जाना ही पड़ता है, लेकिन वह केवल एक लड़ाकू हाथी है और वह उन्हें बाँध नहीं सकता। इसलिए, मैं बस हाथी के सिर पर बैठा रहता हूँ, जो एक महावत को शोभा देता है। मैं एक दैनिक वेतनभोगी शिकारी नहीं, बल्कि एक महावत हूँ, जिसे रिटायर होने के बाद पेंशन मिलेगी। क्या हाथियों के तुमई के परिवार को खेड़े की धूल में पैरों तले रौंदा जाएगा? बुरी बात है। शैतान बेटे! निकम्मे। जा, काला नाग को नहला कर ला और उसके कान साफ कर दे और देखना उसके पैरों में काँटे तो नहीं लगे हैं। नहीं तो पीटरसन साहब जरूर ही तुझे पकड़ लेंगे और तुझे एक जंगली शिकारी बना देंगे—हाथियों के पदचिह्नों से उनकी टोह लेनेवाला एक जंगली भालू! शर्म कर। जा यहाँ से।''

एक शब्द भी बोले बिना बाल तुमई वहाँ से चला गया, परंतु काला नाग के पैरों की छानबीन करते हुए उसने अपनी सारी व्यथा उसे सुना दी ''कोई बात नहीं,'' काला नाग के विशाल दाएँ कान का कोना उठाते हुए बाल तुमई ने कहा, ''उन्होंने पीटरसन साहब को मेरा नाम बताया है और शायद—और शायद, किसको पता है? अरे, यह कितना बड़ा काँटा था, जिसे मैंने निकाल दिया है!''

अगले कुछ दिन हाथियों को इकट्ठा करने, नए पकड़े गए हाथियों को पालतू हाथियों के बीच रखकर पहाड़ी पर चढ़ाने और वहाँ से उतारने, ताकि वे मैदानों की ओर लंबी यात्रा में ज्यादा परेशानी न खड़ी करें, कंबलों, रस्सियों, जंजीरों और कुछ ऐसी चीजें जो घिस गई थीं या जंगल में कहीं खो गई थीं, का हिसाब-किताब करने में बीत गए।

पीटरसन अपनी चतुर हथिनी पद्मिनी पर बैठकर आए; उनके अधीन पहाड़ियों में और भी कैंप थे और उनके भुगतान भी करने थे, क्योंकि अब मौसम खत्म होने को था और एक पेड़ के नीचे टेबल लगाए एक हिंदुस्तानी क्लर्क भी था, जो महावतों और कुलियों को मजदूरी दे रहा था। जब एक-एक आदमी को भुगतान किया जा रहा था, पीटरसन साहब अपनी हथिनी के पास वापस चले गए और उस पंक्ति में शामिल हो गए जो कूच करने के लिए तैयार खड़ी थी। खेड़े के नियमित कर्मचारी—हाथी पकड़नेवाले और उन्हें मदद करनेवाले लोग—जिनकी सारी जिंदगी जंगल में गुजरी थी, पीटरसन साहब के नियमित फोर्स के हाथियों की पीठ पर बैठे थे या अपनी बंदूकें हाथों में लिये पेड़ों से टिककर खड़े थे और जानेवाले महावतों का मजाक उड़ा रहे थे और जब कोई नया पकड़ा हुआ हाथी किसी तरह झुंड से निकलकर भागने लगता तो ठहाका मारकर हँसते।

जब बड़ा तुमई क्लर्क के पास गया, बाल तुमई उसके पीछे था और हाथियों की टोह लेनेवाले दल के मुखिया मचुआ अप्पा ने धीरे से अपने दोस्त से कहा, ''इस दल के साथ कम-से-कम एक बंदा जा रहा है, जिसे हाथियों की गहरी समझ है। इस जंगली मुरगे को मैदानों में सड़ने के लिए भेज देना वाकई दु:ख की बात है।''

अब, पीटरसन साहब के पूरे बदन में कान लगे थे जैसा कि एक ऐसे आदमी के लिए स्वाभाविक है, जो दुनिया की सबसे खामोश आवाज—जंगली हाथियों की आवाज—भी सुन लेता है। पद्मिनी की पीठ पर, जहाँ वह अब तक लेटा हुआ था, करवट लेते हुए उसने पूछा, ''यह मैंने क्या सुना? मैं नहीं जानता था कि मैदानी महावतों में हमारे पास कोई इतना होशियार आदमी भी है, जो एक मरे हुए हाथी के पैरों में रस्सी डाल सकता है।''

''वह कोई आदमी नहीं, बल्कि एक लड़का है। पिछली रात के अभियान में वह खेड़े में हाथियों के बीच घुस गया और बरमाओ के हाथ में रस्सी पकड़ा दी, जो उसके हाथ से तब गिर गई थी, जब हम उस हाथी के बच्चे, जो उसकी माँ से बिछड़ गया था और जिसके कंधे पर एक दाग है, को काबू में करने की कोशिश कर रहे थे।''

मचुआ अप्पा ने बाल तुमई की ओर इशारा किया; पीटरसन साहब ने उसे देखा और बाल तुमई ने झुककर उनका अभिवादन किया।

''इसने रस्सी फेंकी? यह तो हाथी के खूँटे से भी छोटा है। बच्चे, तुम्हारा नाम क्या है?'' पीटरसन साहब ने पूछा।

डर के मारे बाल तुमई के मुँह से आवाज नहीं निकली, परंतु काला नाग उसके पीछे था। उसने हाथ से कुछ इशारा किया और हाथी ने उसे अपनी सूँड़ में लपेटा और उसे पद्‌मिनी के माथे की ऊँचाई तक ले जाकर महान् पीटरसन साहब के सामने हवा में टाँग दिया। तब बाल तुमई ने अपना चेहरा हाथों से ढँक लिया, क्योंकि अभी वह एक बच्चा ही था और हाथियों को छोड़कर हर किसी के सामने वह उतना ही शर्मीला था जितना दूसरे बच्चे होते हैं।

''ओहो!'' अपनी मूँछों के भीतर मुसकराते हुए पीटरसन साहब बोले, ''तूने हाथी को यह विधि क्यों सिखाई। क्या घरों की छत पर सूखने के लिए रखे भुट्टे चुराने के लिए?''

''भुट्टे नहीं, गरीब परवर, खरबूजे,'' बाल तुमई ने कहा और वहाँ आस-पास मौजूद सभी आदमी ठहाका मारकर हँस पड़े। उनमें से अधिकांश ने अपने लड़कपन में यह विधि अपने हाथियों को सिखाई थी। बाल तुमई आठ फीट ऊपर हवा में लटक रहा था और मारे शर्म के उसकी इच्छा हो रही थी कि वह आठ फीट जमीन के भीतर चला जाए।

''यह तुमई है साहब, मेरा बेटा,'' त्योरियाँ चढ़ाते हुए बड़े तुमई ने कहा, ''यह बहुत शैतान लड़का है और किसी दिन जेल जाएगा, साहब।''

''इसके बारे में मुझे शक है,'' पीटरसन साहब ने कहा, ''जो लड़का इस उम्र में खेड़े की काररवाई में शामिल हो सकता है, वह जेल नहीं जा सकता। देखो, छोटे बच्चे, यह लो चार आने, इससे मिठाई खरीदकर खा लेना, क्योंकि तुम्हारी इन बड़ी-बड़ी जुल्फों के नीचे एक अच्छा दिमाग है। वक्त आने पर तुम एक अच्छे शिकारी भी बन सकते हो।'' बड़े तुमई की त्योरियाँ अब भी चढ़ी हुई थीं। ''मगर यह याद रखना,'' पीटरसन साहब ने कहना जारी रखा, ''कि खेड़ा बच्चों के खेलने की जगह नहीं है।''

''क्या मुझे वहाँ कभी नहीं जाना चाहिए?'' बाल तुमई ने हाँफते हुए पूछा।

''हाँ।'' पीटरसन साहब फिर मुसकराए, ''जब तुम हाथियों को नाचते हुए देख लो, तब। वही सही समय होगा। जब तुम हाथियों को नाचता हुआ देख लो तब मेरे पास आना और मैं तुम्हें सारे खेड़ों में जाने की इजाजत दे दूँगा।''

एक बार फिर चारों ओर से जोरदार ठहाकों की आवाज आई, क्योंकि हाथी पकड़नेवालों के बीच चलनेवाला यह एक पुराना मजाक है, जिसका अर्थ है, कभी नहीं। जंगलों के बीच छिपी कई खाली समतल जगहें हैं, जिन्हें हाथियों का डांस-फ्लोर कहा जाता है, परंतु इन स्थानों के दर्शन भी संयोग से ही होते हैं और किसी आदमी ने कभी हाथियों को नाचते नहीं देखा। जब कोई महावत अपने हुनर और बहादुरी की डींग हाँकता है तो दूसरे महावत पूछते हैं, ''तूने हाथियों को नाचते हुए कब देखा है?''

काला नाग ने बाल तुमई को जमीन पर उतार दिया, उसने भूमि को एक बार फिर दंडवत प्रणाम किया और अपने पिता के साथ चला गया। उसने चार आने का चाँदी का सिक्का अपनी माँ को दिया, जो उसके छोटे भाई को दुलरा रही थी। वे सब काला नाग की पीठ पर सवार हो गए और पहाड़ी रास्ते से चिंघाड़ते हुए हाथियों का काफिला मैदानों की ओर चल पड़ा। नए हाथियों के कारण यह यात्रा जरा भी उबाऊ नहीं थी, क्योंकि नदी-नाला पार करते हुए हर बार वे परेशान करते थे और उन्हें या तो पुचकारकर या मारपीटकर झुंड में वापस लाया जाता था।

बड़ा तुमई अब भी बहुत गुस्से में था और वह काला नाग को बार-बार अंकुश चुभो रहा था, परंतु बाल तुमई मन-ही-मन बहुत खुश था। पीटरसन साहब ने उसे नोटिस किया था और पैसे दिए थे और उसे उस युवा सैनिक की तरह लग रहा था, जिसे प्रधान सेनापति ने पंक्ति से अलग बुलाकर उसकी तारीफ में कुछ शब्द कहे हों।

''पीटरसन साहब ने हाथियों के नाचने के बारे में जो कुछ कहा, उसका मतलब क्या था?'' अंत में उसने धीरे से अपनी माँ से पूछा।

बड़े तुमई ने सुन लिया और रूखेपन से बोला, ''यही कि तुझे कभी हाथी पकड़नेवाले उन मूर्ख जंगलियों की तरह नहीं बनना चाहिए। उनका मतलब यही था। ओ आगेवालो, रुक क्यों गए?''

दो या तीन हाथी आगे चल रहे एक असमिया महावत ने गुस्से से पीछे देखा और चिल्लाया, ''जरा काले नाग को इधर लाओ और मेरे इस युवा हाथी का मिजाज ठीक करो। न जाने पीटरसन साहब ने चावल के खेतों में काम करनेवाले तुम गधों के साथ मुझे क्यों भेजा है? अपने हाथी को मेरे बाजू में ले आओ और अपने दाँत इसकी बगल में घुसेड़ने दो। पहाड़ों के सभी देवताओं की कसम, इन नए हाथियों पर या तो कोई भूत सवार है या इन्हें जंगल में अपने साथियों की गंध आ गई है।'' काला नाग ने उस नए हाथी की पसलियों में एक टक्कर मारी और उसकी सारी मस्ती उतार दी। बड़े तुमई ने कहा, ''हमने इन पहाड़ियों के एक-एक हाथी को पकड़ लिया है। तुम्हें हाथी को काबू में रखना नहीं आता। क्या पूरी पंक्ति में व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी मेरी है?''

''लो, इसकी सुनो!'' उस महावत ने कहा, ''हमने जंगल को हाथियों से खाली कर दिया है! हो, हो। तुम ज्यादा जानते हो, मैदानी लोगों! उस कूढ़मग्ज के सिवाय, जिसने कभी जंगल नहीं देखा, सभी जानते हैं कि सभी हाथियों को पता है कि हाथी पकड़नेवालों का मौसम खत्म हो रहा है। इसलिए आज रात सभी जंगली हाथी—मगर मैं क्यों नदी के एक कछुवे को ये सारी ज्ञान की बातें बताऊँ?''

''आज रात वो क्या करेंगे?'' बाल तुमई अपनी जिज्ञासा रोक न सका।

''ओह, छोटे मियाँ! तुम भी हो! ठीक है मैं तुम्हें बताऊँगा, क्योंकि तुम्हारे पास एक अच्छा दिमाग है। आज वे नाचेंगे और तुम्हारे पिता, जिसने सभी पहाड़ियों से सभी हाथियों को पकड़ लिया है, को चाहिए कि आज रात वह अपने खूँटे में दोहरी जंजीरें बाँधे।''

''क्या बकवास है?'' बड़े तुमई ने कहा, ''चालीस साल से मेरे पिता और मैं हाथियों की देखभाल कर रहे हैं और हमने कभी हाथियों का नाच जैसी गप कभी नहीं सुनी।''

''तुम ठीक कहते हो, मगर मैदान का एक आदमी जो झोंपड़ी में रहता है, अपनी झोंपड़ी की दीवारों से आगे कुछ नहीं जानता। आज अपने हाथियों को खुला छोड़ दो, फिर देखना क्या होता है? जहाँ तक उनके नाचने का सवाल है, मैंने वो जगह देखी है जहाँ—बाप-रे-बाप! दिहांग नदी में कितने मोड़ हैं? लो, यह एक और नदी आ गई, हमें हाथी के बच्चों को तैराना होगा। अरे पीछेवाले, वैसे ही खड़े रहना।''

इस तरह बतियाते, लड़ते-झगड़ते और पानी में छपाके मारते वे एक ऐसी जगह पर पहुँचे जो एक तरह से नए हाथियों का अगवानी शिविर था। परंतु वहाँ पहुँचने से बहुत पहले ही वे अपना आपा खो बैठे।

फिर हाथियों के पिछले पैर जंजीरों से बाँध दिए गए। नए हाथियों को अतिरिक्त रस्सियों से भी बाँधा गया और उनके सामने चारे का ढेर लगा दिया गया। फिर मैदानी महावतों को आज की रात कुछ ज्यादा ही सावधान रहने की सलाह देते और इसका कारण जानने पर हँसते हुए पहाड़ी महावत दोपहर की उस ढलती रोशनी में वापस पीटरसन साहब के पास चले गए।

बाल तुमई ने काला नाग के भोजन का इंतजाम किया और शाम ढलने पर मन में अपार खुशी लिए एक ढोल की तलाश में वह पूरे शिविर में घूमता रहा। जब एक भारतीय बालक बहुत खुश होता है तो वह बेमतलब का शोर मचाते हुए इधर-उधर नहीं भागता। वह शांत बैठ जाता है और अपने ही साथ होने का मजा लेता है। बाल तुमई से तो खुद पीटरसन साहब ने बात की थी! जो चीज वह खोज रहा था, वह उसे नहीं मिलती तो मैं समझता हूँ कि वह बीमार पड़ जाता। परंतु शिविर के मिठाई विक्रेता ने उसे एक छोटा सा ढोल, जो हथेलियों से बजाया जाता है, दे दिया और जैसे-जैसे तारे आसमान में चमकने लगे, वह ढोल को गोद में लिये पालथी मारकर काला नाग के सामने

चारे के ढेर पर बैठ गया और ढोल बजाता रहा, बजाता रहा। जितना ही वह उसे दिए गए सम्मान के बारे में सोचता, उतने ही जोर की थाप देता। न कोई शब्द थे और न कोई धुन, परंतु ढोल की आवाज उसे खुशी देती थी।

जंजीरों और रस्सियों से छूटने के लिए नए हाथी जोर लगाते और चिंघाड़ते। वह शिविर की झोंपड़ी से भगवान् शिव से संबंधित एक बहुत पुराना गीत गाकर उसके छोटे भाई को सुलाती अपनी माँ की आवाज सुन सकता था। वही भगवान् शिव, जिन्होंने सभी प्राणियों का भोजन तय किया था। वह एक बहुत ही सुकून देनेवाली लोरी है और उसका पहला छंद है :

''शिव, जो फसलों पर वर्षा का जल बरसाते हैं
और हवाओं को निर्देशित करते हैं, ने
बहुत समय पहले एक दिन
सभी प्राणियों को
अपने-अपने हिस्से की मशक्कत, भोजन और मुकद्दर दिया
गद्दीनशीन राजा से लेकर
गेट पर खड़े भिखारी तक
उस पालनकर्ता शिव ने
सभी के लिए सबकुछ बनाया
ऊँट के लिए कँटीली झाड़ियाँ,
मवेशियों के लिए चारा
और मेरे प्यारे बच्चे,
सिर रखकर सोने के लिए
माँ का वक्ष!''

हर पंक्ति के बाद बाल तुमई खुशी से ढोल पर थाप देता; फिर उसे नींद आने लगी और काला नाग की बाजू में पड़े चारे पर ही वह सो गया। अंत में जैसा उनका चलन है, एक-एक करके हाथी लेटने लगे। उनके दाईं ओर की पंक्ति में अकेला काला नाग खड़ा था। वह बारी-बारी से अपने आगे-पीछे के दोनों पैरों को आराम देता और कान लगाकर पहाड़ियों में से धीमी-धीमी बहती रात की हवा की आवाज सुनता। हवा में रात के वे सब शोर थे, जो मिलकर एक विस्तृत खामोशी को जन्म देते थे—बाँस की एक टहनी के दूसरी से रगड़ की आवाज, नीचे घास में किसी के रेंगने की आवाज, अधजगे पक्षियों द्वारा अपना बदन कुरेदने और यदाकदा चीखने की आवाज (पक्षी रात में जितना जागते हैं उसका हमें अंदाजा नहीं है) और कहीं दूर झरने से गिरते जल की आवाज। बाल तुमई कुछ देर सोया और जब वह जागा तो चारों ओर उज्ज्वल चाँदनी बिखरी हुई थी और काला नाग अपने कान खड़े किए अब भी चौकस खड़ा था। चारे पर लेटे बाल तुमई ने करवट ली और उसे उस विशाल हाथी की पीठ के घुमाव से ऊपर आकाश में छितरे हुए तारे दिखाई दिए। व्यापक खामोशी के बीच कभी-कभी उसे कहीं दूर से किसी जंगली हाथी के चिंघाड़ने की आवाज सुनाई दे जाती थी।

पंक्तियों में खड़े सभी हाथी चौंककर ऐसे उछले मानो किसी ने उन पर गोली चला दी हो और उनके चिंघाड़ने की आवाज ने आखिर सोते हुए महावतों को जगा दिया और उन्होंने तुरंत खूँटों पर हथौड़ा मारकर उन्हें मजबूती दी और तब तक इस रस्सी को खींचते और उस रस्सी को बाँधते रहे, जब तक कि सबकुछ शांत न हो गया। एक नए हाथी ने अपना खूँटा लगभग उखाड़ ही लिया था और बड़े तुमई ने काला नाग के पैरों की जंजीर खोल दी और उस

नए हाथी के आगे और पीछे के दोनों पैर उससे बाँध दिए। फिर काला नाग के पैर में जूट से बनी एक कच्ची रस्सी का फंदा डाल दिया और उससे कहा कि वह बँधा हुआ है। बड़ा तुमई जानता था कि वह, उसके पिता और दादा यही उपाय सैकड़ों बार पहले भी कर चुके थे। काला नाग ने इस आदेश का जवाब खखारकर नहीं दिया, जैसा वह आमतौर पर करता था। वह फैली हुई चाँदनी के पार देखता हुआ शांत खड़ा रहा—उसका सिर थोड़ा उठा हुआ और गारो की विशाल पहाड़ियों की ओर अपने कान पंखों की तरह फैलाए हुए।

''अगर रात में वह बेचैन हो जाए तो उसका खयाल रखना,'' बड़े तुमई ने बाल तुमई से कहा और वह सोने के लिए झोंपड़ी के भीतर चला गया। बाल तुमई भी सोने के लिए ही जा रहा था जब उसने जूट की रस्सी के 'खट' से टूटने की आवाज सुनी और उसने देखा कि काला नाग बिना आवाज किए बहुत ही धीरे-धीरे अपनी जगह से निकल रहा था, जैसे एक घाटी के ऊपर से बादल गुजर रहे हों। उस चाँदनी रात में बाल तुमई नंगे पैर ही ''काला नाग! काला नाग! मुझे भी अपने साथ ले चल, काला नाग!'' कहता हुआ उसके पीछे दौड़ा। बिना आवाज किए हाथी मुड़ा, लड़के की तरफ तीन कदम बढ़ाए, अपनी सूँड़ को नीचे किया और उसे उठाकर अपनी गरदन पर रख दिया और उसे स्थिर होने का अवसर दिए बिना ही जंगल में गायब हो गया।

शिविर से एक साथ कई हाथियों के चिंघाड़ने की आवाज आई और फिर चारों ओर सन्नाटा फैल गया और काला नाग चलता रहा। कभी-कभी ऊँची घास का कोई गुच्छा उसकी बगल से टकरा जाता जैसे समुद्री लहरें जहाजों से टकराती हैं और कभी-कभी जंगली मिर्चों की बेलों का गुच्छा उसकी पीठ से रगड़ खा जाता या उसके बदन के स्पर्श से किसी बाँस के पेड़ की कोई शाखा टूट जाती। परंतु ऐसे मौकों को छोड़कर वह सघन गारो जंगल में बिलकुल ही आवाज किए बिना इतनी सुगमता से चला जा रहा था मानो वह धुएँ से भरा एक मैदान हो। पहाड़ी रास्ते से वह ऊपर चढ़ रहा था, परंतु यद्यपि बाल तुमई पेड़ों के बीच से सितारों को देख सकता था, उसके लिए यह समझना मुश्किल था कि काला नाग किस दिशा में जा रहा था।

जब काला नाग पहाड़ी के शिखर पर पहुँचा तो एक मिनट के लिए वह रुक गया। वहाँ से बाल तुमई चाँदनी में मीलों दूर तक वृक्षों के शिखर और घाटी में बह रही नदी पर सफेद कुहासे को दख सकता था। बाल तुमई ने जरा आगे झुककर देखा तो उसे महसूस हुआ मानो नीचे जंगल में काफी चहल-पहल थी—वह भीड़ से भरा और जीवंत था। एक बड़ा सा फल खानेवाला भूरा चमगादड़ उसके कान के पास से निकल गया। पास की झाड़ी में से एक साही के सरसराने की आवाज आई और पेड़ों के बीच अँधेरे में उसने एक हॉग बेअर द्वारा नरम उष्ण जमीन खोदे जाने की आवाज सुनी।

फिर काला नाग ने घाटी में नीचे उतरना शुरू किया और आपस में गुँथे हुए वृक्ष एक बार फिर बाल तुमई के सिर के ऊपर से गुजरने लगे—परंतु इस बार काला नाग खामोशी से नहीं, बल्कि अपनी पूरी रफ्तार से दनदनाता हुआ उतर रहा था। आठ-आठ फुट का डग भरते हुए उसके विशाल पैर पिस्टंस की तरह लगातार चल रहे थे और कभी-कभी उसके झुर्रीदार घुटने आपस में टकरा जाते थे। उसके दोनों ओर उगी घास उसके चौड़े पैरों के नीचे दबी चली जाती थी और वे बड़ी-बड़ी झाड़ियाँ, जिनको चीरकर वह आगे बढ़ रहा था, पलटकर उसके शरीर के पिछले भाग से टकराती थीं और अपने बड़े से सिर को इधर-उधर हिलाते हुए वह जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा था, झाड़ियों पर उगी बेलें उसके दाँतों में उलझ जाती थीं। बाल तुमई उसकी विशाल गरदन पर लेट गया, ताकि किसी पेड़ की डाल तेजी से जा रहे हाथी पर बैठे उसे कहीं नीचे न गिरा दे और अब उसे बहुत तीव्रता से अपने शिविर की याद आने लगी।

ओस से भीगी घास पर काला नाग के पैर पड़ने से 'फच-फच' की आवाज आ रही थी और घाटी से उठनेवाले

रात के कुहासे ने बाल तुमई का बदन बेहद ठंडा कर दिया था। फिर एकाएक बहते पानी की तेज आवाज पानी में छपाकों और दूर से भारी कदमों की भगदड़ जैसी मिली-जुली आवाजें आने लगीं और एक-एक कदम सावधानी से रखते हुए काला नाग नदी पार करने लगा। बाल तुमई हाथी के पैरों से टकराती पानी की तेज धार की आवाज को दबाती हुई जलधारा के दोनों ओर—अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम—पानी में और ज्यादा छपाकों और कभी-कभी चिंघाड़ने की आवाजें सुन सकता था—गुस्से से घुरघराने की तेज आवाजें और चारों ओर फैले कुहासे में उसे ऐसा लग रहा था मानो विशाल परछाइयाँ हवा में नाच, लहरा रही हों।

''अई,'' ठंड से किटकिटाते दाँतों के बीच उसके मुँह से निकला, ''आज रात ये सब हाथी-लोग बाहर निकले हैं। तो यही उनका नृत्य समारोह है!''

नदी में बड़ी-बड़ी लहरें पैदा करता काला नाग पानी से बाहर आया, पानी से भरी अपनी सूँड़ को खाली किया और फिर एक चढ़ाई पर चल पड़ा। परंतु इस समय वह अकेला नहीं था और न उसे अपना रास्ता बनाना था। वह पहले ही बना हुआ था —उसके सामने छह फुट चौड़ा एक रास्ता था, जहाँ झुकी हुई घास फिर से खड़ा होने की कोशिश कर रही थी। ऐसा लगता था जैसे कुछ मिनट पहले ही वहाँ से कई हाथी गुजरे होंगे। बाल तुमई ने मुड़कर पीछे देखा कि जलते अंगारों सी सुअर जैसी छोटी आँखोंवाला एक जंगली हाथी कुहासे से आच्छादित उस नदी से बाहर निकल रहा था। एक बार फिर पेड़ों का छायादार एक मार्ग आ गया तथा चिंघाड़ने और पेड़ों की डालियों के टूटने की आवाजों के बीच वे आगे और ऊपर की ओर चलते रहे।

अंतत: काला नाग उस पहाड़ी के शिखर पर दो पेड़ों के बीच जाकर चुपचाप खड़ा हो गया। वे दोनों पेड़ तीन या चार एकड़ के बेतरतीब क्षेत्र में घेरे में उगे हुए पेड़ों का भाग थे और उस पूरे इलाके में, जहाँ तक बाल तुमई देख सकता था, हाथियों के पैरों से दब-दबकर जमीन इतनी सख्त और समतल हो गई थी जैसे वहाँ ईंटें बिछा दी गई हों। कुछ पेड़ मैदान के बीच में भी उगे थे, परंतु रगड़-रगड़कर उनकी छाल घिस दी गई थी और उनकी भीतरी लकड़ी चंद्रमा के प्रकाश में चमकीली और पॉलिश की हुई लगती थी। पेड़ों की ऊपरी शाखाओं से बेलें लटक रही थीं और उन पर मंदिर के घंटों जैसे बड़े-बड़े चिपचिपे सफेद अलसाए से फूल लगे हुए थे। परंतु उस पूरे मैदान में हरी घास का एक तिनका तक नहीं था—अच्छी तरह से दबी जमीन के सिवाय कुछ भी नहीं।

चंद्रमा के प्रकाश में पूरा परिदृश्य लोहे के स्लेटी रंग का लग रहा था, सिवाय उस भूभाग के, जहाँ कुछ हाथी खड़े थे और उनकी परछाइयाँ स्याह नजर आती थीं। अपनी साँस रोके, आँखें फाड़े बाल तुमई देख रहा था कि पेड़ों के बीच से निकल-निकलकर और ज्यादा हाथी खुले मैदान में आते जा रहे थे। बाल तुमई केवल दस तक गिन सकता था और अपनी उँगलियों पर उसने कई बार दस तक गिना और फिर भूल गया कि उसने कितने दस गिने थे और उसका सिर घूमने लगा। वह मैदान से परे पहाड़ी पर चढ़ रहे हाथियों के पैरों तले घास के कुचलने और उनके शरीरों से पेड़ों के रगड़ने की आवाजें सुन सकता था, परंतु जैसे ही वे ठूँठों के घेरे में आ जाते, उनकी चाल भूतों जैसी हो जाती थी।

उनमें सफेद दाँतोंवाले जंगली नर-हाथी थे, जिनके गले की झुर्रियों पर और कान की परतों के बीच पत्तियाँ और टहनियाँ चिपकी हुई थीं; धीमे चलनेवाली मोटी मादा हाथी भी थीं, जिनके साथ तीन या चार फुट ऊँचे गुलाबी—काले बच्चे दौड़ रहे थे; युवा हाथी भी थे, जिनके बाहरी दाँत अभी दिखने शुरू ही हुए थे और जिन पर उन्हें गर्व था; धँसे हुए चिंताग्रस्त चेहरों और पेड़ की सूखी छाल जैसी सूँड़ोंवाली कृषकाय बूढ़ी हथिनियाँ थीं; अपने जमाने में लड़ी लड़ाइयों की याद दिलाते गरदन से पूँछ तक घावों के निशानवाले बूढ़े मगर डरावने हाथी थे, अकेले कीचड़ में नहाने के कारण जिनके कंधों से कीचड़ टपक रहा था और एक हाथी था, जिसका दाँत टूटा हुआ था। उसके

चेहरे के एक ओर एक बाघ द्वारा बुरी तरह खरोंचे जाने के निशान थे।

वे सब या तो एक पंक्ति में खड़े थे या जोड़ों में मैदान में घूम रहे थे या फिर अकेले ही झूम और नाच रहे थे—बीसियों और बीसियों हाथी।

बाल तुमई जानता था कि जब तक वह काला नाग की गरदन पर शांत लेटा रहेगा, कुछ अनहोनी नहीं होगी, क्योंकि खेड़ा अभियानों की भगदड़ और अफरातफरी के बीच भी एक जंगली हाथी ऊपर उठकर अपनी सूँड़ से पालतू हाथी पर बैठे आदमी को कभी खींच नहीं लेता था। आज की रात ये हाथी आदमियों के बारे में सोच भी नहीं रहे थे। एक बार जरूर उन्होंने चौंककर अपने कान उस ओर लगा दिए, जब उन्होंने जंगल में किसी हाथी के पैरों से घिसटती जंजीर की आवाज सुनी, परंतु वह पीटरसन साहब की प्रिय हथिनी पद्मिनी थी, जो जंजीर तोड़कर आई थी और घुरघुराते, सूँघते हुए पहाड़ी पर चढ़ रही थी। उसने खूँटा ही उखाड़ दिया था और पीटरसन साहब के शिविर से सीधे ही चली आई थी। बाल तुमई ने एक और हाथी देखा जिसे वह नहीं जानता था। उसकी पीठ और सीने पर रस्सियों से बने गहरे घाव थे। वह भी पहाड़ियों के किसी शिविर से भागकर आया होगा।

आखिरकार जंगल से और हाथियों की आवाजें आनी बंद हो गईं। काला नाग पेड़ों के बीच अपने ठिकाने से निकला और तरह-तरह की आवाज निकालते हुए भीड़ के बीच में आ गया और सभी हाथी अपनी भाषा में बात करने और झूमने लगे।

अब भी लेटा बाल तुमई नीचे बीसियों हाथियों की चौड़ी पीठें, हिलते हुए कान, हवा में लहराती सूँड़ें और छोटी-छोटी नाचती आँखें देख रहा था। उसने अनजाने में टकरा गए हाथी दाँतों की आवाज सुनी और साथ ही सूँड़ों के आपस में लिपटने की सरसराहट, भीड़ में भारी-भरकम बगलों और कंधों की रगड़ और बड़ी-बड़ी पूँछों के लहराने की मिली-जुली आवाजें भी। फिर चाँद को बादलों ने ढक लिया और वह अँधेरे में बैठा रहा। परंतु उनका मिलन, धक्का-मुक्की और चिंघाड़ना जारी रहा। वह जानता था कि काला नाग के चारों ओर हाथी थे और उस भीड़ में से उसे वापस ले जाना संभव नहीं था, इसलिए उसने अपने दाँत भींचे और ठंड से काँपता रहा। खेड़े के अभियान में कम-से-कम टॉर्चों की रोशनी और चिल्लाने की आवाजें होती थीं, परंतु यहाँ अँधेरे में वह बिलकुल अकेला था और एक बार तो किसी हाथी की सूँड़ ने उसका घुटना छू लिया था।

फिर एक हाथी चिंघाड़ा और सभी हाथियों ने उसका अनुसरण किया और अगले कुछ क्षणों तक भयंकर शोर रहा। उन पीठों पर जो दिखाई नहीं दे रही थीं, पेड़ों से टपकनेवाली ओस बारिश की तरह गिरने लगी और बादलों की गर्जना जैसा शोर आरम्भ हुआ, जो शुरू में उतना तेज नहीं था और बाल तुमई समझ न सका कि ये आवाजें कहाँ से आ रही थीं। परंतु वे क्रमश: तेज होती गईं और काला नाग ने अपना अगला पैर ऊपर उठाया, फिर दूसरा और फिर दोनों को जमीन पर ले आया। फिर एक नियमितता से यही क्रम चलता रहा—एक, दो-एक, दो। अब सभी हाथी इसी तरह जमीन पर धम धम कर रहे थे और उनकी मिली-जुली आवाजें ऐसी लग रही थीं मानो एक गुफा के मुँह पर युद्ध का नगाड़ा बज रहा हो। पेड़ों से ओस तब तक गिरती रही, जब तक खत्म न हो गई और वह गर्जन-नर्तन चलता रहा। हाथियों के पैरों की समवेत धमक से धरती काँपने लगी। बाल तुमई ने उस भयंकर शोर से बचने के लिए अपने कानों पर हाथ रख लिए। परंतु इससे उस कच्ची भूमि पर सैकड़ों भारी पैरों का एक साथ पड़ने का भयंकर शोर कम न हुआ। एक या दो बार उसे ऐसा लगा जैसे काला नाग और दूसरे सभी हाथी कई कदम आगे बढ़ गए हों और उनके पैरों के नीचे धूल की बजाय वनस्पति कुचली जा रही हो, परंतु एक या दो मिनट बाद ही उनके पैरों की धमक फिर से सख्त जमीन से आती प्रतीत होने लगी। उसके आसपास कहीं से एक पेड़ के चरमराने और टूटने की आवाज आई। उसने अपना हाथ बढ़ाया तो एक टहनी उसके हाथ में आ गई, परंतु काला

नाग अब भी नाचता हुआ आगे बढ़ रहा था और बाल तुमई को अंदाजा नहीं था कि वह इस वक्त मैदान के किस भाग में था। अब हाथी कोई आवाज नहीं कर रहे थे सिवाय एक बार के, जब दो या तीन हाथी के बच्चे एक साथ किकिया रहे थे। फिर उसने एक धमाके और हाथियों के चलने की आवाज सुनी और गर्जन-नर्तन जारी रहा। वह पूरे दो घंटे तक चलता रहा होगा और बाल तुमई की रग-रग में दर्द हो रहा था, परंतु रात की हवा की गंध से वह समझ गया था कि अब भोर होनेवाली थी।

हरी-भरी पहाड़ियों के पीछे से हलकी पीली किरणों के एक गुच्छे के साथ सुबह हुई और पहली किरण के साथ ही नाचना बंद हो गया, जैसे कि प्रकाश ही आदेश था। इससे पहले कि बाल तुमई का सिर घूमना कुछ कम होता, यहाँ तक कि काला नाग की गरदन पर अपनी मुद्रा बदलने से भी पहले काला नाग, पद्मिनी और रस्सियों के घाव के निशानवाले हाथी को छोड़कर वहाँ एक भी हाथी नजर नहीं आ रहा था और न पहाड़ी की ढलानों पर किसी हाथी के चलने या चिंघाड़ने की जरा भी आवाज आ रही थी, जिससे पता चलता कि बाकी हाथी किस दिशा में गए हैं।

बाल तुमई आँखें फाड़े बार-बार देख रहा था। रात को उसने जितना देखा था, मैदान अब उससे बड़ा लग रहा था। उसके बीच में अब ज्यादा पेड़ नजर आ रहे थे और किनारों पर उगी घास ने अपना सिर फिर ऊपर उठा लिया था। बाल तुमई ने एक बार फिर ध्यान से देखा। अब उसे हाथियों की कारगुजारी समझ आई। हाथियों ने मैदान का विस्तार कर लिया था—मोटी घास और रसीले गन्नों को कूड़े में, कूड़े को लुगदी में, लुगदी को रेशों में और रेशों को सख्त जमीन का रूप दे दिया था।

''वाह!'' बाल तुमई ने कहा—उसकी आँखें बहुत भारी हो गई थीं, ''काला नाग, मेरे बाप, अब हम जल्दी से पद्मिनी के साथ पीटरसन साहब के कैंप चलें, नहीं तो मैं तुम्हारी गरदन से गिर पड़ूँगा।''

उस तीसरे हाथी ने उन दोनों को जाते देखा, गुर्राया, फिर पीछे मुड़कर अपने रास्ते चला गया। वह पचास, साठ या सौ मील दूर किसी देशी राजा का हाथी रहा होगा।

दो घंटे बाद, जब पीटरसन साहब नाश्ता कर रहे थे, उनके दो हाथी, जिन्हें उस रात दोहरी जंजीरों से बाँधा गया था, चिंघाड़ने लगे और काला नाग के साथ, कंधों तक कीचड़ में लथपथ, भारी कदमों से पद्मिनी ने कैंप में प्रवेश किया। बाल तुमई का चेहरा पीला और सूखा नजर आ रहा था। ओस से भीगे उसके बालों में पत्तियाँ थीं, फिर भी उसने पीटरसन साहब को सलाम करने की कोशिश की और उसके मुँह से इतना ही निकला, ''नाच, हाथियों का नाच! मैंने देखा है और अब-मैं मर रहा हूँ!'' जैसे ही काला नाग नीचे बैठा, वह बेहोशी की हालत में उसकी गरदन पर से लुढ़क गया।

चूँकि देशी बच्चों में भरपूर जीवनी शक्ति होती है, दो घंटे बाद ही पीटरसन साहब का शूटिंग कोट सिरहाने रखे चेहरे पर संतुष्टि का भाव लिये वह साहब के झूले में लेटा था। एक गिलास गरम दूध, थोड़ी सी ब्रांडी, जिसमें चुटकी- भर कुनैन मिली हुई थी, उसके पेट में गए थे। खरोंच और घावों के निशानवाले जंगल के बूढ़े शिकारी उसके सामने बैठे थे और उसकी ओर ऐसे देख रहे थे मानो वह एक प्रेतात्मा हो। उसने थोड़े शब्दों में, जैसे एक बच्चा सुना सकता है, में अपनी कहानी सुनाई और इन शब्दों के साथ उसका समापन किया—

''अब अगर मैंने एक शब्द भी झूठ कहा हो तो आप अपने आदमियों को वहाँ भेजिए और उन्हें पता चलेगा कि हाथियों ने अपने नाचघर का इलाका और बढ़ा लिया है और उन्हें उस नाचघर तक जाने के दसियों रास्ते मिलेंगे। हाथियों ने अपने पैरों से नाचघर को बहुत बढ़ा लिया है। मैंने अपनी आँखों से देखा है। काला नाग मुझे वहाँ ले गया था और मैंने देखा। काला नाग भी बहुत थका हुआ है।''

उस दिन की लंबी दुपहरी और साँझ होने तक बाल तुमई सोता रहा और जब वह सो रहा था, पीटरसन साहब और मचुआ अप्पा उन दो हाथियों के पदचिह्नों पर पहाड़ियों के पार तक पंद्रह मील चले। पीटरसन साहब ने हाथी पकड़ते हुए अठारह साल बिताए थे और उन्होंने केवल एक बार हाथियों का नाचघर देखा था। उस मैदान पर पहुँचकर मचुआ अप्पा को यह देखने के लिए कि वहाँ क्या हुआ था, दोबारा नजर डालने या अच्छी तरह दबा दी गई जमीन को पैर के नाखून से खुरचकर देखने की जरूरत नहीं थी।

''बच्चा सच बोल रहा है,'' उसने कहा, ''यह सब पिछली रात ही हुआ है और मैंने हाथियों द्वारा नदी पार किए जाने के सत्तर प्वाईंट गिने हैं। साहब, देखिए, पद्मिनी के पैरों में बँधे लोहे से इस पेड़ की छाल उखड़ गई है। हाँ, वह भी यहाँ थी।''

उन्होंने एक-दूसरे की ओर और पहाड़ी के नीचे-ऊपर सब जगह देखा और ताज्जुब करने लगे, क्योंकि हाथियों के तौर-तरीके समझना किसी आदमी, चाहे वह गोरा हो या काला, के वश की बात नहीं है।

''चालीस और पाँच सालों से,'' मचुआ अप्पा ने कहा, ''मैंने हाथियों की दुनिया देखी है मेरे मालिक, मगर मैंने कभी नहीं सुना कि किसी आदमी ने वह सब देखा है जो इस बच्चे ने कल रात देखा। पहाड़ियों के सभी देवताओं की कसम, जो उसने कहा वह बिलकुल सच है,'' और उसने अपना सिर हिलाया।

जब वे कैंप वापस पहुँचे तो रात के भोजन का समय हो गया था। पीटरसन साहब ने अपने तंबू में अकेले भोजन किया, परंतु उन्होंने आदेश दिया कि कैंप के लोगों के लिए दो भेड़ों, कुछ मुरगों और दुगुने आटे और चावल की व्यवस्था की जाए, क्योंकि वे जानते थे कि आज दावत होगी।

अपने बेटे और हाथी की तलाश में बड़ा तुमई मैदानी कैंप से दौड़ा-दौड़ा आया था और अब, जब वे उसे मिल गए थे, उनकी ओर भयभीत आँखों से देख रहा था। बँधे हुए हाथियों की पंक्ति के सामने जलते हुए अलावों के पास दावत चल रही थी और बाल तुमई उस पूरे आयोजन का हीरो था। गेहुँए रंग के लंबे-चौड़े हाथी पकड़नेवाले, जंगली हाथियों की टोह लेनेवाले, महावत और रस्सी फेंकनेवाले—ये सभी आदमी, जो मदमस्त जंगली हाथियों पर काबू पाने के सभी गुर जानते थे, यह दिखाने के लिए कि एक स्थापित हाथी पकड़नेवाले के रूप में बाल तुमई की यात्रा शुरू हो चुकी थी, एक-एक करके उसके पास जाते और अभी-अभी मारे गए जंगली मुरगे की छाती के खून से उसके माथे पर तिलक करते।

अंत में, जब भोजन पकाने की आग बुझ गई और लकड़ी के लट्ठों पर लगी लाल बत्तियों में हाथी भी ऐसे लग रहे थे मानो उन्हें खून में डुबोया गया हो, सभी खेड़ों के सभी महावतों का मुखिया मचुआ अप्पा—पीटरसन साहब का दायाँ हाथ, जिसने पिछले चालीस सालों से कोई पक्की सड़क नहीं देखी थी, बाल तुमई को अपने कंधे से बहुत ऊपर उठाए उछला और चिल्लाया, ''मेरे भाइयो, सुनो! मेरे मालिक लोगो, आप भी सुनें, क्योंकि मैं मचुआ अप्पा बोल रहा हूँ। यह छोटा बच्चा आज से छोटा तुमई नहीं कहलाएगा, बल्कि हाथियों का तुमई कहलाएगा, जैसा इससे पहले इसके परदादा कहलाते थे। जो बात किसी आदमी ने नहीं देखी, वह इसने पूरी रात देखी है और सभी हाथियों का और जंगल के सभी देवताओं का आशीर्वाद इस पर बना रहेगा। यह एक उम्दा हाथी-टोही बनेगा। यह मुझसे, मचुआ अप्पा से भी ज्यादा होशियार बनेगा। इसकी साफ नजर नए रास्ते खोजेगी, पुराने रास्तों का इस्तेमाल करेगी। खेड़ों में जंगली हाथियों के पैरों में रस्सी बाँधने के लिए जब यह उनके पेट के नीचे से गुजरेगा, तब इसका बाल भी बाँका न होगा और किसी हमलावर हाथी के सामने जब वह फिसल जाएगा तो वह हाथी समझ जाएगा कि वह कौन है और उसे कुचलने की हिम्मत नहीं करेगा। अहा! जंजीरों में बँधे हुए मेरे मालिको!'' वह तेज कदमों से हाथियों की पंक्ति की ओर गया—''यही वो बच्चा है, जिसने तुम्हारे गुप्त स्थानों पर तुम्हें नाचते देखा है; एक ऐसा

नजारा, जो किसी आदमी ने कभी नहीं देखा! मेरे मालिको, उसे इज्जत दो! मेरे बच्चो, उसे सलाम करो। हाथियों के तुमई को सलाम करो। गंगा प्रसाद, अहा, हीरा गज, बिरची गज, कुत्तर गज, अहा! पद्मिनी—तूने इसे नाचघर में देखा था और तूने भी काला नाग—मेरे हीरा हाथी, अहा। सब मिलकर हाथियों के तुमई को सलाम करो! बर्राओ!''

और उस आखिरी पुकार पर पंक्ति में खड़े सभी हाथियों ने अपनी सूँड़ों को तब तक उठाए रखा, जब तक वे उनके माथों को छूने न लगीं—फिर उनके चिंघाड़ने की जोरदार आवाज, खेड़े के हाथियों का शाही सलाम—जिसके अधिकारी केवल भारत के वायसराय हैं।

परंतु यह सब बाल तुमई के लिए हो रहा था जिसने वह नजारा देखा था, जो इससे पहले किसी आदमी ने नहीं देखा था—गारो पहाड़ियों के अंतस्थल में रात के समय हाथियों का नाच, वह भी अकेले!

भगवान् शिव और टिड्डा

(तुमई की माँ ने उसके छोटे भाई को सुलाने के लिए जो गीत गाया)

(भगवान्) शिव, जो फसलों पर
वर्षा का जल बरसाते हैं
और हवाओं को निर्देशित करते हैं, ने
बहुत समय पहले एक दिन
सभी प्राणियों को
अपने-अपने हिस्से की मशक्कत, भोजन और मुकद्दर दिया
गद्दीनशीन राजा से लेकर
गेट पर खड़े भिखारी तक
उस पालनकर्ता शिव ने
सभी के लिए कुछ-न-कुछ बनाया
ऊँट के लिए कँटीली झाड़ियाँ,
मवेशियों के लिए चारा
और मेरे प्यारे बच्चे,
सिर रखकर सोने के लिए
माँ का वक्ष!
अमीरों को दिया गेहूँ
तो गरीबों को बाजरा
घर-घर जाकर भिक्षा माँगनेवाले
साधुओं को रूखा-सूखा
बाघ को ताजा तो चील को बासी मांस,
और बेघर कुटिल सियारों के लिए
बचा-खुचा मांस!
कोई भी आदमी उनके लिए
बहुत बड़ा नहीं और न बहुत छोटा

उनकी सब लीलाओं को देखती पार्वती
को पति से कुछ मजाक करने की सूझी,
एक छोटा सा टिड्डा उठाकर
उन्होंने अपने आँचल में छिपा लिया
प्राणियों को सौगातें बाँटते शिव से बोलीं
महादेव! मेरे एक सवाल का जवाब दीजिए।
ऊँट लंबे ऊँचे हैं और मवेशी भारी भरकम,
सबका पेट भर गया मेरे स्वामी
और आपके उपहार भी समाप्त हो गए,
मगर क्या एक छोटा सा जीव
भूखा नहीं रह गया?
शिव ने हँसकर जवाब दिया,
सबको अपना-अपना हिस्सा मिला है
उस छोटे से जीव सहित
जो तुम्हारे हृदय में छिपा है!
चौंककर पार्वती ने उसे बाहर निकाला
वह एक नई उगी पत्ती को कुतर रहा था!
पार्वती ने सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ
शिव को नमन किया
उस पालनकर्ता शिव को, जिसने
सभी के लिए कुछ-न-कुछ बनाया
ऊँट के लिए कँटीली झाड़ियाँ,
मवेशियों के लिए चारा,
और मेरे प्यारे बच्चे!
सिर रखकर सोने के लिए,
माँ का वक्ष!

❑

महारानी के सेवक

आप गणित के इस सवाल का हल,
अंशों से या फिर तीन के सामान्य नियम से
निकाल सकते हैं
परंतु जो तरीका आकाश का होगा
वह अंकिता का नहीं होगा।
आप उसे उलट या पलट सकते हैं
या थक जाने तक उसे
बालों की तरह गूँथ सकते हैं
परंतु जो तरीका पिली विंकी का होगा
वह विंकी पॉप का नहीं होगा!

पूरे एक महीने से भारी बारिश हो रही थी—रावलपिंडी नामक स्थान पर लगे कैंप पर जहाँ तीस हजार आदमी और हजारों की संख्या में ऊँट, हाथी, घोड़े, बैल और खच्चर इकट्ठा हुए थे और जिसकी शोभा बढ़ाने के लिए भारत के वायसराय भी वहाँ आनेवाले थे। वे अफगानिस्तान के अमीर—एक वहशी देश का खूँखार बादशाह—की अगवानी के लिए वहाँ आनेवाले थे। अपनी रक्षा के लिए अमीर अपने साथ आठ सौ आदमी और घोड़े लाया था, जिन्होंने कभी कोई कैंप या रेलगाड़ी नहीं देखी थी—मध्य एशिया के किसी सुदूर इलाके से आए वे हिंसक आदमी और वैसे ही घोड़े। हर रात इन घोड़ों का एक झुंड अपने पैरों की रस्सी तुड़ाकर अँधेरे में कीचड़ से गुजरकर पूरे कैंप में धमाचौकड़ी करते या ऊँट भी अपनी रस्सी तुड़ाकर इधर-उधर भागते और शामियानों की रस्सियों में उलझकर गिर पड़ते और आप कल्पना कर सकते हैं कि सोने की कोशिश करते लोगों पर क्या गुजरती होगी। मेरा शामियाना ऊँटों की पंक्ति से बहुत दूर था और मैंने सोचा था कि वह सुरक्षित होगा। परंतु एक रात एक आदमी ने अपना सिर अंदर किया और चिल्लाया, ''बाहर निकलो, जल्दी! वो आ रहे हैं! मेरा तंबू तो गया!''

मैं जानता था कि 'वो' कौन थे, इसलिए मैंने अपने बूट पहने, रेनकोट चढ़ाया और तेजी से कीचड़ में निकल पड़ा। मेरा प्यारा फॉक्स टेरियर कुत्ता विक्सन दूसरी तरफ से बाहर निकल गया और फिर ऊँटों के घुरघुराने और उनके पैरों की धम-धम की आवाज के साथ मैंने तंबू को उखाड़ते और किसी पगलाए भूत की तरह नाचते हुए देखा, क्योंकि उसका आधार खंबा उखड़ गया था। एक ऊँट उसमें उलझ गया था। भीगा और गुस्से में होने के बावजूद मैं हँसे बिना न रह सका। फिर मैं दौड़ता रहा, क्योंकि मैं नहीं जानता था कि ऐसे कितने ऊँट उधम मचा रहे होंगे और जल्द ही कीचड़ में अपना रास्ता बनाता हुआ मैं कैंप से बहुत दूर निकल आया।

अंत में मैं एक तोप के पिछले हिस्से पर गिर गया और तब मुझे समझ आया कि मैं तोपखाने के आसपास कहीं हूँ, जहाँ रात के समय तोपें रखी जाती हैं। मैं उस रिमझिम बारिश और अँधेरे में भटकना नहीं चाहता था, इसलिए इधर-उधर से दो-तीन डंडे खोजकर उन्हें दो तोपों के बीच आड़े रखकर और फिर अपने रेनकोट को उनके ऊपर फैलाकर एक झोंपड़ी जैसी बना ली और यह सोचते हुए कि विक्सन कहाँ गया होगा और मैं खुद कहाँ हूँ, उसके नीचे लेट गया।

मैं सोने की तैयारी कर ही रहा था कि मुझे किसी जानवर के हिनहिनाने और उसके गले में बँधी घंटी की आवाज सुनाई दी और अपने भीगे कान फड़फड़ाते हुए एक खच्चर मेरे पास से गुजरा। वह स्क्रूगन तोपखाने का खच्चर था, क्योंकि मैं उसकी पीठ पर कसी हुई जीन पर फीतों, छल्लों और जंजीरों की खनखनाहट सुन सकता था। स्क्रूगन दो

हिस्सों में बनाई गई उस छोटी तोप को कहते हैं, जिन्हें इस्तेमाल करने से पहले स्क्रू से कस दिया जाता है। इन्हें पहाड़ों पर या कहीं भी, जहाँ तक खच्चर इन्हें ले जा सकता हो, ले जाया जाता है और चट्टानी प्रदेशों में लड़ने के लिए यह बहुत उपयोगी है।

खच्चर के पीछे एक ऊँट था, जिसके बड़े और नरम पंजे कीचड़ में फच-फच कर और फिसल रहे थे और जिसकी गरदन एक भटकी हुई मुरगी की तरह आगे-पीछे हो रही थी। सौभाग्यवश मैं काफी हद तक जानवरों की भाषा—बेशक जंगली जानवरों की नहीं, परंतु कैंप-आधारित जानवरों की—जानता था और मैं समझ गया कि वह क्या कह रहा था।

यह वही ऊँट रहा होगा जो मेरे तंबू में उलझ गया था, क्योंकि वह खच्चर से कह रहा था, ''अब मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ?'' मैं लहराती हुई किसी सफेद चीज से लड़ बैठा और उसने जोर से एक डंडा मेरी गरदन पर मार दिया। (वह मेरे तंबू का टूटा हुआ खूँटा था और यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई।) ''क्या हम दौड़ते रहें?''

''अच्छा, तो वह तुम थे,'' खच्चर ने कहा, ''तुम और तुम्हारे दोस्त, जो कैंप में उधम मचाते रहे हैं? ठीक है, उसकी सजा तुम्हें सुबह मिलेगी, लेकिन उसके लिए मैं भी तुम्हें कुछ इनाम दूँगा।''

जैसे ही खच्चर ने पीछे घूमकर ऊँट की पसलियों में दो लातें जमाईं, जिनसे ढोल जैसी आवाज निकली, उसकी काठी के साजो-समान की खनखनाहट सुनाई दी। ''अगर दोबारा ऐसा किया,'' उसने कहा, ''तो तुम्हें रात के समय तोपखाने के खच्चरों के बीच 'चोर-चोर, आग-आग' चिल्लाते हुए भागना बहुत महँगा पड़ेगा। चुपचाप बैठ जाओ और मूर्खों की तरह गरदन हिलाना बंद करो।''

ऊँटों के अटपटे तरीके से भुनभुनाता हुआ वह ऊँट बैठ गया। अँधेरे में नियमित गश्त पर निकले घुड़सवारों के घोड़ों की टाप सुनाई दी और एक बड़ा सा फौजी घोड़ा एक तोप की नाल लाँघते हुए मुस्तैदी से खच्चर के पास आ खड़ा हुआ।

''बड़े शर्म की बात है, अपने नथुने फुलाते हुए वह बोला, ''वो ऊँट फिर हमारी घुड़साल में घुस आए हैं—इसी हफ्ते में तीसरी बार!अगर एक घोड़े को ठीक से सोने नहीं दिया जाएगा तो वह कैसे खुद को फिट रख पाएगा?कौन है यहाँ?''

''मैं पहले स्क्रू तोपखाने की दो नंबर की तोप ढोनेवाला खच्चर हूँ,'' खच्चर ने कहा, ''और यह है तुम्हारा दोस्त! इसने मुझे भी जगा दिया है। तुम कौन हो?''

''नंबर पंद्रह, ई-ट्रूप, नौवें लांसर्ज—डिक कनलिफ का घोड़ा। ओए, तू जरा खड़ा तो हो।''

''ओह, माफ करना,'' खच्चर ने कहा, ''अभी अँधेरे में कुछ भी देखना मुश्किल है। इन ऊँटों की हरकतों की वजह से उनसे घिन आती है। कुछ चैन लेने के लिए मैं अपने अस्तबल से यहाँ चला आया।''

''मेरे मालिको,'' ऊँट ने विनम्रता से कहा, ''हमने रात को बुरे-बुरे सपने देखे थे और हम बहुत डरे हुए थे। मैं तो उनतालीसवीं देशी पैदल सेना का सामान ढोनेवाला एक ऊँट हूँ और आपके जैसा बहादुर नहीं हूँ, मेरे मालिको।''

''फिर पूरे कैंप में उधम मचाते हुए घूमने की बजाय तुम उनतालीसवीं देशी पैदल सेना का सामान ही क्यों नहीं ढोते रहे?'' खच्चर ने पूछा।

''वे सचमुच इतने बुरे सपने थे,'' ऊँट ने कहा, ''मुझे खेद है। सुनो, मैं क्या कह रहा था!क्या हम फिर से भागना शुरू करें?''

''चुपचाप बैठे रहो,'' खच्चर ने कहा, ''नहीं तो यहाँ तोपों के बीच तुम अपनी पतली लंबी टाँगें तुड़वा बैठोगे।''

अपना एक कान खड़ा कर वह कुछ सुनने लगा।

''बैल!'' उसने कहा, ''तोप ढोनेवाले बैल! सचमुच, तुम और तुम्हारे उधमी दोस्तों ने सारे कैंप को जगा दिया है। तोप ढोनेवाले एक बैल को हरकत में लाना इतना आसान नहीं है।''

मैंने जमीन पर घिसटती एक जंजीर की आवाज सुनी और जुते हुए दो सफेद बैल एक भारी सीजगन, जिसे लड़ाई के दौरान ढोने के लिए हाथी तैयार नहीं होते, को खींचकर ले जा रहे थे। तभी एक बदहवास-सा खच्चर, जिसने घिसटती हुई जंजीर पर अपना पैर लगभग रख ही दिया था, 'बिली, बिली' पुकारता हुआ वहाँ आया।

''यह हमारे ही दल का है,'' पुराने खच्चर ने फौजी घोड़े से कहा, ''वह मुझे ही पुकार रहा है। सुनो नौजवान, चिल्लाना बंद करो। अँधेरे की वजह से अब तक कोई नहीं मरा है।''

दोनों बैल साथ ही बैठकर जुगाली करने लगे, परंतु युवा खच्चर बिली के साथ सटकर बैठ गया।

''डरावने भयंकर जीव, बिली!'' उसने कहा, ''जब हम सो रहे थे, तब वे हमारी पंक्तियों में घुस आए। तुम्हें क्या लगता है, वे हमें मार डालेंगे?''

''तुम्हें एक जोरदार लात लगाने का मेरा मन कर रहा है,'' बिली ने कहा, ''तुम्हारे जैसा प्रशिक्षित, बलवान खच्चर इन महानुभाव घोड़ों के सामने पूरे दल को शर्मिंदा करे!''

''नरमी से, नरमी से!'' घोड़े ने कहा, ''याद रखो, शुरुआत में सब ऐसे ही होते हैं। जब मैंने पहली बार एक आदमी को देखा था (यह ऑस्ट्रेलिया की बात है, जब मैं तीन साल का था) मैं आधा दिन दौड़ता रहा था और अगर उस वक्त किसी ऊँट को देखा होता तो अब तक दौड़ रहा होता।''

अंग्रेजी घुड़सवार फौज के लगभग सभी घोड़े ऑस्ट्रेलिया से लाए गए हैं और अश्वारोही सैनिकों द्वारा ही प्रशिक्षित किए गए हैं।

''आप ठीक कहते हैं।'' बिली ने कहा, ''नौजवान, काँपना बंद करो। जब उन्होंने पहली बार जंजीरों समेत पूरी जीन मेरी पीठ पर रखी थी, अपने दोनों अगले पैरों पर खड़े होकर मैंने वह सब उतार फेंका था। मैंने दुलत्ती मारने की सही तकनीक तब तक सीखी नहीं थी मगर तोपखाने के सारे लोगों ने कहा था कि उन्होंने ऐसी दमदार किक कभी नहीं देखी थी।''

''मगर वह जीन या ऐसी कोई चीज नहीं थी जो बजती हो,'' नौजवान खच्चर ने कहा, ''तुम तो जानते हो बिली कि अब मैं उन चीजों की परवाह नहीं करता। वे पेड़ जैसी कोई विशाल चीज थे और हमारी पंक्ति में धमाचौकड़ी मचा रहे थे। इसी अफरातफरी में मेरे गले से बँधी रस्सी टूट गई। वहाँ न तो मेरा सवार था और न तुम थे। इसलिए मैं इन महानुभावों के साथ भागकर यहाँ आ गया।''

''हूँ!'' बिली ने कहा, ''जैसे ही मैंने सुना कि ऊँट उधम कर रहे हैं, मैं अपने आप ही वहाँ से चला आया। जब एक स्क्रू-गन खच्चर तोप खींचनेवाले बैलों को महानुभाव कहता है तो समझो वह बुरी तरह घबराया हुआ है। और वहाँ जमीन पर बैठे तुम लोग कौन हो?''

दोनों बैलों ने अपने मुँह के एक तरफ बना गोला गटका और एक साथ बोले, ''बड़े तोपखाने की पहली तोप की सातवीं जीन। जब ऊँट आए, हम सो रहे थे, मगर जब हम उनके पैरों तले कुचले जाने लगे, हम उठ बैठे और वहाँ से निकल भागे। एक अच्छे बिस्तर पर बेचैनी से करवट बदलने से तो अच्छा है कीचड़ में शांति से लेटना। हमने आपके दोस्त खच्चर से कहा कि डरने की कोई बात नहीं है मगर वह इतना ज्ञानी था कि कुछ और सोचता था। वाह!''

वे फिर जुगाली करने लगे।

‘‘डरने से यही होता है,’’ बिली ने कहा, ‘‘तोप-वाहक बैल तुम्हारा मजाक उड़ा रहे हैं। मैं समझता हूँ तुम खुश होंगे, नौजवान।’’

युवा खच्चर ने दाँत किटकिटाए और मैंने उसके मुँह से इस आशय की कुछ बात सुनी कि वह दुनिया के किसी मुस्टंडे बैल से नहीं डरता। परंतु बैलों ने हलके से केवल अपने सींग टकराए और जुगाली करते रहे।

‘‘डर जाने के बाद अब गुस्सा मत करो। यह सबसे निचले दरजे की कायरता है,’’ फौजी घोड़े ने कहा, ‘‘रात के वक्त कोई बंदा ऐसी चीज देखे, जिसे वह समझ न पाए, तो मैं समझता हूँ कि उसे माफ कर दिया जाना चाहिए। ऑस्ट्रेलिया में हम सब पूरे चार सौ पचास घोड़े बार-बार अपने खूँटे तुड़ाकर भाग जाते थे, जब एक नए भरती हुए घोड़े ने हमें उछलनेवाले साँप के बारे में कहानियाँ सुनाई थीं। उसके बाद तो हम अपने सिर से लटकती छोटी सी रस्सी से भी बुरी तरह डरते थे।’’

‘‘कैंप में यह सब होता ही है,’’ बिली ने कहा, ‘‘सिर्फ उसका मजा लेने के लिए मैं भी उछलकूद करता हूँ, जब एक या दो दिन तक मैं बाहर नहीं निकलता। मगर फौज की अपनी सेवा में तुम क्या करते हो?’’

‘‘ओह, वह एक बिलकुल नई तरह का जूता है,’’ घोड़े ने कहा, ‘‘डिक कनलिफ मेरी पीठ पर बैठता है और मेरी पसलियों में अपने घुटने दबाता है और मुझे सिर्फ इतना करना होता है कि इस बात का ध्यान रखूँ कि मेरे पैर कहाँ पड़ रहे हैं और अपने पिछले पैरों को ज्यादा उछलने न दूँ और लगाम के इशारे बारीकी से समझूँ।’’

‘‘लगाम के इशारों से आपका क्या मतलब है?’’ युवा खच्चर ने पूछा।

‘‘तुम्हारा सिर,’’ घोड़े ने चिढ़कर जवाब दिया, ‘‘क्या तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि तुम्हारे कामकाज में तुम्हें लगाम-सजग होना सिखाया ही नहीं गया?लगाम के कसते ही अगर तुम घूम न जाओ तो क्या तुम कुछ भी कर सकते हो? यह तुम्हारे सवार के जीने-मरने का सवाल है और बेशक, तुम्हारे जीने और मरने का भी। जैसे ही तुम अपने मुँह में लगाम को कसता महसूस करो अपने पिछले पैरों को अपने बदन के नीचे रखते हुए तुरंत घूम जाओ। अगर घूमने की गुंजाइश न हो तो थोड़ा सा पीछे हटो और अपने पिछले पैरों के बल घूम जाओ। इसी को लगाम से संबंधित होशियारी कहते हैं।’’

‘‘हमें इस तरह से नहीं सिखाया गया है,’’ बिली ने रूखाई से कहा, ‘‘हमें हम पर बैठे आदमी का हुकुम मानना सिखाया गया है; वह कहे तो आगे बढ़ो और वह कहे तो रुक जाओ। मैं समझता हूँ ये दोनों एक जैसी बातें हैं। अब अपनी ड्यूटी की नजाकत, जो तुम्हारे पिछले पैरों के घुटने से नीचे के हिस्से के लिए बहुत जोखिम भरी है और पालन-पोषण के अलावा तुम क्या करते हो?’’

‘‘वह कई बातों पर निर्भर है,’’ फौजी घोड़े ने कहा, ‘‘आमतौर पर मुझे वहाँ जाना होता है जहाँ भयंकर चीख-पुकार मची होती है और चाकू, बड़े-बड़े चमकदार चाकू, उनसे भी बदतर जैसे हमारे पैरों में नाल लगानेवालों के पास होते हैं—हाथ में लिये बड़े-बड़े बालोंवाले लोग लड़ रहे होते हैं। मुझे इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि डिक का बूट उससे अगले आदमी के बूट को बस छू रहा हो, न कि दो घोड़ों के बीच वह पिस जाए। मैं अपनी दाईं आँख के दाहिनी ओर डिक का भाला देख सकता हूँ और मैं जानता हूँ कि मैं सुरक्षित हूँ। जब हम जल्दी में होते हैं तो मुझे डिक और मेरे सामने खड़े घोड़े और उसके सवार की परवाह नहीं करनी चाहिए।’’

‘‘क्या चाकू तुम्हें घायल नहीं करते?’’ युवा खच्चर ने पूछा।

‘‘एक बार चाकू ने मेरा सीना चीर दिया था मगर घाव ज्यादा गहरा नहीं था और उसमें डिक की कोई गलती नहीं थी।’’

‘‘अगर मैं घायल हुआ होता तो इस बात की गहराई से छानबीन करता कि गलती किसकी थी,’’ युवा खच्चर ने

कहा।

‘‘अगर आपको अपने मालिक पर विश्वास नहीं है तो आप फौज की नौकरी छोड़कर भाग भी सकते हैं,’’ घोड़े ने कहा, ‘‘हमारे कुछ घोड़े ऐसा करते भी हैं और मैं उन्हें दोष नहीं देता। तो जैसा मैं कह रहा था, वह डिक की गलती नहीं थी। वह जमीन पर पड़ा हुआ था और कहीं मेरा पैर उस पर न पड़ जाए, इस डर से मैंने आगे और पीछे के अपने पैर तान दिए और उसने कुछ और समझकर अपनी तलवार मुझ पर चला दी। अब अगर मुझे किसी गिरे हुए आदमी के ऊपर जाना पड़े तो मैं उसी पर पैर रखूँगा—मजबूती से।’’

‘‘हूँ!’’ बिली ने कहा, ‘‘यह बड़ी मूर्खतापूर्ण बात लगती है। चाकू-तलवार बड़ी वाहियात चीजें हैं। इससे तो अच्छा है अपनी पीठ पर ठीक तरह से संतुलित काठी चढ़ाए, अपनी आँखें और कान खुले रखकर मजबूती से पैर जमाते हुए पहाड़ की कगार पर सँकरे रास्तों, जहाँ मुश्किल से पैर रखने की जगह हो, से सरक-सरककर पहाड़ पर चढ़ना। तब आप बिना हिले-डुले शांत खड़े रहते हो और अपने सवार से कोई शिकायत नहीं करते—और अपनी पीठ पर से तोप के हिस्से उतारकर उन्हें जोड़े जाने तक तुम खामोश खड़े रहते हो और फिर तोप से निकले गोलों को नीचे दूर गिरता हुआ देखते हो।’’

‘‘क्या पहाड़ पर से कभी तुम्हारा पैर नहीं फिसलता?’’ घोड़े ने पूछा।

‘‘यह कहा जाता है कि जब एक खच्चर का पैर फिसले तो तुम एक मुरगी के कान मरोड़ सकते हो,’’ बिली ने कहा, ‘‘कभी-कभी बेतरतीब ढंग से कसी गई काठी एक खच्चर को असंतुलित कर सकती है मगर विरले ही ऐसा होता है। काश, मैं तुम्हें अपना काम दिखा सकता। वह बहुत बढ़िया काम है। मुझे यह समझने में तीन साल लग गए थे कि ये आदमी लोग मुझे कहाँ और क्यों ले जा रहे हैं। हमारे काम की तकनीक यह है कि जहाँ तक हो सके अपने आपको खुले निशाने पर न आने दो, नहीं तो तुम दुश्मन की गोलियों का शिकार बन सकते हो। इस बात को हमेशा याद रखना, नौजवान। जहाँ तक हो सके, अपने आपको छिपाए रखो, चाहे तुम्हें एक मील ज्यादा चलना पड़े। जब इस तरह की चढ़ाई करनी होती है तो मैं ही दल की अगुवाई करता हूँ।’’

‘‘तुम पर कोई गोली चलाए और तुम्हें उनका मुकाबला करने का मौका भी न मिले!’’ अपने दिमाग पर जोर डालता हुआ घोड़ा बोला, ‘‘मैं यह सहन नहीं कर सकता। मैं तो डिक के साथ उन पर टूट पड़ना चाहूँगा।’’

‘‘नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुम जानते हो कि एक बार तोपें पोजीशन ले लें तो सारी फायरिंग वे ही करेंगी। यह तरीका वैज्ञानिक और साफ-सुथरा है। मगर चाकू, तलवार—बाप रे!’’

काफी समय से सामान ढोनेवाला वह ऊँट अपना सिर आगे-पीछे कर रहा था और इस बातचीत में टपक पड़ने के लिए बेचैन था। मैंने उसे गला साफ करते हुए दबी आवाज में यह कहते सुना—

‘‘मैं-मैं भी थोड़ा बहुत लड़ा हूँ, मगर न तो पहाड़ पर चढ़ते हुए और न खूनी मुठभेड़ों में।’’

‘‘लो, अब तुम भी टपक पड़े!’’ बिली ने कहा, ‘‘तुम्हें देखने से नहीं लगता कि तुम ज्यादा चढ़ाई चढ़ने या हमला करने के लिए बने हो। तो घासफूस ढोनेवाले बूढ़े खूसट, बताओ कि तुम कैसे लड़े थे?’’

‘‘सही तरीके से,’’ ऊँट से कहा, ‘‘हम सब बैठ गए।’’

‘‘हो, हो!मेरी दुम में लगे काठी के फीते और मेरे गले से लटकी हुई पट्टी!’’ फौजी घोड़े ने तमककर कहा, ‘‘बैठकर लड़ो?’’

‘‘एक बड़े से चौक में हम सभी सौ ऊँट बैठ गए,’’ ऊँट ने कहना जारी रखा, ‘‘और आदमियों ने हमारी पीठ पर काठी कसकर उस पर सामान पैक कर दिया और फिर हमें चौक से बाहर ले जाकर हमारी पीठ की आड़ लेकर सभी दिशाओं में गोली चलाना शुरू कर दिया।’’

‘‘ये कौन लोग थे? क्या कोई भी आकर पीछे से गोली चलाना शुरू कर देता था?’’ घोड़े ने कहा, ‘‘घुड़सवारी स्कूलों में हमें सिखाया जाता है कि जब हमारे मालिकों को हमारी आड़ लेकर गोली चलाना हो तो हमें आधा लेट जाना चाहिए, मगर इस मामले में मैं डिक कनलिफ के सिवाय किसी पर भरोसा नहीं कर सकता। उससे मुझे गुदगुदी होती है और इसके अलावा जब मेरा सिर जमीन पर हो तो मैं कुछ देख नहीं सकता।’’

‘‘इस बात से क्या फर्क पड़ता है कि तुम्हारी आड़ लेकर कौन गोली चला रहा है?’’ ऊँट ने कहा, ‘‘वहाँ काफी संख्या में आदमी और ऊँट आसपास ही होते हैं और धुएँ के बादल भी। उस वक्त मुझे डर नहीं लगता। मैं शांत बैठा इंतजार करता रहता हूँ।’’

‘‘और फिर भी,’’ बिली ने कहा, ‘‘तुम्हें रात में बुरे-बुरे सपने आते हैं और तुम रात में पूरे कैंप में उधम मचाते रहते हो। चलो छोड़ो। और इससे पहले कि मैं बैठूँ या लेटूँ और किसी आदमी को अपनी आड़ से गोली चलाने दूँ, क्या मेरी दुलत्ती और उसका सिर आपस में बात नहीं करेंगे? क्या तुमने इससे बड़ी कोई गप सुनीहै?’’

बड़ी देर तक खामोशी छाई रही, फिर दोनों बैलों में से एक ने अपना सिर उठाया और बोला, ‘‘सचमुच, यह बहुत ही मूर्खतापूर्ण बात है। लड़ने का सिर्फ एक ही तरीका है।’’

‘‘ओह, अब तुम भी अपनी बात सुनाओ,’’ बिली ने कहा, ‘‘मेरी बात का बुरा मत मानना। मैं समझता हूँ तुम लोग अपनी पूँछ के बल खड़े होकर लड़ते होगे!’’

‘‘लड़ने का एक ही तरीका है,’’ दोनों बैल एक साथ बोले (वे शायद जुड़वाँ रहे होंगे), ‘‘और यह है वो तरीका। जैसे ही दो पूँछोंवाला प्राणी चिंघाड़े, उस बड़ी तोप को खींचने के लिए हम बीसों बैलों को जोत दो। (कैंप की भाषा में ‘दो पूँछोंवाला यानी हाथी’।)’’

‘‘यह दो पूँछोंवाला चिंघाड़ता क्यों है?’’ युवा खच्चर ने पूछा।

‘‘यह जाहिर करने के लिए कि वह दूसरी ओर से उठनेवाले धुएँ के नजदीक भी नहीं फटकेगा। यह दो पूँछोंवाला सबसे बड़ा कायर है। फिर हम सब मिलकर उस बड़ी तोप को खींचते हैं—हैया, हुल्ला! हीया, हुल्ला! हम बिल्लियों की तरह नहीं चढ़ते हैं, न बछड़ों की तरह कूदते-फाँदते हैं। जुते हुए हम बीस बैल मैदानों में तब तक चलते रहते हैं, जब तक हमारे कंधों से जुए उतार न दिए जाएँ। फिर हम घास चरने लगते हैं और बड़ी तोपें मैदान के पार किसी कस्बे के कच्चे मकानों पर गरजने लगती हैं और धूल इस तरह उड़ती है जैसे शाम के समय सैकड़ों मवेशी घर लौट रहे हों।’’

‘‘ओह, तो तुम उस वक्त का इस्तेमाल घास चरने में करते हो?’’ युवा खच्चर ने कहा।

‘‘वह वक्त या कोई भी वक्त। खाना तो हमेशा ही अच्छा लगता है। दोबारा जोत दिए जाने तक हम चरते रहते हैं और फिर हम तोप को खींचकर वापस वहीं ले जाते हैं, जहाँ दो पूँछवाला उसका इंतजार कर रहा होता है। कभी-कभी सामने के कस्बों में भी बड़ी तोपें होती हैं, जो जवाब में गरजती हैं और हममें से कुछ बैल मारे जाते हैं और फिर बचे हुए बैलों को और ज्यादा चरने को मिलता है। यही तो किसमत है। जो भी हो, वह दो पूँछवाला महाकायर है। लड़ने का यही सही तरीका है। हम दोनों भाई हापुड़ के रहनेवाले हैं। हमारे पिता भगवान् शिव के पवित्र नंदी थे। हमारी कहानी पूरी हुई।’’

‘‘भई, आज तो सचमुच मुझे बहुत कुछ जानने को मिला,’’ फौजी घोड़े ने कहा, ‘‘स्क्रूगन वाहक दल के खच्चर भाइयो, अगर तुम पर बड़ी तोपों से फायरिंग हो रही हो और दो पूँछवाला पीछे खड़ा हो तो क्या तुम्हारी खाने की इच्छा होगी?’’

‘‘लगभग उतनी ही होगी जितनी हमारे बैठ जाने और हमारे ऊपर आदमियों के पसर जाने या तलवार लेकर दूसरों

पर टूट पड़ने की होगी। ऐसी बकवास मैंने कभी नहीं सुनी। पहाड़ की एक कगार, पीठ पर ठीक से कसा हुआ भार, एक ऐसा सवार, जो तुम्हें अपना रास्ता खोजने की इजाजत दे और आपका यह सेवक खच्चर हाजिर है। मगर वो सब दूसरी बातें—नहीं।'' अपना एक पैर जमीन पर मारते हुए बिली ने कहा।

''बेशक,'' घोड़े ने कहा, ''हर प्राणी एक जैसा नहीं बना है और मैं देख सकता हूँ कि पिता के पक्षवाला तुम्हारा परिवार कई बातों को नहीं समझ पाएगा।''

''तुम मेरे पिता की तरफ के परिवार की बिलकुल चिंता न करो,'' बिली ने गुस्से से कहा, क्योंकि हर एक खच्चर इस बात की याद दिलाए जाने से नफरत करता है कि उसका पिता एक गधा था, ''मेरे पिता दक्षिण के एक बहादुर परिवार से थे और उनके सामने कोई घोड़ा आ जाता तो वे दुलत्तियाँ झाड़कर और काटकर उसका भुरता बना देते थे। यह बात याद रखना तुम मुश्टंडे भूरे ब्रंबी!''

ब्रंबी का मतलब है एक जंगली घोड़ा, जिसमें कोई तहजीब न हो। आप कल्पना कर सकते हैं कि उस आस्ट्रेलियाई घोड़े ने खुद को कितना अपमानित महसूस किया होगा। मैंने अँधेरे में उसकी आँखों के सफेद हिस्से को चमकते हुए देखा।

''अबे ओ दक्षिण के आयातित गधे के बच्चे,'' उसने दाँत भींचते हुए कहा, ''मैं तुझे बता दूँ कि मैं अपनी माँ की तरफ से मेलबोर्न कप की विजेता कारबाइन से जुड़ा हुआ हूँ और जहाँ से मैं आता हूँ, वहाँ के लोगों को छर्रों के जरिए मटर के दाने शूट करनेवाले किसी तोपखाने के एक बड़बोले खच्चर की बदतमीजी सहन करने की आदत नहीं है। क्या तू लड़ने के लिए तैयार है?''

''तेरे पिछले पैरों पर!'' बिली चीखा। एक-दूसरे का सामना करने के लिए वे दोनों जरा पीछे हटे और मैं उन दोनों के बीच एक भीषण लड़ाई की उम्मीद कर रहा था, तभी अँधेरे में दाहिनी ओर से एक घरघराती सी आवाज आई, ''बच्चो, तुम किस बात पर लड़ रहे हो?''

एक कुंठित श्वास छोड़ते हुए दोनों जानवर ढीले पड़ गए, क्योंकि न तो वह घोड़ा और न खच्चर एक हाथी का हस्तक्षेप पसंद करते थे।

''यह तो वही दो पूँछोंवाला है,'' घोड़े ने कहा, ''मैं इसे सहन नहीं कर सकता। बदन के दोनों तरफ पूँछ! यह भी कोई बात है।''

''मेरे भी ठीक यही विचार हैं,'' अंतरंगता बढ़ाने की गरज से घोड़े के कुछ नजदीक आते हुए खच्चर बोला, ''कुछ बातों में हम काफी मिलते-जुलते हैं।''

''मैं समझता हूँ कि हम दोनों को ये गुण अपनी माँओं से मिले हैं,'' घोड़े ने कहा, ''इन बातों पर लड़ना फिजूल है। हाय, दो पूँछोंवाले!क्या तुम बँधे हुए हो?''

''हाँ,'' सूँड़ के ऊपरी हिस्से तक झलकती हँसी के साथ दो पूँछवाले ने कहा।

''मैं रात-भर के लिए खूँटे से बाँध दिया गया हूँ। मैंने तुम दोनों की बातें सुनी हैं। मगर डरो नहीं। मैं वहाँ नहीं आ रहा हूँ।''

आधी सुनाई देनेवाली आवाज में दोनों बैलों और ऊँट ने कहा, ''दो पूँछवाले से डर!क्या बेवकूफी भरी बात है।'' बैलों ने कहना जारी रखा, ''हमें खेद है कि तुमने हमारी बातें सुनीं मगर वो सच हैं। दो पूँछवाले, जब तोपें गरजती हैं तो तुम इतना डरते क्यों हो?''

''अब,'' जैसे एक छोटा बच्चा क्लासरूम में पोएम सुनाते हुए करता है, अपने पिछले एक पैर से दूसरे को खुजलाते हुए दो पूँछवाला बोला, ''मैं ठीक से नहीं कह सकता कि तुम समझ पाओगे या नहीं।''

''भले ही हम समझते न हों पर तोपें हमें खींचनी पड़ती हैं,'' बैलों ने कहा।

''मैं जानता हूँ और यह भी कि तुम अपने आपको जितना बहादुर समझते हो, उससे भी कुछ ज्यादा ही हो। मगर मेरा मामला कुछ और है। मेरे तोपखाने के कैप्टन ने उस दिन मुझे पेकीडर्मेट्स एनेक्रोनिज्म (मोटी खालवाला अजूबा) कहा।''

''मैं समझता हूँ यह लड़ाई का एक और तरीका है,'' बिली, जो अब तक अपने स्वाभाविक रंग में आ गया था, ने कहा।

''बेशक, तुम इसका मतलब नहीं जानते, मगर मैं जानता हूँ। इसका मतलब है बीच में और यही वह स्थिति है जिसमें मैं हूँ। मैं अपने मन में साफ-साफ देख सकता हूँ कि जब एक गोला फटेगा तो क्या होगा और तुम बैल यह नहीं देख सकते।''

''मैं देख सकता हूँ,'' घोड़े ने कहा, ''कम-से-कम थोड़ा बहुत। मगर मैं कोशिश करता हूँ कि उस बारे में सोचूँ ही नहीं।''

''मैं तुमसे ज्यादा देख सकता हूँ और मैं उसके बारे में सोचता भी हूँ। मैं जानता हूँ कि मेरे भारी-भरकम शरीर की देखभाल करना एक मुश्किल काम है और अगर मैं बीमार पड़ जाऊँ तो कोई नहीं जानता कि मैं ठीक कैसे होऊँगा। वे केवल इतना कर सकते हैं कि मेरे ठीक होने तक मेरे महावत का वेतन रोक लें और मैं अपने महावत पर भरोसा नहीं करता।''

''आह!'' घोड़े ने कहा, ''तो इसलिए तुम डरते हो? मैं अपने डिक पर भरोसा कर सकता हूँ।''

''तुम मेरी पीठ पर डिक जैसों की एक फौज बिठा सकते हो और फिर भी मैं बेहतर महसूस नहीं करूँगा। मेरे पास इतनी तो जानकारी है जो मुझे असहज कर देती है मगर इतनी भी नहीं कि मैं उसकी परवाह न करूँ।''

''हमें कुछ समझ नहीं आ रहा है,'' बैलों ने कहा।

''मैं जानता हूँ कि तुम नहीं समझ रहे हो। मैं तुमसे बात नहीं कर रहा हूँ। तुम्हें तो यह भी पता नहीं कि खून क्या होता है।?''

''हम जानते हैं,'' बैलों ने कहा, ''यह वह लाल चीज है, जो जमीन पर गिरकर सूख जाती है और उससे बदबू आती है।''

घोड़े ने गुस्से से अपनी टाँगें फटकारी, उछला और फुफकारकर बोला, ''उसके बारे में बात मत करो। उसके बारे में सोचकर ही मुझे उसकी गंध आ रही है। उसे देखकर मेरा मन भागने को करता है—जब डिक मेरी पीठ पर नहीं होता।''

''मगर अभी तो यहाँ कोई खून नहीं है,'' ऊँट और बैलों ने कहा, ''तुम इतने बुद्धू क्यों हो?''

''वह एक घिनौनी चीज है,'' बिली ने कहा, ''उसे देखकर मेरा मन भागने को तो नहीं करता पर मैं उसके बारे में बात नहीं करना चाहता।''

''यही तो बात है जो मैं कहना चाहता था,'' अपनी पूँछ को लहराते हुए दो पूँछवाला बोला।

''सारी रात तुम यही तो कहते रहे हो,'' बैलों ने व्यंग्य करते हुए कहा।

दो पूँछवाला अपना पैर तब तक पटकता रहा, जब तक उसके पैर में बँधा लोहे का छल्ला बजने न लगा। ''ओह, मैं तुमसे बात नहीं कर रहा हूँ। तुम अपने दिमाग के भीतर नहीं देख सकते।''

''नहीं। हम बस अपनी चार आँखों से बाहर देखते हैं,'' बैलों ने कहा, ''हम सीधे उसे देखते हैं जो हमारे सामने खड़ा है।''

''अगर वैसा ही करना मेरी भी मजबूरी होती तो उन बड़ी तोपों को खींचने के लिए तुम्हारी जरूरत ही नहीं होती। अगर मैं अपने कैप्टन की तरह होता—फायरिंग शुरू होने से पहले ही उसके मन में सबकुछ स्पष्ट हो जाता है और वह काँपने लग जाता है, मगर वह इतना ज्यादा जानता है कि वहाँ से भागता नहीं—अगर मैं उसकी तरह होता तो वे तोपें खींच सकता था। लेकिन अगर मैं उतना ही बुद्धिमान् होता तो मैं यहाँ होता ही नहीं। तब मैं जंगल का राजा होता, जैसा कि मैं हुआ करता था और मजे में आधे दिन सोता रहता और जब मरजी होती, नहाता। एक महीने से मैं जमकर नहाया भी नहीं हूँ।''

''वह सब तो ठीक है,'' बिली ने कहा, ''मगर किसी बात को ऊँचे-ऊँचे शब्दों में कहने से वह महान् नहीं बन जाती।''

''श श् श् श् श!'' घोड़े ने कहा, ''मैं समझता हूँ कि मैं दो पूँछवाले की बात का मतलब समझता हूँ।''

''एक मिनट में तुम इससे भी ज्यादा समझने लगोगे,'' दो पूँछवाले ने गुस्से से कहा, ''मुझे तुम सिर्फ इतना बताओ कि तुम इस बात को क्यों पसंद नहीं करते?''

और उसने ऊँचे स्वर में चिंघाड़ना शुरू कर दिया।

''चिल्लाना बंद करो,'' बिली और घोड़े ने एक साथ कहा, मैं उनके पैर पटकने और काँपने की आवाज सुन सकता था। एक हाथी के चिंघाड़ने की आवाज, विशेष रूप से अँधेरी रात में, हमेशा ही डरावनी लगती है।

''मैं बंद नहीं करूँगा,'' दो पूँछवाले ने कहा, ''क्या तुम दोनों मेरे सवाल का जवाब नहीं दोगे? हरररम्फ! अररर! अररहा!'' फिर वह एकाएक चुप हो गया और उस अँधेरे में मैंने कूँ-कूँ की आवाज सुनी और मैं समझ गया कि छोटी सी विक्सन ने आखिर मुझे खोज ही लिया था। वह जानती थी और मैं भी कि एक हाथी अगर किसी चीज से सबसे ज्यादा डरता था तो वह था एक भौंकनेवाला कुत्ता। इसलिए उसने बँधे हुए दो पूँछवाले को सताना बंद कर दिया और उसके मोटे-मोटे पैरों के आसपास घूमने लगी। दो पूँछवाले ने अपने पैर आगे-पीछे किए और चीखा, ''ऐ पिल्ले, भाग यहाँ से! मेरे टखनों को मत सूँघ, नहीं तो एक लात मारूँगा। मेरी अच्छी, प्यारी सी कुतिया! घर जाओ। इसे यहाँ से कोई ले क्यों नहीं जाता? वह मुझे एक मिनट में काट लेगी।''

''मुझे ऐसा लगता है,'' बिली ने घोड़े से कहा, ''कि हमारा यह दोस्त, दो पूँछवाला ज्यादातर चीजों से डरता है। परेड ग्राउंड में हर एक कुत्ते को लात मारने के बाद अगर मैंने भरपेट भोजन किया होता तो मैं लगभग दो पूँछवाले जितना ही मोटा हो गया होता।''

मैंने धीरे-से एक सीटी मारी और कीचड़ से लथपथ विक्सन दौड़कर मेरे पास आ गई और मेरी नाक चाटते हुए उसने सारे कैंप में मेरी तलाश करने की एक लंबी कहानी सुनाई। मैंने उसे कभी नहीं बताया था कि मैं जानवरों की भाषा समझता था, नहीं तो वह मुझसे हर तरह की आजादी लेती। इसलिए मैंने उसे अपने रेनकोट से अच्छी तरह ढँक दिया और दो पूँछवाले ने अपने पैर आगे-पीछे किए और गुर्राया।

''असाधारण!अद्भुत!'' उसने कहा, ''यह हमारी खानदानी विरासत है। अब वह छोटा सा शैतान जानवर कहाँ चला गया?''

मैंने उसकी सूँड़ से कुछ टटोलने की आवाज सुनी।

''हम सब अलग-अलग ढंग से प्रभावित होते हैं,'' नाक से आवाज निकालते हुए उसने कहना जारी रखा, ''जब मैं चिंघाड़ रहा था तब, मैं समझता हूँ, आप लोग घबरा गए थे।''

''घबराए तो नहीं थे,'' घोड़े ने कहा, ''मगर मुझे ऐसा लगा मानो मेरी पीठ पर मधुमक्खियाँ रेंग रही हों। अब फिर शुरू मत हो जाना।''

‘‘मैं एक छोटे से कुत्ते से डरता हूँ और हमारा दोस्त ऊँट रात में आनेवाले बुरे सपनों से डरता है।’’

‘‘यह तो हम सबकी खुशकिस्मती है कि हम सभी को एक ही तरह से लड़ना नहीं पड़ता,’’ घोड़े ने कहा।

‘‘मगर जो कुछ भी जानना चाहता हूँ,’’ युवा खच्चर, जो बहुत देर से खामोश था, ने पूछा, ‘‘मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि हमें लड़ना ही क्यों पड़ता है?’’

‘‘क्योंकि हमें ऐसा करने के लिए कहा जाता है,’’ घोड़े ने हिकारत से कहा।

‘‘हमारे लिए ये ही आदेश हैं,’’ बिली ने दाँत किटकिटाते हुए कहा।

‘‘हुक्म है,’’ ऊँट ने खखारते हुए कहा और दो पूँछवाले और बैलों ने दोहराया, ‘‘हुक्म है।’’

‘‘हाँ, पर ये हुक्म देता कौन है?’’ नौसिखिए खच्चर ने पूछा।

‘‘वह आदमी, जो तुम्हारी लगाम पकड़कर आगे-आगे चलता है—या तुम्हारी पीठ पर बैठता है—या तुम्हारी नकेल अपने हाथ में रखता है—या तुम्हारी पूँछ मरोड़ता है,’’ घोड़े, ऊँट और बैलों ने बारी-बारी से कहा।

‘‘मगर उनको कौन हुक्म देता है?’’

‘‘अब तुम कुछ ज्यादा ही जानना चाहते हो, नौजवान,’’ बिली ने कहा, ‘‘और लात खाने का यह भी एक तरीका है। तुम्हें सिर्फ इतना करना है कि तुम्हारी लगाम जिसके हाथ में है, उस आदमी के हुक्म मानते रहो और कोई सवाल मत पूछो।’’

‘‘वह बिलकुल सही कह रहा है,’’ दो पूँछवाले ने कहा। मैं हमेशा हुक्म नहीं मान सकता, क्योंकि मैं कम बुद्धिमान हूँ। मगर बिली सही कह रहा है। अपने साथ के आदमी का हुक्म बजा लाओ, नहीं तो तुम्हें अच्छी-खासी मार तो पड़ेगी ही, तोपखाना भी बंद हो जाएगा।

वहाँ से जाने के लिए बैल उठ खड़े हुए। ‘‘सुबह होनेवाली है,’’ उन्होंने कहा, ‘‘हम अपनी लाइनों में वापस चले जाएँगे। यह सच है कि हम केवल अपनी आँखों के जरिए देख सकते हैं और हम बहुत चतुर नहीं हैं। लेकिन फिर भी, आज की रात केवल हम ही हैं जो डरे नहीं। शुभ रात्रि, बहादुर लोगों।’’

किसी ने जवाब नहीं दिया और बातचीत की दिशा बदलने के लिए घोड़े ने कहा, ‘‘वह पिल्ला कहाँ गया? एक पिल्ला यहाँ था, इसका मतलब है कोई आदमी भी जरूर आसपास ही होगा।’’

‘‘मैं यहाँ हूँ,’’ विक्सन भौंकी, ‘‘तोप की नाल के नीचे, अपने मालिक के साथ। तू मुश्टंडे जानवर ऊँट, तूने हमारा तंबू उखाड़ दिया! मेरे मालिक बहुत नाराज हैं।’’

‘‘फ्यू!’’ एक लंबी साँस छोड़ते हुए बैलों ने कहा, ‘‘वह जरूर गोरा आदमी होगा।’’

‘‘बेशक, वह गोरा ही है,’’ विक्सन ने कहा, ‘‘तुम क्या समझते हो, मुझे कोई काला गाड़ीवान पालेगा?’’

‘‘अरे बाप रे,’’ बैलों ने कहा, ‘‘चलो, यहाँ से जल्दी निकल चलें।’’

वे कीचड़ में तेजी से भागे और बदहवासी में अपना जुआ शस्त्रों से लदी एक वैगन के खंबे के साथ उलझा बैठे।

‘‘लो तुम्हारा तो काम हो गया।’’ बिली ने शांति से कहा, ‘‘अब ज्यादा जोर न लगाओ। अब दिन निकलने तक तुम यूँ ही फँसे रहोगे। आखिर इतनी क्या आफत आ गई थी?’’

लंबी-लंबी फुँकारें भरते हुए, जैसा केवल भारतीय मवेशी कर सकते हैं, बैल अपनी पूरी ताकत से जुआ खींचते, झटकते और पैर पटकते रहे। वे कीचड़ में लगभग फिसल ही गए थे, फिर कुंठित होकर हाँफते हुए खड़े रहे।

‘‘एक मिनट में तुम अपनी गरदन तुड़वा बैठोगे,’’ घोड़े ने कहा, ‘‘गोरे आदमियों से तुम्हें तकलीफ क्या है? मैं भी तो एक गोरे आदमी के साथ रहता हूँ।’’

‘‘वो-वो हमें मारकर खा जाते हैं। खींचो!’’ नजदीकवाले बैल ने कहा। उनका जुआ ‘तड़ाक’ की आवाज के

साथ टूट गया और वे दोनों एक साथ ही भागे।

इससे पहले मैं नहीं जानता था कि भारतीय मवेशी अंग्रेजों से इतना डरते क्यों हैं। हम मवेशियों का मांस खाते हैं —एक ऐसी चीज, जो कोई भी हिंदू गाड़ीवान छुएगा भी नहीं—और बेशक मवेशी इसे पसंद नहीं करते।

''क्या मुझे मेरी पीठ पर बँधी जंजीर से ही पीटा जाएगा? कौन सोच सकता था कि इतने हट्टे-कट्टे बैलों का दिमाग इस तरह फिर जाएगा?'' बिली ने कहा।

''चिंता मत करो। मैं इस आदमी को एक नजर देखना चाहता हूँ। जितने गोरे लोगों को मैं जानता हूँ उनमें से अधिकांश अपनी जेबों में कुछ रखते हैं,'' घोड़े नेकहा।

''फिर मैं तुमसे विदा लूँगा। मैं नहीं कह सकता कि खुद मुझे भी उनसे बहुत प्यार है। इसके अलावा जिन गोरे आदमियों के सिर पर छत नहीं है, उनके चोर होने की संभावना ज्यादा है और मेरी पीठ पर काफी कीमती सरकारी सामान लदा है। आओ नौजवान, हम अपनी लाइनों की ओर लौट चलें। शुभ रात्रि, ऑस्ट्रेलियन! मैं समझता हूँ, कल परेड पर तुमसे मुलाकात होगी। शुभ रात्रि, घास के गट्ठर ढोनेवाले अंकल ऊँट। क्या तुम अपनी भावनाओं पर अब ज्यादा काबू नहीं रखोगे? शुभ रात्रि, दो पूँछवाले। कल मैदान पर हम फिर मिलें तो चिंघाड़ना मत। उससे हमारी कतार टूट जाती है।''

एक पुराने खिलाड़ी की मतवाली चाल से इठलाता हुआ खच्चर वहाँ से चला गया और घोड़े का मुँह कुछ टटोलता हुआ मेरे सीने तक आ गया। मैंने उसे कुछ बिस्कुट खाने के लिए दिए, जबकि अहंकारी विक्सन ने उसे उन घोड़ों की कहानियाँ सुनाईं, जो उसने और मैंने पाले थे।

''कल मैं अपनी कुत्ता-गाड़ी में बैठकर परेड देखने आऊँगी,'' उसने कहा, ''तुम कहाँ होगे?''

''दूसरे स्कवॅड्रन के बाईं ओर। परेड में अपने दल का समय मैं तय करता हूँ, लघु महिला,'' उसने नम्रता से कहा, ''अब मुझे भी डिक के पास जाना चाहिए। मेरी पूँछ कीचड़ से सन गई है और परेड के लिए मुझे तैयार करने में उसे दो घंटे की मशक्कत करनी पड़ेगी।''

उस दोपहर सभी तीस हजार जवानों की परेड आयोजित की गई और मुझे और विक्सन को वायसराय और अस्तरखानी ऊन से बनी ऊँची काली टोपी, जिसके मध्य में एक बड़ा हीरक सितारा चमक रहा था, अफगानिस्तान के अमीर के नजदीक ही एक बढ़िया जगह मिल गई थी। उस रिव्यू परेड का पहला भाग बहुत ही चमकदार था, जिसमें बंदूकें हाथ में लिये जवानों की पंक्तियाँ एक साथ मार्च करती तब तक गुजरती रहीं, जब तक हमारी आँखें थक न गईं। उसके बाद ढुलकी चाल से घुड़सवार फौज आई और कुत्तागाड़ी पर बैठी विक्सन ने अपने कान खड़े कर लिए। घोड़ों पर सवार भाला-धारियों की टुकड़ी वहाँ से गुजरी और रात का हमारा दोस्त फौजी घोड़ा, जिसकी पूँछ रेशम जैसी चमक रही थी, उसका सिर सीने की ओर झुका हुआ और अपने दल का समय तय करते हुए उसका एक कान आगे और दूसरा पीछे की ओर मुड़ा हुआ था और उसका पैर वाल्टूज संगीत की तरह लयबद्ध चाल से आगे-आगे चल रहा था। फिर बड़ी तोपों का आना शुरू हुआ और मैंने एक लाइन में जुते दो हाथियों के साथ दो पूँछवाले को एक बड़ी सी सीजगन खींचते देखा जबकि बीस जुओं के नीचे बीस जोड़ी बैल उनके पीछे चल रहे थे। सातवें जोड़े की गरदन पर नया जुआ था और वे कुछ अकड़े हुए और थके- थके लग रहे थे। अंत में स्क्रू-तोपें आईं और खच्चर बिली इस तरह इठलाकर चल रहा था मानो उसके दल की कमान उसके हाथों में हो और उसकी काठी खूब पॉलिश की गई और चमचमा रही थी। उसका उत्साह बढ़ाने के लिए मैंने मन-ही-मन उसे चीअर किया, परंतु वह दाएँ या बाएँ किसी तरफ नहीं देख रहा था।

बारिश फिर शुरू हो गई और कुछ समय के लिए दृश्य इतना धूमिल हो गया कि यह देख पाना मुश्किल था कि

फौज क्या कर रही थी। पूरे मैदान में उन्होंने एक बड़ा सा अद्र्धवृत्त बना लिया था और अब वे सब एक लाइन में खड़े हो रहे थे। वह लाइन बढ़ती गई, बढ़ती गई, जब तक कि वह एक छोर से दूसरे तक तीन-चौथाई मील लंबी न हो गई—जवानों, घोड़ों और तोपों की एक मजबूत दीवार। फिर वह लाइन सीधे वायसराय और अमीर की तरफ आने लगी और जैसे ही वह नजदीक आई, मैदान हिलने लगा जैसे एक स्टीमर के इंजन तेज चलने पर उसका डॉक हिलने लगता है।

अगर आप उस समय वहाँ नहीं थे तो आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि फौजों के इस तरह लगातार नजदीक आने का कितना भयावह प्रभाव दर्शकों पर पड़ता था, जबकि वे जानते थे कि वह केवल एक रिव्यू परेड थी। मैंने अमीर की ओर देखा। मगर अब उसकी आँखें चौड़ी हो रही थीं और उसने अपने घोड़े की लगाम सँभाली और पीछे मुड़कर देखा। एक मिनट के लिए तो ऐसा लगा जैसे वह अपनी तलवार लहराते हुए पीछे शामियानों में बैठे अंग्रेज पुरुषों और महिलाओं के बीच से निकल जाएगा। फिर फौज का आगे बढ़ना एकाएक रुक गया, मैदान का हिलना बंद हो गया, फौज की पूरी लाइन ने सलाम किया और तीस बैंड एक साथ बजने लगे। वही रिव्यू परेड का समापन था और उस बारिश में सभी रेजिमेंट्स अपने-अपने कैंप में चली गईं और पैदल सेना का बैंड यह धुन बजाने लगा।

दो-दो की पंक्ति बनाकर
सभी जानवर चले गए
हुर्रा!
दो-दो की पंक्ति बनाकर
सभी जानवर चले गए
हाथी और तोपखाने के खच्चर!
और झमाझम बारिश में उन्हें
कुछ तिरछा होकर निकलना पड़ा!

फिर मैंने लंबे बालोंवाले एक भूरे बूढ़े मध्य एशियाई मुखिया, जो अमीर के साथ आया था, को एक देशी अधिकारी से सवाल पूछते सुना।

''बताइए,'' उसने पूछा, ''इस अजीमुश्शान तमाशे को कैसे अंजाम दिया गया?'' उस अधिकारी ने जवाब दिया, ''एक हुक्म जारी किया गया और वे सब उसे बजा लाए।''

''मगर क्या जानवर भी उतने ही होशियार हैं, जितने आदमी?'' मुखिया ने पूछा।

''वे उसी तरह हुक्म बजाते हैं जैसे आदमी। एक खच्चर, घोड़ा, हाथी या बैल अपने सवार का हुक्म मानता है। सवार अपने सार्जेंट का, सार्जेंट अपने लेफ्टिनेंट का, लेफ्टिनेंट अपने कैप्टन का, कैप्टन अपने मेजर का, मेजर अपने कर्नल का और कर्नल अपने ब्रिगेडियर का, जिसके अधीन तीन रेजिमेंट्स होती हैं और ब्रिगेडियर जनरल का, जो वायसराय का हुक्म बजाते हैं और वायसराय महारानी के सेवक हैं। यह इस तरह किया जाता है।''

''काश, ऐसा ही अफगानिस्तान में होता!'' मुखिया ने कहा, ''क्योंकि वहाँ हम सिर्फ अपना ही हुक्म मानते हैं।''

''इसीलिए,'' अपनी मूँछें मरोड़ते हुए देशी अधिकारी बोला, ''तुम्हारे अमीर को, जिसका हुक्म तुम नहीं मानते, हमारे वायसराय का हुक्म लेने के लिए यहाँ आना पड़ता है।''

कैंप के जानवरों का परेड-गान

तोप खींचनेवाले हाथियों का दल

हमने सिकंदर को हरक्युलिस की ताकत दी,
और दिमाग की अक्लमंदी
चतुराई घुटनों की,
सेवा में अपना सिर झुका दिया
और उसे फिर कभी
भटकने न दिया!
चालीस पौंड बारूद की आग उगलनेवाली
तोपों के वाहक
इन दस फुटे मतवालों को
रास्ता दो, रास्ता दो!
तोप खींचनेवाले बैल
पीठ पर शानदार हौदा कसे
ये महाकाय नायक,
बारूद के धमाके से घबराते हैं,
और बारूद का अधकचरा ज्ञान
उनमें खलबली मचा देता है!
तब हम हरकत में आते हैं
और तोपों को अपने,
गंतव्य तक ले जाते हैं!
चालीस पौंड बारूद की आग उगलनेवाली
तोपों के वाहक,
बीस जुओंवाले इस जाँबाज दल को
रास्ता दो, रास्ता दो!
घुड़सवार फौज के घोड़े
मेरे गले से लटके
तमगे की कसम,
मालाधारी सेना की शान में
बजाई गई
घुड़सवार फौज की धुन 'बौनी डंडी'
दुनिया में सबसे सुरीली लगती है!
फिर वे हमें मजेदार भोजन खिलाते हैं!
साधते और हुनरमंद बनाते हैं,
खुले मैदानों में
होशियार सवारों के हवाले कर देते हैं
तब हम स्कवॅड्रन के

गर्वीले सदस्य बन जाते हैं और दिखाते हैं
एक जंगी घोड़े के जलवे!
स्क्रू-गन वाहक खच्चर
मैं और मेरे साथी
पहाड़ी की कठिन चढ़ाई
तय कर रहे थे
लुढ़कते पत्थरों ने
रास्ता जाम कर दिया था
फिर भी हम बढ़ते ही रहे
चाहे कुछ हो,
हम रास्ता निकाल ही लेते हैं
मंजिल पर पहुँच कर भी
बना रहता है हौसला हमारा
और भी आगे जाने का!
हर उस सार्जेंट को सलाम
जो हमें अपना रास्ता चुनने की आजादी देते हैं,
धिक्कार उन कर्मियों को
जो हमारी पीठ पर बाँधते नहीं
सामान ठीक से!
क्योंकि चाहे कुछ हो
हम रास्ता निकाल ही लेते हैं
हाँ! मंजिल पर पहुँच कर भी
बना रहता है हौसला हमारा
और भी आगे जाने का!
सेना के रसद-वाहक ऊँट
पता नहीं क्यों
हमारी खास ऊँट-चाल के लिए
कोई धुन क्यों नहीं बनाई गई है!
हम सबकी गरदनें ही
हमारी तुरही हैं
और यह है हमारा प्रयाण-गीत :
'यह हमसे न होगा'
ये शब्द ही हमारे कोष में नहीं!
अरे, किसकी पीठ से
यह बोझा आन गिरा!

काश, यह मेरा ही होता!
और लो! जमीन पर बिखर गया
यह किसका सामान
वाह! अब तो होगी तकरार
और काफिला रुकेगा!
उर्र! यर्र! गर्र! अर्र!
कोई वह सब समेट रहा है।
सभी जानवर एक साथ
हम सब हैं कैंप की संतानें,
अपने-अपने ढंग से
करते हैं, सेवा।
जुआ, अंकुश, काठी, हौदा और बोझा,
ये ही हैं हमारे जीवन-साथी!
हमारी पंक्तियों को
देखो मैदान में
जैसे पैर से बँधी वक्र रस्सी!
सबकुछ ढोकर ले जाते हम
युद्ध-भूमि पर
गिरते-पड़ते, कराहते!
जबकि साथ चल रहा आदमी,
धूल-धूसरित, खामोश, आँखें सूनी,
नहीं बता सकता कि वह और हम
क्यों जीवन-भर
यह सब सहते हैं!
हम सब हैं कैंप की संतानें
अपने-अपने ढंग से
करते हैं सेवा
जुआ, अंकुश, काठी, हौदा और बोझा,
ये ही हैं हमारे जीवन-साथी!

❑❑❑